हस्तलिखित हिन्दी-ग्रन्थों
की
विवरणात्मक सूची

सम्पादक
डॉ० पारसनाथ तिवारी

•

सम्परीक्षक
डॉ० किशोरीलाल

•

विवरणक
कृष्णकान्त पाण्डेय

शक १९०८ : सन् १९८७ ई०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन • प्रयाग

१२, सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद

हस्तलिखित हिन्दी-ग्रन्थों
की
विवरणात्मक सूची

सम्पादक
डॉ० पारसनाथ तिवारी

सम्परीक्षक
डॉ० किशोरीलाल

विवरणक
कृष्णकान्त पाण्डेय

शक १९०८ : सन् १९८७ ई०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन • प्रयाग

१२, सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद

प्रकाशकीय

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना १९१० ई० में हुई और शनैः-शनैः सम्मेलन के क्रिया-कलापों का सम्वर्द्धन एवं विकास होता गया। उद्देश्यों के अन्तर्गत एक वृहत् संग्रहालय की स्थापना की गयी, जिसका उद्घाटन विश्ववंद्य महात्मा गांधी जी ने ५ अप्रैल १९३६ ई० को किया था। इस संग्रहालय में हस्तलिखित पोथियों, मुद्रित ग्रन्थों, पत्र-पत्रिकाओं, समाचार-पत्रों, चित्रों तथा स्मृति-चिह्नों का संग्रह किया गया है। आज सम्मेलन का हिन्दी-संग्रहालय देश-विदेश के अनुसंधायकों का केन्द्र बना हुआ है।

इस संग्रहालय में हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह सम्मेलन ने अपने साहित्यान्वेषकों के माध्यम से प्रारम्भ किया था। कुछ वर्षों के पश्चात् अमेठी राज्य के राजकुमार रणञ्जय सिंह जी ने अपने अग्रज राजकुमार रणवीर सिंह जी की स्मृति में संस्कृत और हिन्दी के हस्त-लिखित ग्रन्थों का निजी संग्रह भेंट-स्वरूप सम्मेलन को प्रदान किया। सम्मेलन के द्वारा संगृहीत हस्तलिखित ग्रन्थों को भी इस संग्रह में मिलाकर राजकुमार रणवीर सिंह जी की स्मृति में 'रणवीर-कक्ष' स्थापित करके उसमें विधिपूर्वक व्यवस्थित किया गया है। इसकी सूची सम्मेलन द्वारा 'पाण्डुलिपियाँ' नामक ग्रन्थ के रूप में सं० २०१४ वि० में प्रकाशित की गयी।

सन् १९६३ ई० में ग्वालियर निवासी श्री सूरजराज धारीवाल जी ने अपना बहुमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थ-संग्रह सम्मेलन के हिन्दी-संग्रहालय को भेंट-स्वरूप प्रदान किया। इस संग्रह को भी श्री धारीवाल जी और उनकी धर्मपत्नी सुभद्रा देवी के संयुक्त नाम से 'सूरज-सुभद्रा कक्ष' में सुव्यवस्थित रखा गया है।

'रणवीर कक्ष' और 'सूरज-सुभद्रा कक्ष' इन दोनों कक्षों में सुव्यवस्थित हस्तलिखित ग्रन्थों की संख्या लगभग ८५०० है। सम्पूर्ण संग्रह के हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थों की विवर-णात्मक सूची सन् १९७१ में शिक्षा-मन्त्रालय के वित्तीय अनुदान से सम्मेलन द्वारा प्रकाशित हुई थी। उसमें हिन्दी के १८०२ ग्रन्थों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसी क्रम में संस्कृत एवं प्राकृत भाषा के हस्तलिखित ग्रन्थों की विवरणात्मक सूचियाँ दो खण्डों में १९७६ व १९७७ ई० में प्रकाशित की गयीं।

सम्मेलन के हिन्दी-संग्रहालय को ग्रन्थ-दाताओं का निरन्तर सहयोग प्राप्त होता जा रहा है। विगत वर्षों में दतिया (मध्य प्रदेश) के श्री ब्रजकिशोर शर्मा, श्री श्रीराम शर्मा, श्री श्यामाचरण खरे, श्री मुन्नालाल पटसारिया, श्री केशवकिशोर तिवारी, श्री जगदीशशरण बिलगइयाँ; श्री बाबूलाल गोस्वामी, प्रसिद्ध साहित्यकार श्री उदयशंकर भट्ट (दिल्ली), श्री अटलबिहारी श्रीवास्तव, श्री सोमकान्त त्रिपाठी, श्री बलवीर सिंह फौजदार, हमीरपुर (उत्तर प्रदेश) के श्री कन्हैयालाल सिरोहिया, झाँसी (उत्तर प्रदेश) के श्री राजेन्द्र कुमार

मिश्र, श्री हरिदास मुखिया, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) के डॉ० सन्तप्रसाद टण्डन, श्रीमती रानी टण्डन, श्री राधेश्याम तिवारी, सीताराम (उत्तर प्रदेश) के डॉ० नवलबिहारी मिश्र तथा मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश) के श्री मातामबर द्विवेदी आदि महानुभावों के सहयोग से प्राप्त हस्त-लिखित ग्रन्थों की यह सूची भारत सरकार के मानव संसाधन मन्त्रालय संस्कृति विभाग के आनुदानिक सहयोग से प्रकाशित की जा रही है। इसमें हिन्दी के ७८३ ग्रन्थों का विवरण संकलित है।

सम्मेलन की संग्रह-समिति के निर्णयानुसार इस ग्रन्थ-सूची प्रकाशन की योजना का सञ्चालन तत्कालीन संग्रह मन्त्री डॉ० सत्यप्रकाश मिश्र ने किया तथा इसका सम्पादन प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के पूर्व रीडर डॉ० पारसनाथ तिवारी द्वारा सम्पन्न हुआ है। सम्परीक्षक के रूप में प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ० किशोरीलाल ने ग्रन्थ-सूची सम्पादन में सहयोग प्रदान किया है। विवरणक श्री कृष्णकान्त पाण्डेय तथा सामग्री उपलब्ध कराने एवं व्यवस्था करने में पाण्डुलिपि कक्ष के श्री प्रेमचन्द्र पाण्डेय का योगदान रहा है। सम्मेलन संग्रहालय की संग्रहाध्यक्ष श्रीमती डॉ० रीतारानी पाण्डेय ने इस ग्रन्थ-सूची प्रकाशन-प्रक्रिया के निष्पादन में सहायता की है। मुद्रक का कार्य नागरी प्रेस इलाहाबाद के योग्य व्यवस्थापक तथा ग्रन्थ-सूची को अन्तिम रूप देने में साहित्य-विभाग के श्री रमेशकुमार उपाध्याय एवं श्री शेषमणि पाण्डेय का सहयोग प्राप्त हुआ है।

भारत सरकार के मानव संसाधन मन्त्रालय संस्कृति-विभाग के अधिकारियों के प्रति सम्मेलन की ओर से मैं आभार प्रकट करता हूँ, जिनकी कृपा से वित्तीय सहायता मिलने पर इस ग्रन्थ-सूची का प्रकाशन सम्भव हो सका है।

आशा है, इस मुद्रित ग्रन्थ-सूची से हिन्दी के विद्वानों, छात्रों और शोधकर्ताओं को अध्ययन और अनुसन्धान में सहायता मिलेगी।

(डॉ०) प्रभात मिश्र शास्त्री
प्रधानमन्त्री
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
१२, सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद

विषयानुक्रम

⊙ ⊙

संकेत

अनु०	अनुष्टुप
प्र० पं०	प्रतिपंक्ति
प्र० पृ०	प्रति पृष्ठ
पृ० सं०	पृष्ठ संख्या
सं०	संख्या
से० मी०	सेण्टीमीटर

हस्तलिखित हिन्दी-ग्रन्थों की विवरणात्मक सूची

आख्यानक काव्य

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
१	८३०१/४६६६	उत्तराध्ययन स्तवक	—	—	१८५०ई०	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२	७७२१/४३२४	ऊषा अनिरुद्ध चरित्र	१६४४ई०	—	१८४०ई०	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३	८१२४/४५६७	गुणावली	—	—	१६३७ई०	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
४	८००५/४५११	पद्मावत की कथा	—	—	—	हिन्दी (ब्रजमिश्रित फारसी)	नागरी
५	८३६१/४७४३	पूगलि पिंगल राउ	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
६	८३४४/४७३०	मधुमालती	—	डॉ०माता-प्रसाद गुप्त (संपादक)	—	हिन्दी (गद्य)	नागरी
७	८१२३/४५६६	मानयुग चौपाई	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२५.५×१०.५	३६९	१७	४४	८८४९	पूर्ण	सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	इस ग्रन्थ में रानी पद्मावती एवं राजकुमार अभयकुमार की कथा का वर्णन हुआ है। ग्रन्थ ३२ अध्यायों में है। ग्रन्थ पत्राकार है एवं लघु अक्षरों के कारण सुपाठ्य नहीं है। ग्रन्थारम्भ में जैन गुरु महावीर जी का स्तवन है।
माण्डपत्र	२४.५×१६	१८४	१६	१८	१६५६	पूर्ण	श्री बलबीर-सिंह, दतिया	इस ग्रन्थ में भागवत पुराण के दशम स्कन्ध की कथा का अनुवाद हिन्दी में किया गया है।
माण्डपत्र	२५.५×११	१४	१५	४४	२९०	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में राजकुमारी गुणावली एवं राजकुमार अरि-मर्दन के प्रेम का वर्णन किया गया है। प्राचीनता की दृष्टि से कृति महत्त्वपूर्ण है।
प्राचीन माण्डपत्र	२२×१४	२९०	२०	१८	३२६३	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में ब्रजमिश्रित फारसी की शब्दावली में लावनी एवं मरसिया के तर्ज पर पद्मावत की कथा कही गयी है, जो सुसम्बद्ध नहीं है। ग्रन्थ के बीच-बीच में शेर भी हैं।
माण्डपत्र	२१.५×१४.७	२०	१३	३५	२८०	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	इस ग्रन्थ में राजस्थानी हिन्दी में साल्हकुमार पिंगलराउ एवं मालवणी की प्रेमकथा वर्णित है।
माण्डपत्र	२४×१८	५४६	२४	१७	६४३०	पूर्ण	डॉ० माता-प्रसाद गुप्त	इस ग्रन्थ में डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने कुतुबन कविकृत मधु-मालती का सम्पादन किया है। लिपि आधुनिक है। ग्रन्थ मुद्रित भी हो चुका है।
माण्डपत्र	२४×१०.८	७६	१३	२२	९८२	पूर्ण	अज्ञात	प्रस्तुत ग्रन्थ में महाराज मान-युग और राजकुमारी प्रेमवती की प्रेमकथा वर्णित है।

आयुर्वेद

क्रम सं०	ग्रंथ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
८	८३५४/४७३८	अज्ञात	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
९	८०५३/४५३७	अज्ञात	–	–	–	हिन्दी (प्राकृत अपभ्रंश)	नागरी
१०	८०६०/४५४२	अज्ञात	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
११	८४१४/४७७५	अज्ञात	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१२	८३०७/४७०५	अज्ञात	–	–	–	हिन्दी गद्य (अपभ्रंश)	नागरी
१३	८१८९/४६३४	अश्व चिकित्सा	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
१४	८०५६/४५४०	अश्व चिकित्सा	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
१५	८२९६/४६९५	औषध	–	–	१८२३ई०	हिन्दी	नागरी

आधार	आकार (सें०मी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	३०×२२	१४	३५	४०	६१२	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	हिन्दी-गद्य में आयुर्वेद का यह महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है ।
माण्डपत्र	२५×११	१३४	१५	४५	—	अपूर्ण	सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में विविध रोगों की ओषधियों, कल्पों, बूटी एवं गोलियों का निर्माण, विभिन्न उपकरण और उनके निर्माताओं का भी नाम दिया गया है ।
माण्डपत्र	१६.५×१२.५	१३	१०	१३	५३	अपूर्ण	श्यामाचरण खरे, दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में पारा आदि धातुओं की शोधन - विधि, उपचार एवं उनके साथ-साथ मन्त्र भी लिखित हैं ।
माण्डपत्र	१८.५×१५	२	१०	१०	१०	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में अनिद्रा, जम्हु-आई इत्यादि अनेक रोगों को दूर करने की ओषधियाँ वर्णित हैं । ग्रन्थ कीट-दंशित है ।
माण्डपत्र	२२.५×१०.५	३२	१०	४०	४००	अपूर्ण खंडित	अज्ञात	प्रस्तुत ग्रन्थ में विविध रोगों का उपचार हिन्दी-गद्य में लिखा गया है। इसके साथ-ही-साथ संस्कृत मिश्रित अपभ्रंश भाषा में भी कृति का गद्यात्मक रूप मिलता है ।
माण्डपत्र	२०×१४	१७०	१४	१२	८६३	अपूर्ण	पं० जगन्नाथ-प्रसाद शुक्ल, प्रयाग	प्रस्तुत ग्रन्थ में पशु-चिकित्सा सम्बन्धी रोग, लक्षण, उनके निदान एवं कारणों का उल्लेख है । ग्रन्थ आधुनिक है ।
माण्डपत्र	२१.८×११.५	१४	११	२१	९८	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ के आरम्भ के २० पृष्ठ अप्राप्त हैं । यह अश्व-रोगों एवं ओषधियों की एक उपयोगी कृति है ।
माण्डपत्र	१७.२×१२.५	७	७	१४	२१	पूर्ण	सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में विविध रोगों के उपचार लिखे गये हैं ।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
१६	८२८१/४६८६	ओषध कल्प	—	—	—	हिन्दी (राज०)	नागरी
१७	७७२५/४३२८	ओषधिशास्त्र	—	—	—	हिन्दी (बुन्देली)	नागरी
१८	८०५५/४५३६	चिकित्सामंजरी	—	—	—	हिन्दी (अवधी)	नागरी
१९	८०५६/४५४२	जहरदिनाड़ी कौ उपचार	—	—	१८१४ई०	हिन्दी (अवधी)	नागरी
२०	८३८६/४७६२	दिल्लग्नचिकित्सा	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
२१	८०३६/४५२४	दिल्लग्नचिकित्सा	१७७४ई०	जियालाल	१८८१ई०	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
२२	८००७/४५१३	नाड़ी-परीक्षा	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (से०मी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१६.५ × १३	४	१२	११	१६	अपूर्ण	मुजफ्फरनगर	प्रस्तुत ग्रन्थ में विविध ओषधि-सामग्रियों का वर्णन किया गया है। लिपि अस्पष्ट है।
माण्डपत्र	२३.२ × १७	१०४	१२	२०	७८०	खण्डित	हरिदास मुखिया नौरा, झाँसी	इस ग्रन्थ में वनोषधियों का चिकित्सकीय महत्त्व गद्य शैली में बताया गया है।
माण्डपत्र	२५.३ × ९.५	२२	८	३३	१८२	पूर्ण	डॉ० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में विविध ओषधियों के नाम एवं विविध रोगों के उपचारादि का वर्णन है।
माण्डपत्र	१६.५ × १२.५	२६	१२	१४	१३६	पूर्ण	श्यामाचरण खरे, दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में विविध प्रकार के विषों का नाम, उनके प्रभाव एवं उपचार का विवेचन किया गया है। "वैद्यक हैं सन्तोषराय" के आधार पर ग्रन्थकार सन्तोषराय मालूम पड़ते हैं। इसमें गजबेलि मारने, चीडर मारने की विधि, अथनुपोमारिबै की विधि भी दी गयी है।
माण्डपत्र	२० × १६	१२६	१५	२०	११८१	पूर्ण	डॉ० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में ओषधि बनाने की रीति, रोग, लक्षण, रोगोपचार, ओषधि-सेवन आदि का वर्णन है। ग्रन्थ जीर्ण-शीर्ण होने के कारण अपाठ्य है।
माण्डपत्र	२४ × १५	१०९	२०	२०	१४७०	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में पन्द्रह शृंगार हैं। जिनमें विविध रोगों के लक्षण एवं उपचार वर्णित हैं।
माण्डपत्र	१६ × ११.५	६०	९	१८	३०४	अपूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में वात-पित्त आदि रोगों के विश्लेषण एवं उपचार के सम्बन्ध में बताया गया है। वैद्यकशास्त्र की दृष्टि से यह महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
२३	८१२६/४५६८	नारी परीक्षा	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
२४	८१६५/४६३७	पूतनाविधान	–	–	१७३४ई०	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
२५	२८/४५६६	फिरंग उपाय	–	–	–	हिन्दी (राज०)	नागरी
२६	७६७१/४२६६	भाषा वैद्यरत्न	१८३६ई०	जनार्दन-प्रसाद	–	हिन्दी (ब्रज)	देवनागरी
२७	८१६४/४६३६	योगचिन्तामणि	–	–	–	हिन्दी गद्य	नागरी
२८	८०६७/४५४६	रामाविनोद	–	–	१७१६ई०	हिन्दी (राज०)	नागरी
२९	८३८८/४७६२	वंग बनाने की विधि	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३०	७८५६/४३६६	वैद्यक	–	–	–	हिन्दी (राज०)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिणाम (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१५.५ × १५	४	१३	१६	२६	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में १९ दोहों के माध्यम से नाड़ी-ज्ञान का सुन्दर विवेचन किया गया है।
माण्डपत्र	१७.२ × १२	२३	१२	११	—	अपूर्ण	श्यामाचरण खरे, दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में पूतना (नवजात बालरोग) के लक्षण एवं उपचार दिये गये हैं। मन्त्र-विधान भी दिया गया है।
माण्डपत्र	२५.५ × ११	८	१५	४५	१३८	अपूर्ण	सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में आयुर्वेद की विविध ओषधियों का उल्लेख रोगानुसार किया गया है।
माण्डपत्र	२५ × १६.५	१४६	१९	२१	१८२४	—	केशवकिशोर तिवारी, दतिया	इस ग्रन्थ में सात प्रकाश हैं। जिसमें नाड़ी-परीक्षा, अतिसार, शिरो रोग-परीक्षा एवं लाक्षा की उपयोगिता दी गयी है।
माण्डपत्र	२४.५ × ११.२	१०	१४	३२	१४०	अपूर्ण	सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में आयुर्वेद की विविध ओषधियों एवं कल्पों के निर्माण में प्रयुक्त सामग्री एवं विधि के साथ-ही-साथ शारीरिक रोगों का वर्णन है।
माण्डपत्र	२४.५ × १०.५	१४२	१७	५२	२९२३	पूर्ण	सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में विविध रोगों का सलक्षणोपचार वर्णन है। लिपि से ग्रन्थ प्राचीन है।
माण्डपत्र	२० × १६	२	१५	२२	२०	अपूर्ण	डॉ० नवल, बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में वंग (भस्म) बनाने की रीति, मात्रा का वर्णन है।
माण्डपत्र	१२ × ७	३८	९	२२	२३५	अपूर्ण	अज्ञात	इस ग्रन्थ में आयुर्वेदीय चिकित्सा से सम्बन्धित कुछ वनस्पतियों का उल्लेख किया गया है। ग्रन्थ से ऐसा संकेत मिलता है कि इस प्रकार की डायरियाँ उस समय वैद्य लोग अपने पास रखा करते थे।

क्रम सं०	ग्रंथ सं०/विष्टन सं०	ग्रंथ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
३१	७७७६/४३६३	वैद्यक	–	–	–	हिन्दी	नागरी
३२	८०६६/४५४८	वैद्यमनोत्सव	–	–	–	हिन्दी	नागरी
३३	८३६६/४७६७	वैद्यरत्न	१६६२ई०	हीरालाल कायस्थ	१८५४ई०	हिन्दी	नागरी
३४	७८५१/४३६३	वैद्यरत्न	–	–	–	हिन्दी	नागरी
३५	८३७६/४७५५	वैद्यरत्नसार	–	केदारनाथ	१८३३ई०	हिन्दी (अवधी)	नागरी
३६	७८३४/४३८६	वैद्यविलास	–	–	–	हिन्दी	नागरी
३७	७८३३/४३८५	वैद्यविलास	–	–	–	हिन्दी	नागरी
३८	७८८२/४४१८	शालिहोत्र	१७४३सं०	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३९	८६७१/४६६६	सालहोत्र	–	–	कासीराई	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (से०मी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्ति स्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१८×१५	६	८	२०	३०	अपूर्ण (जीर्ण)	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में आयुर्वेदीय ढंग से विभिन्न रोगों का निदान वर्णित है।
माण्डपत्र	२८×१३	३३	९	४३	३९९	अपूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में विविध रोगों के लक्षण एवं उपचार वर्णित हैं।
माण्डपत्र	२६×१२	१२६	९	४०	१४१८	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में 'नारी परीक्षा' तथा नाना रोगों के लक्षण तथा उपचार का वर्णन है।
माण्डपत्र	२३.५×१२	४२	११	४०	११५५	अपूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में आयुर्वेदीय चिकित्सा-पद्धति से रोग-निदान वर्णित है।
माण्डपत्र	२२.५×१८.५	१०८	२२	२४	१७८२	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में विभिन्न व्याधियों के लक्षण, उपचार, ओषधि-सेवन का वर्णन है।
माण्डपत्र	२३×१२.५	५४	१०	३०	५०६	अपूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में आयुर्वेदीय चिकित्सा-पद्धति से असाध्य रोगों के निवारण का उपाय बताया गया है।
माण्डपत्र	२२×१२.५	२४	१०	३०	२२५	अपूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में आयुर्वेदीय चिकित्सा-पद्धति से कुछ साध्य एवं असाध्य रोगों की चिकित्सा का वर्णन है।
माण्डपत्र	१७.५×९	११३	६	१८	३८१	अपूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में अश्वरोग, लक्षण एवं उपचारादि का विस्तृत वर्णन किया गया है।
माण्डपत्र	१९.५×१२	८६	१४	९	३३८	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में भीम, अर्जुन, धर्मराज, नकुल, सहदेव आदि पाण्डवों के साथ किसी मुनि का वर्णन है। तत्पश्चात् अश्व-उत्पत्ति का वर्णन किया गया है। अश्व भेद, रोग, अंग-वर्णन, उपचार आदि का विस्तृत वर्णन है।

कामशास्त्र

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
४०	८३७७/४७५३	कोकशास्त्र	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४१	८२५९/४६८१	कोकसार	–	सेवाराम	१७५८ई०	हिन्दी	नागरी
४२	७८८४/४४१९	कोकसार	–	तुलाराम पाण्डे	१८८०ई०	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४३	७७७८/४३६३	कोकसार	११२६ई०	–	–	हिन्दी	नागरी
४४	८३३५/४७२६	कोकसार	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२१.५×१७	९५	१८	२३	१२३०	अपूर्ण	डॉ० नवल-विहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में नारी-लक्षण, शुभाशुभ कर्मों का वर्णन, रेखा, मस्तक, ग्रीवा आदि शारीरिक अंगों के लक्षण दिये गये हैं। आरम्भ के २ पृष्ठ अप्राप्त हैं, अन्त में भी 'इति' आदि समाप्ति सूचक शब्द नहीं है।
माण्डपत्र	११×९.५	४४	१५	१६	३३०	पूर्ण	—	इस ग्रन्थ में पद्मिनी आदि नारी तथा शश आदि पुरुष लक्षणों के विवेचन के साथ रति-क्रियाकलापों का उल्लेख किया गया है। ग्रन्थ अत्यन्त जीर्ण व कीट-दंशित है।
माण्डपत्र	२१×११	९१	१६	२०	९१०	पूर्ण	—	इस ग्रन्थ में रति-क्रिया के मुख्य उपादान, नायक-नायिका का लक्षण, अवस्था के अनुसार उनका विवेचन दोहा, कवित्त एवं छप्पय छन्दों में किया गया है।
माण्डपत्र	१८×१४	९९	१२	२०	२४४	पूर्ण (जीर्ण)	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	कीट-दंशित इस ग्रन्थ में प्रेमालाप की शैली में कामशास्त्र का निरूपण किया गया है। प्रति महत्त्वपूर्ण किन्तु अपाठ्य है।
माण्डपत्र	४०×१७	९७	१६	७०	५९५	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में नारी के पद्मिनी आदि एवं पुरुष के शश आदि भेद और रति के विविध क्रिया-कलापों का वर्णन है। ग्रन्थ अत्यन्त जीर्ण है। इसका आकार व अनुष्टुप परिमाण अनुमान पर ही आधारित है। प्राचीनता के कारण ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।

काव्यशास्त्र

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
४५	७६६२/४४८३	अमरचन्द्रिका	१८६२ई०	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४६	७६५६/४४८०	अलंकारचन्द्रोदय	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४७	८१३२/४६०३	अलंकारचन्द्रोदय	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४८	७७२२/४३२५	अलंकार चिन्तामणि	–	प्रतापसाहि	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४९	७६५७/४४७८	अलंकार प्रदीप	–	–	११/३/२६	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५०	८२६८/४६९६	अलंकारमाला	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	३० × २०	६८	२२	२४	११२२	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में बिहारी सतसई के दोहों की ब्रजभाषा में टीका की गयी है। यथास्थान गद्य-पद्यमयी भाषा में अलंकारादि भी वर्णित हैं।
माण्डपत्र	३३ × २०	२१	१७	१८	१८८	पूर्ण	"	इस ग्रन्थ में दोहा छन्द में सोदाहरण अलंकार वर्णित हैं। ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	१६.५ × १३	२८	१४	१७	२०८	पूर्ण	"	प्रस्तुत ग्रन्थ में भाषा-भूषण की शैली में विविधालंकारों का वर्णन किया है।
माण्डपत्र	२४.५ × १७	७४	१८	२२	९०१६	अपूर्ण (जीर्ण)	कन्हैयालाल सिरोहिया, चरखारी (हमीरपुर)	इस ग्रन्थ में शब्दालंकार एवं अर्थालंकार दोहा एवं चौपाई छन्दों में सोदाहरण वर्णित हैं।
माण्डपत्र	३५ × २०.५	६४	३२	२८	१७९२	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में लिपिकार ने भोगीलाल नामक कवि (जिसका काल १८०० ई० है) की रचना अलंकार प्रदीप को लिपिबद्ध किया है। इसमें अलंकारों का सुन्दर एवं सरस विवेचन दोहा एवं कवित्त छन्द में किया गया है। इसमें लक्षण व उदाहरण दोनों भोगीलाल कवि के ही हैं। एक पृष्ठ पर लिपिकार ने भोगीलाल द्वारा नायिका-भेद विषयक रचना का उल्लेख किया है।
माण्डपत्र	२६ × १०.७	६	१०	३१	५८	अपूर्ण	सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में विविध अलंकारों का सांगोपांग विवेचन किया गया है। ग्रन्थ पत्राकार व अपूर्ण है। शैली से यह ग्रन्थ सूरत मिश्र का प्रतीत होता है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
५१	७९४६/४४७३	अलंकार रत्नाकर	१७३४ई०	युगल किशोर मिश्र	१८८८ई०	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५२	७९४४/४४७३	कण्ठाभरण	—	—	१८८८ई०	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५३	७९८७/४४९८	कविप्रिया (सटीक)	—	लाला चित्रसिंह	१७९९ई०	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५४	७८६७/४४०५	कविप्रिया	—	—	—	हिन्दी (ब्रज-मिश्रित बुन्देली)	नागरी
५५	७९३१/४४६५	कविप्रिया	१६०१ई०	भवानी-प्रसाद मिश्र	१७९३ई०	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	३३ × २१·५	८८	२४	२०	१३२०	अपूर्ण	डॉ० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर	इसमें विभिन्न अलंकारों का विवेचन रीतिकालीन शैली में हुआ है। इसमें लक्षण वंशीधर का तथा लक्ष्यपद देव, मतिराम, कालिदासादि का है।
माण्डपत्र	३३ × २१·५	२४	२०	२०	३००	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में अलंकारों का विवेचन सोदाहरण निबद्ध है। इसमें अन्त में कवि ने अपना संक्षिप्त परिचय भी दिया है। यह ग्रन्थ प्रकाशित भी हो चुका है।
माण्डपत्र	२१·५ × १५	२००	२४	१६	२४००	पूर्ण (जीर्ण)	,,	इस जीर्ण ग्रन्थ में केशवदास कृत "कविप्रिया" के सोलहों प्रकाशों की टीका सुरत मिश्र ने की है। ग्रन्थ की रचना रीतिकालीन मानसिकता के आचार्यत्व पक्ष को प्रमाणित करती है। इसकी रचना प्रवीण राय को अलंकारों की शिक्षा देने के उद्देश्य से की गयी थी।
माण्डपत्र	२८ × १३	९२	१२	३५	१२३	अपूर्ण	,,	आचार्य केशवप्रणीत इस ग्रन्थ में एक विशेष प्रकार का आलेखन कवि के चित्रबन्ध अलंकार के स्पष्टीकरण का द्योतक है। ग्रन्थ अपूर्ण होते हुए भी महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	२६.५ × १३·५	१८१	१०	३५	१९८९	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में कुल मिलाकर षोडश प्रभाव हैं। ग्रन्थारम्भ में मंगलाचरण, ग्रन्थ-निर्माण, नृपवंश-वर्णन, कविता भेद, रस-रसांगादि की प्रधानता है। काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ के रूप में कविप्रिया अपने-आप में अनूठा सर्वांगीण काव्य है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
५६	७६३२/४४६६	कविप्रिया	१६०१ई०	विप्र गणेश	१८५१ई०	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५७	७६८४/४४६७	कविप्रिया सटीक (बलिभद्र चन्द्रिका)	—	शिवदीन मिश्र	१८६६ई०	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५८	८००६/४५१२	काव्यकला निधि	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५९	७७२४/४३२७	काव्य विनोद	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६०	७७०८/४३१८	काव्य-विलास	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६१	८०२६/४५१८	काव्य रसायन	१८१०ई०	—	—	हिन्दी	नागरी
६२	८०२४/४५१६	काव्य सुधाकर	१७२०ई०	रामसहाय तिवारी	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६३	७७३७/४३३८	गंगाभरण	१८८२ई०	—	१८८२ई०	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६४	८२३३/४६६४	गंगाभूषण	—	—	१८७८ई०	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२७ × ११.५	२३०	८	३०	१७२५	पूर्ण	डॉ० नवल-विहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में १६ अध्याय हैं। ग्रन्थ-रचना दोहा, दण्डक, छप्पय जैसे छन्दों में है। बीच-बीच में आचार्य केशवदास जी ने रसिकप्रिया, रामचन्द्रिका के भी उद्धरण दिये हैं।
माण्डपत्र	२४.५ × १५.।	१९२	१३	३६	२८०८	पूर्ण	,,	इसमें बलिभद्र नामक कवि ने आचार्य केशवदास प्रणीत कवि-प्रिया की टीका गद्य में लिखी है। बीच-बीच में चित्र शैली का भी अनुगमन हुआ है।
माण्डपत्र	२० × १६.५	२७६	१३	२४	२६९१	अपूर्ण	,,	यह ग्रन्थ रीतिकालीन शैली में विविध काव्यांगों से संवलित है। यह नैषध महाकाव्य का ब्रजभाषा में सफल अनुवाद है।
नवीन माण्डपत्र	२५ × १६.५	३६	२२	२०	४९५	अपूर्ण	कन्हैयालाल सिरोहिया, चरखारी हमीरपुर	इस काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ में रस, अलंकार, नायक-नायिका-भेद आदि का संक्षिप्त उल्लेख है।
नवीन माण्डपत्र	२४ × १६	१७८	२०	२०	८९०	अपूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में रस, नायक-नायिका भेदादि वर्णित है।
माण्डपत्र	२२.५ × १७	१९२	१७	१९	१९३८	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में रस, शब्द-शक्ति, नायिका-भेद, छन्द, अलंकार का विस्तृत वर्णन है।
माण्डपत्र	२१ × १६.५	१९	१४	२४	२००	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में ध्वनि, अलंकार, नायिका-भेद वर्णित है।
माण्डपत्र	२७ × १८.५	८३	१८	२०	९३४	पूर्ण	,,	विविध अलंकारों के माध्यम से गंगा-वर्णन इस भक्ति-काव्य में रीतिकालीन शैली में है।
माण्डपत्र	३१ × १९.५	२४	३२	२२	५२८	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में दोहे एवं अन्य छन्दों के माध्यम से अलंकारों का वर्णन है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६५	८३५६/४७३६	गुलाल चन्द्रिका	१७६३ई०	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६६	७७८८/४३६५	पद्माभरण	—	प्रोहित अम्बर-प्रसाद	१८८८ई०	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६७	७६२८/४४६२	फाजिलअली प्रकाश	१६७६ई०	—	१८३८	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६८	८३५३/४७३७	फाजिलअली प्रकाश	—	छेदाराइ बन्दीजन	१८०६ई०	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६९	७६०७/४४४१	फाजिलअली प्रकाश	१६८०ई०	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७०	७६५३/४४७७	भावविलास	—	—	२१-१-२७	हिन्दी	नागरी
७१	७८७६/४४१५	भाषा-भरण	—	वैद्यनाथ पण्डित मुदर्रिस	१८७८ई०	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्ति स्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	३२ × २०	१०४	२०	३०	१९५०	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में श्रृंगार रस सावयव वर्णित है। ग्रन्थ में छन्दों की संख्या ५५९ है।
माण्डपत्र	२२.५ × १३	३८	१२	३६	५१३	अपूर्ण	केशवकिशोर तिवरी, दतिया	इस ग्रन्थ में विभिन्न अलंकारों का वर्णन दोहा व चौपाई छन्द में है।
माण्डपत्र	२२ × १४	११२	१८	१५	९४५	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में अलंकार, नायिका-भेद, रस के लक्षण एवं उदाहरण वर्णित हैं। इसमें सुखदेव मिश्र ने कविराज नाम का प्रयोग यत्र-तत्र किया है। प्रति महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	२१.५ × १७	५२	२०	१९	६१७	अपूर्ण	,, ,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में काव्यांग-निरूपण दोहों एवं कवित्तों के माध्यम से हुआ है। लिपि प्राचीन है।
माण्डपत्र	२७ × ११.५	१०४	११	३१	११०८	पूर्ण	,, ,,	प्रस्तुत ग्रन्थ के आठ उल्लासों में अलंकार, नायिका भेदादि के वर्णन से युक्त है।
माण्डपत्र	३३ × २०.५	११	२४	२०	१६५	अपूर्ण	,, ,,	यह ग्रन्थ भावविलास के मात्र लक्षण प्रकरणों का संग्रह है। जिसके प्रथम भाग में नायक-नायिका-भेद एवं द्वितीय भाग में अलंकार वर्णित हैं। पूर्ण भावविलास भारत जीवन प्रेस, काशी से मुद्रित हो चुका है।
माण्डपत्र	२३ × १२	११९	११	१६	६०५	पूर्ण	,,	यह ग्रन्थ प्रकाशित है। इसमें विविध अलंकारों का वर्णन है। ग्रन्थकार ने अपने नाम की घोषणा सातवें दोहे में कर दिया है। इसे लिपिकार ने महाराजा मुनेश्वरबख्श सिंह बहादुर के लिए लिपिबद्ध किया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि	अ
१	२	३	४	५	६	७	८	
७२	७७३३/४३३५	भाषा-भरण	१७६८ई०	बलदेव मिश्र	१८७९ई०	हिन्दी	नागरी	मा
७३	७९६१/४४८२	भाषा-भरण	१८९२ई०	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी	म
७४	७७७५/४३६१	भाषाभूषण	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी	म
७५	७७१९/४३२३	भाषाभूषण	–	–	१८५९ई०	हिन्दी (ब्रज)	नागरी	म
७६	८३८२/४७५६	भाषाभूषण (तिलक)	–	–	१८७२ई०	हिन्दी (ब्रज)	नागरी	म
७७	८२६७/४६८४	भाषाभूषन	–	महाराज कुँवर दिल्ली-पतिजू	१९३६ई०	हिन्दी	नागरी	म
७८	७८९९/४४३३	भाषाभूषन	–	पं० गंगा-दीन	१८३७ई०	हिन्दी	नागरी	
७९	७९७९/४४९४	रसपीयूषनिधि	–	बलदेव मिश्र	१८९०ई०	हिन्दी	नागरी	

ाधार	आकार (से०मी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
़डपत्र	२० × १५·५	७८	१६	२०	७८०	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारीमिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में रीतिकालीन शैली में अलंकार वर्णित हैं। अलंकार-परम्परा की दृष्टि से ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है। पंण्डित कृष्णबिहारी मिश्र द्वारा सम्पादित "समालोचक" पत्र में यह ग्रन्थ छप भी चुका है।
़ण्डपत्र	३३ × २०	५३	२०	२०	६६३	पूर्ण	,,	अलंकारशास्त्र की दृष्टि से यह महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।
़ाण्डपत्र	१६.५ × १२·५	४१	१४	१३	२३३	अपूर्ण	बलबीरसिंह, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में अलंकारों का वर्गीकरण किया गया है।
़ाण्डपत्र	२४·५ × १६	३४	१६	१६	२७२	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में कवि ने नायक-नायिका-भेद एवं अलंकारों का वर्णन लक्षण व उदाहरण की शैली में किया है। इसके अनेक संस्करण निकल चुके हैं।
़ाण्डपत्र	१६.७ × १५.५	९५	१२	२३	८१६	पूर्ण	,,	यह अलंकार का ग्रन्थ है, जिसके टीकाकार दलपतिराय हैं।
़ाण्डपत्र	२१ × १५.५	३०	१६	२०	३००	पूर्ण	कन्हैयालाल, चरखारी (हमीरपुर)	प्रस्तुत ग्रन्थ में नायक-नायिका-भेद, वियोगवर्णन एवं अलंकारों का विवेचन है। सम्पूर्ण कृति २०४ दोहों में है।
़ाण्डपत्र	२३ × १५.५	२४	२४	२०	३६०	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में नायक-नायिका-भेद, रस एवं उसके स्थायी भाव तथा अलंकारों का वर्णन है। ग्रन्थ प्रकाशित भी हो चुका है।
़ाण्डपत्र	२० × १५.५	२५४	१८	२०	२८५८	पूर्ण	,, ,,	यह ग्रन्थ लक्षणग्रन्थ की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इसकी रचना कवि ने प्रतापसिंह के लिए की थी, जो स्वयं एक अच्छे कवि थे।

क्रम सं०	ग्रन्थसं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
८०	७६२६/४४६३	रस रहस्य (भापाकाव्य)	–	–	–	हिन्दी	नागरी
८१	७७२६/४३३१	रसराज (तिलक)	१६५०ई०	प्रताप-साहि	१८३६ई०	हिन्दी	नागरी
८२	८०३८/४५२३	ललितललाम	–	–	–	हिन्दी	नागरी
८३	७८८६/४४६६	ललितललाम	–	बृजलाल दीक्षित	१७५५ई०	हिन्दी	नागरी
८४	८३७२/४७४६	ललितललाम	–	–	१८३६ई०	हिन्दी	नागरी
८५	७६५०/४४७६	वषत विकास	–	–	–	हिन्दी	नागरी

...धार	आकार (से०मी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
...डपत्र	५५ × २२.५	३०	२२	१८	२७१	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में देव, गोकुल, कुलपति मिश्र आदि आचार्यों के काव्यशास्त्रीय लक्षणों का आकलन किया गया है। यत्र-तत्र उर्दू भाषा के भी उदाहरण मिलते हैं।
...ण्डपत्र	२७ × १७	१५०	२२	२२	२२६४	अपूर्ण	कन्हैयालाल सिरोहिया, चरखारी (हमीरपुर)	इस ग्रन्थ में नायक-नायिका-भेद, शृंगारादि रसों तथा रसवत् अलंकारों का उल्लेख है। इसकी टीका ब्रज गद्य में दी गयी है। इससे ब्रज गद्य का विकास १६०० ई० से प्रमाणित होता है।
...ण्डपत्र	२२.५ × १३.५	१२२	१६	१२	७३२	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में अलंकारों का विवेचन है। लक्षण व उदाहरण कवित्त व सवैया में दिया गया है।
...ाण्डपत्र	२१ × १४	४९	२४	२४	८८२	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में भक्ति का शृंगारिक रूप राधाकृष्ण के माध्यम से वर्णित है। बूंदी राज्य का भी वर्णन मिलता है।
...ाण्डपत्र	२४.५ × १७	१५५	१२	१७	९८८	पूर्ण	दतिया	यह अलंकार का ग्रन्थ है। ग्रन्थ में दोहा, सवैया, कवित्त, घनाक्षरी आदि छन्दों की संख्या ३९६ है।
...ाण्डपत्र	३३ × २०	२२	२४	१५	१८४५	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में कवि बख्तावर सिंह का प्रशस्तिगान, कवि भोगीलाल ने शृंगार एवं अन्य रसों में किया है। ग्रन्थ चरितपरक होकर भी रसादि वर्णन के कारण महत्त्वपूर्ण है।

क्रम सं०	ग्रन्थसं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
८६	८२६६/४६८४	व्यंग्यार्थ कौमुदी	—	महाराज कुँवर दिल्लीपति जू देव	१६३६ई०	हिन्दी	नागरी
८७	७६६१/४५००	व्यंग्यार्थ कौमुदी	—	बलदेव मिश्र	१८७६ई०	हिन्दी	नागरी
८८	७६३०/४४६४	शव्दरसायन	—	—	—	हिन्दी	नागरी
८६	८३६३/४७४५	शव्द विभूषन (गिरा विभूषन)	—	—	—	हिन्दी	नागरी
६०	७६८६/४४६८	शिवराजभूषण	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६१	७८६३/४४२८	श्री मुनीश्वरभूषण	१६२१ई०	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२१ × १५.५	१००	१६	२५	१२५०	पूर्ण	कन्हैयालाल, चरखारी, (हमीरपुर)	प्रस्तुत ग्रन्थ में नायक-नायिका-भेद, लक्षण एवं अलंकारों का वर्णन है। इस कृति में छन्दों की संख्या १४४ है।
माण्डपत्र	२६ × १६	६४	२०	२०	८००	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	नायिका-भेद के सन्दर्भ में व्यंजना-व्यापार एवं अलंकारों का वर्णन है। ग्रन्थ रीति-कालीन शैली की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	२०.५ × १५.५	१९१	१६	१९	१८११	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में एकादश प्रकाश हैं। ग्रन्थ का अन्तिम दो पृष्ठ भी नवलबिहारी जी ने ही लिखा है। शब्दार्थ निर्णय-शक्ति, रस, रसांग, वृत्ति, अलंकार का सुन्दर निदर्शन हुआ है।
माण्डपत्र	२७.५ × १७	७४	२१	२०	९७१	पूर्ण	,,	इसमें शब्द-शक्ति, काव्य-भेद एवं अलंकार-वर्णन है।
माण्डपत्र	२१.५ × १५	११	२३	२४	१९०	अपूर्ण	,,	भूषणकृत इस अपूर्ण ग्रन्थ "शिवराजभूषण" में अलंकारों का विवेचन शिवाजी की प्रशस्ति में किया गया है। इसकी रचना दोहा, सवैया में है। प्रति महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	२० × १५	२६६	१८	२०	२९९२	पूर्ण	,,	इसमें गुरुदीनकृत श्री मुनीश्वर-भूषण नामक रचना के दस प्रकाश हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में आचार्य मम्मट की छाप है। इस ग्रन्थ के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि रीतिकालीन युग की देन इस गद्य को किसी-न-किसी रूप में प्राप्त है।

कृष्णकाव्य

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६२	८३११/४७०८	अज्ञात	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	कैथी
६३	८२८२/४६८६	अज्ञात	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागर
६४	७८१६/४३७५	इन्द्रभान के पद	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागर
६५	८००२/४५०८	उद्योगपर्व (भाषानुवाद, महाभारत)	–	गंगा सिंह	१७६२ई०	हिन्दी (ब्रज)	नागर
६६	७६२४/४४५८	उद्योग पर्व भाषानुवाद	–	–	१८४४ई०	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (से०मी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१७·५ × १३	२	१७	१६	१४	अपूर्ण	कोटा (राजस्थान)	प्रस्तुत ग्रन्थ में लोकगीतों की शैली में कृष्ण के जन्म एवं बधाई आदि का वर्णन है।
माण्डपत्र	१६·५ × १३	१६	१३	१२	७८	अपूर्ण	मुजफ्फरनगर	लिपिजनित अस्पष्टता के कारण वर्ण्य-विषय का पता ठीक-ठीक नहीं चलता। कृष्णभक्ति के कुछ पद भी ग्रन्थ में निहित हैं।
माण्डपत्र	२१ × १४·५	१८	१६	१२	१०८	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में राधा और कृष्ण की मनोरम लीलाओं को अधार मानकर इन्द्रभान द्वारा रचित पदों को संकलित किया गया है। राधा और कृष्ण को प्रेम, काम और सौन्दर्य का उद्‌भावक मानकर उनके एकाकार रूप की अवतारणा इन पदों में की गयी है।
माण्डपत्र	२१·५ × १६·५	२४२	२०	२४	३६३०	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस प्रति में महाभारत के उद्योगपर्व को, जिसका भाषानुवाद सबलसिह चौहान ने किया था, लिपिबद्ध किया गया है। इसमें ३१ अध्याय हैं। इसकी रचना दोहा, चौपाई शैली में हुई है। भाषानुवाद की दृष्टि से ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	२४ × १२	२८४	९	३२	२५५६	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में सबलसिंह चौहान ने महाभारत के उद्योगपर्व का भाषानुवाद दोहा व चौपाई छन्दों में किया है। इसमें ३० अध्याय हैं।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
९७	८२७७/४६८९	उषाहरण	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी, कैथी
९८	७६९६/४३१३	कंसवध	–	–	–	हिन्दी (ब्रज-मिश्रित अवधी)	नागरी
९९	७७१२/४३१९	कृष्ण अर्जुन संवाद	–	–	–	हिन्दी (ब्रज गद्य)	नागरी
१००	८१९०/४६३५	कपरा चेतावनी	–	लाला वख्त सिंह	१८३२ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१०१	८२६१/४६८२	करुणा पचीसी	–	शंकर-प्रसाद	१८७९ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१०२	७८५९/४३९८	कवित्त संग्रह	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१६.५ × १३	५७	१२	१३	२७८	अपूर्ण	मुजफ्फरनगर	प्रस्तुत ग्रन्थ में उषाहरण की कथा का वर्णन है। ग्रन्थ के आरम्भ के ८० पृष्ठ अप्राप्य हैं। ग्रन्थ की लिपि अति दुरूह है।
आधुनिक माण्डपत्र	३१ × १८.५	१६०	३२	१७	२७२०	पूर्ण	श्री अटल बिहारी श्रीवास्तव, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में माखनचोर नन्द-किशोर द्वारा कंसवध की कथा का उल्लेख महाकाव्यात्मक शैली में किया गया है।
माण्डपत्र	२५ × १६.५	१०	१८	१६	९०	अपूर्ण	श्री बलबीर सिंह, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में कृष्ण और अर्जुन का संवाद ब्रजभाषा में उल्लिखित है। अर्जुन कृष्ण के चरणों में ही अपनी आस्था व्यक्त करते हैं, उन्हें ही सभी सुखों का मूल स्वीकार करते हैं।
माण्डपत्र	१७ × १२	९	१२	१३	३४७	पूर्ण	दतिया (म० प्र०)	प्रस्तुत ग्रन्थ में राधा, कृष्ण, कुब्जा, उद्धव आदि का उल्लेख किया गया है, और इसके साथ ही उद्धव-गोपी संवाद के माध्यम से विभिन्न वस्त्रों का वर्णन मुद्रालंकार के रूप में हुआ है।
माण्डपत्र	१३.५ × ११.५	५०	४	१६	१००	पूर्ण	श्री ब्रज-किशोर शर्मा, भरतगढ़, दतिया (म० प्र०)	प्रस्तुत ग्रन्थ में भगवान् श्री कृष्ण का गुणानुवाद २६ छन्दों में किया गया है। भगवान् भक्त की रक्षा किस प्रकार करते हैं, इसका ज्वलन्त उदा-हरण कवि ने अर्जुन, भीम, द्रौपदी आदि के दृष्टान्तों से किया है।
माण्डपत्र	१६.५ × ९.५	२	८	२४	१२	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में कृष्णभक्ति के दो पदों को लिपिबद्ध किया गया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
१०३	७८०५/४३७०	कृष्ण सैर	—	—	—	हिन्दी	नागरी
१०४	८२२६/४६५७	गिराज-(गिरिराज) चरित्र	—	—	१८३७ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
१०५	७६५८/४४७६	गीता कथा (अनुवाद)	१६३५ ई.	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१०६	७७३०/४३३२	गीता भाषानुवाद	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१०७	७८७४/४४११	गोपी विरह लीला	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१०८	८३५८/४७४०	गोविन्द-विवाहोत्सव	१६५८ ई.	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१०६	७८२६/४३८१	झूमका	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (से०मी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र० पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
आधुनिक माण्डपत्र	१६.५ × ११.५	७	१२	१४	३९	पूर्ण	श्री जगदीश-शरण बिल-गडया, मधुप पट्टा-पुर, दतिया	इस ग्रन्थ में कृष्ण-विहार-लीला का वर्णन कवित्त और सवैया छन्दों में किया गया है।
माण्डपत्र	१६.३ × १२	१९	१५	१२	१०७	पूर्ण	अज्ञात	इसमें भगवान् कृष्ण की गोवर्धन-धारण आदि लीलाओं का सरस वर्णन दोहों व चौपाइयों में किया गया है। 'इति गिराज चरित्र सम्पूर्ण' के बाद भी कुछ और चौपाइयाँ लिखी हैं।
माण्डपत्र	३३ × २५	२२	२२	२४	३६३	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में नैमिश्र मिश्र ने गीता के ११ से १५ अध्याय तक वेदान्त की मान्यता के अनुसार अनुवाद दोहा, चौपाई, सवैया आदि कई छन्दों में किया है।
माण्डपत्र	२४.५ × १३.५	२६४	८	३२	२११२	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया	इस ग्रन्थ में गीता का भाषा-नुवाद गद्य एवं पद्य शैली में किया गया है। दोहा छन्द की प्रधानता है।
माण्डपत्र	२१ × १३	२४	१९	१८	२५६	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में ५ अध्यायों में उद्धव के गोकुल जाने और कृष्ण से वहाँ वर्णन करने की कथा है।
माण्डपत्र	२५.५ × १८.५	११	१६	१९	७३	अपूर्ण	अज्ञात	'नव तारीख सुमार्चवसु शरनिध इन्दुप्रयुक्त' के अनुसार ग्रन्थकाल १९५८ ई० ज्ञात होता है। इसमें गोविन्दजी के विवाह का वर्णन दोहों एवं कवित्तों में है।
माण्डपत्र	११.५ × ८.५	१७	६	१२	३८	पूर्ण	डॉ० राजेन्द्र-कुमार मिश्र, नौटा, झाँसी	इसमें राधा और कृष्ण की लीलाओं का मनोहारी वर्णन किया गया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लि
१	२	३	४	५	६	७	८
११०	८३०६/४७०७	दशम स्कन्ध (पद संग्रह)	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नाग
१११	८२७२/४६८८	नागलीला	१६५८ ई.	माणिक्य-चन्द्र	१७३६ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नाग
११२	७८३२/४३८४	नाममाला	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नाग
११३	७७३८/४३३६	नित्य बिहारी जुगल ध्यान	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नाग
११४	८३१६/४७१५	पद	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागर
११५	८३१२/४७०६	पद	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
११६	८२७८/४६८६	पद	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (से०मी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१०.५ × ८	१७०	५	१२	३००	अपूर्ण	—	इस ग्रन्थ में श्रीमद्भागवत पुराण के दशम स्कन्ध की कथा का वर्णन है। लिपि सुस्पष्ट है; आदि के बारह पृष्ठ अप्राप्त हैं।
माण्डपत्र	४५ × १३	७	४०	१८	१५७	पूर्ण	—	इस ग्रन्थ में कवि ने कालिय-मर्दन की लीला का वर्णन किया है। ग्रन्थ लिपि की दृष्टि से प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण है।
प्राचीन माण्डपत्र	२१.५ × १०.५	११	९	२०	६३	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में कृष्ण के नामरूप की उपासना का वर्णन है। नाम-महिमा वस्तुतः भक्ति-काव्य की प्रमुख उद्भाषिका मानी जाती रही है।
माण्डपत्र	२१.५ × १६.५	३७	१६	१६	२९६	पूर्ण	श्री अटल-बिहारी श्रीवास्तव, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में भक्ति की श्रृंगारिक शैली में कवि ने नित्यविहारी राधाकृष्ण के चरणों में अपनी आस्था का पुष्प अर्पित किया है। रसिक सम्प्रदाय की दृष्टि से इसका महत्त्व है।
माण्डपत्र	१४.५ × १३	३६	१५	१८	३०४	अपूर्ण	कोटा, राजस्थान	इस ग्रन्थ में अष्टछाप के अधि-कांश कवियों के पद संगृहीत हैं। इसमें विविध छन्द हैं। इसमें होली, चाचरी आदि के पद हैं। लिपि से प्राचीन प्रतीत होता है।
माण्डपत्र	१९.२ × ११	९८	१५	१०	४५५	अपूर्ण	कोटा, राजस्थान	इस ग्रन्थ में अष्टछाप के प्रमुख कवियों के वात्सल्य, गोचारण आदि के प्रसंग के पद संगृहीत हैं।
माण्डपत्र	१६.५ × १३	२५	१३	१२	१२२	अपूर्ण	मुजफ्फर-नगर	लिपि की दुरूहता के कारण वर्ण्य-विषय और ग्रन्थ का आदि-अन्त स्पष्ट नहीं है। संकलित पद मीराँबाई के प्रतीत होते हैं।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
११७	७७०५/४३१६	पद संग्रह	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
११८	८०११/४५१४	पद संग्रह	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
११९	८०००/४५०७	पद संग्रह	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१२०	७७६४/४३५४	पद संग्रह	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१२१	८४२२/४७७७	पद संग्रह	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१२२	७७१०/४३१९	प्रतीति परीक्षा	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१२३	७७०९/४३१९	प्रेम परीक्षा	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र० पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२०.५ × १६.५	६	१७	२६	८३	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में सूरदास, अग्रदास, परमानन्ददास आदि के स्फुट पदों को लिपिबद्ध किया गया है ।
आधुनिक माण्डपत्र	२१.५ × १४	४	१७	२०	२८	पूर्ण	श्री अटल-बिहारी श्रीवास्तव, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में हरिदास स्वामी, व्यास, हरिवंश आदि हरिदासी सम्प्रदाय के कृष्णभक्त कवियों के स्फुट पदों को लिपिबद्ध किया गया है ।
माण्डपत्र	२०.५ × १५.५	१५	१७	१६	१२७	पूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में राधा और कृष्ण से सम्बन्धित सूरदास और परमानन्ददास के पदों को संकलित किया गया है ।
माण्डपत्र	२२ × १६	५५	१५	—	—	अपूर्ण	,,	इसमें अष्टछाप के प्रमुख कवियों के स्फुट पदों का संकलन किया गया है ।
माण्डपत्र	१६ × १०	३	५	२२	११	पूर्ण	श्री श्यामा-चरण खरे, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में हरि-नाम के महत्त्व का प्रतिपादन १० पदों में किया गया है ।
माण्डपत्र	२५ × १६.५	१३	१८	१६	११७	पूर्ण	श्री बलबीर सिंह, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में कवि कृष्ण के माध्यम से राधाजन्य प्रेम के प्रति विश्वास व्यक्त करके प्रेम की शुचिता को सम्पृक्त करता है ।
माण्डपत्र	२५ × १६.५	६	१८	१४	४७	पूर्ण जीर्ण	,,	इस ग्रन्थ में राधा को आह्ला-दिका-शक्ति मानकर कवि ने अपनी भक्ति को श्रृंगार के कलेवर में परखा है ।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
१२४	८३६३/४७६५	प्रेमसागर भाषा	१७७० ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१२५	७८२०/४३७६	वारामासी	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१२६	७७६१/४३६६	बारामासी	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१२७	७८२६/४३८१	बिट्ठल विपुल जी की बानी	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१२८	७७६८/४३६७	बिट्ठल विपुल जी की बानी	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
६	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	३२ × २०·३	७१	१८	१८	७१९	पूर्ण	अज्ञात	इस ग्रन्थ में राधा-कृष्ण के प्रेमास्पद प्रसंगों के साथ ही गोपी विरह, उद्धव-गोपी-संवाद की कथा दोहे और चौपाई में प्रस्तुत की गयी है। लिपि अत्याधुनिक है। ग्रन्थ मुद्रित भी हो चुका है।
माण्डपत्र	१७ × १२	२	११	११	८	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस खण्डित ग्रन्थ में वियोगिनी गोपी और राधा की मनोदशा का लोकगीतों की शैली में वर्णन किया गया है। बारह मासा के सन्दर्भ वाले इस ग्रन्थ में मास की दृष्टि से केवल आषाढ़ एवं भाद्रपद का ही संकेत है।
माण्डपत्र	१७ × ११·५	१६	१४	१४	९८	पूर्ण	श्री मुन्नालाल परसरिया, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में चारों मनोविकारों (काम, क्रोध, मद और लोभ) को मानव जीवन की पृष्ठ-भूमि में विवेचित किया गया है। यथा प्रसंग गोपियों का कुब्जा के प्रति ईर्ष्याभाव और उद्धव संवाद बहुत सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया गया है।
माण्डपत्र	१४ × ८·५	२१	८	१८	९५	अपूर्ण	श्री राजेन्द्र कुमार मिश्र नौटा, झांसी	इस ग्रन्थ में बिट्ठलनाथ द्वारा कृष्णभक्ति का महत्त्व प्रति-पादित किया गया है। उन्हें ही एकमात्र सत्ता मानकर उनके क्रियाकलापों का सांगोपाङ्ग निरूपण करते हुए उनके प्रेम को तपश्चर्या की पवित्र भूमि पर प्रतिष्ठित किया गया है।
माण्डपत्र	१४ × ८·५	२१	८	१७	८६	अपूर्ण	श्री केशव किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में विट्ठलनाथ द्वारा कृष्ण-भक्ति के महत्त्व का प्रति-पादन किया गया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
१२६	७७८७/४३६४	भगवद्गीता (हिन्दी पद्यानुवाद)	१७६१ ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१३०	८३४२/४७२८	भागवत	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
१३१	८३६४/४७६५	भागवत एकादश स्कन्ध की टीका	१६३५ ई.	गुमानी-राम	१८२६ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
१३२	७६७२/४३००	भागवत दशम स्कन्ध	–	प्रधान छोटेलाल	–	हिन्दी (ब्रज-गद्य)	नागरी
१३३	७७०७/४३१७	भागवत पंचम स्कन्ध (भाषा)	–	प्रधान आनन्द सिंह कुडरा	१८३७ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१३४	७७६१/४३५१	भागवत भाषानुवाद	–	–	–	हिन्दी (ब्रज-गद्य)	नागरी
१३५	७८७८/४४१४	भीष्मपर्व (भाषा-नुवाद महाभारत)	–	–	१८४१ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
प्राचीन माण्डपत्र	२२ × १२	९६	९	३२	८६४	पूर्ण	अज्ञात	इसमें (संस्कृत) गीता का पद्यानुवाद ब्रजभाषा की सरस शब्दावली में किया गया है।
माण्डपत्र	२२ × १२.५	२११	९	२६	१५४३	पूर्ण	—	इस ग्रन्थ में श्रीमद्भागवत की कथा हिन्दी भाषा में दोहा, चौपाई, सोरठा जैसे सरल छन्दों में प्रस्तुत की गयी है। इसमें कुल ९ अध्याय हैं। लिपि अत्याधुनिक है।
माण्डपत्र	३२ × १६	२७३	११	३५	३२८५	पूर्ण	श्री माताम्बर द्विवेदी, श्री निवासधाम, मिर्जापुर (उ० प्र०)	इस ग्रन्थ में श्रीमद्भागवत के एकादश स्कन्ध की टीका दोहों व चौपाइयों में ३१ अध्यायों में प्रस्तुत की गयी है। लिपि सुपाठ्य है।
माण्डपत्र	२३ × १७	३५७	१३	१८	२६२	अपूर्ण	हरदयाल सक्सेना, मु० पो० बरहा, जि० भिण्ड (म० प्र०)	इस अपूर्ण ग्रन्थ में लिपिकार ने किसी भाष्य टीका की प्रतिलिपि की है तथा कथा-वाचकों के लिए इसे उपयोगी माना है।
देशी कागज	२४ × १६.५	१७०	१५	१६	५२५	पूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	भागवत पंचम स्कन्ध का भाषानुवाद यह ग्रन्थ ब्रजभाषा गद्य के विकास का संकेत देकर भाषीय ऐतिहासिक पीठिका का निर्वाह करता है।
माण्डपत्र	२४ × १४.५	७८	१०	३६	८७८	अपूर्ण	,,	इस खण्डित एवं अपूर्ण ग्रन्थ में भागवत की कथा के कुछ अंशों को ब्रज-गद्य में लिपिबद्ध करके कृष्ण-गुणानुवाद किया गया है।
माण्डपत्र	२६.५ × १२	१२४	९	३८	१३२५	पूर्ण जीर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में सबलसिंह चौहान ने महाभारत के भीष्मपर्व का भाषानुवाद दोहा, चौपाई छन्द में किया है। ग्रन्थ कीट-दंशित अतएव अपाठ्य है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
१३६	८१३४/४६०५	भ्रमरगीत	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१३७	८३०५/४७०३	भ्रमरगीत (भँवर गीता)	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१३८	७६६४/४४८५	मथुरा वर्णन (अनुवाद)	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१३९	८१३०/४६०१	महाभारत (उद्योगपर्व)	–	कमला-राम मिश्र	१८३७ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
१४०	७६२१/४४५५	महाभारत (कर्णपर्व)	१६७७ ई.	भवन त्रिवेदी	१८५३ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
१४१	७६१०/४४४४	महाभारत (गदापर्व)	–	गजराज	१८८१	हिन्दी (अवधी)	नागरी
१४२	७६०६/४४४०	महाभारत (गदापर्व)	–	–	१८५२ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	३०.५ × १२.५	५	१४	४८	१०५	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	यह विरह-वर्णन का एक अनूठा ग्रन्थ है। ग्रन्थ गोपी-उद्धव संवाद रूप में प्रस्तुत किया गया है।
माण्डपत्र	१४.५ × १२	२४	९	१४	९५	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	इस ग्रन्थ में सूरदास जी के नाम से प्राप्त भ्रमरगीतों का संग्रह किया गया है। ग्रन्थ पत्राकार है और दोहों में रचित है। महाभारत के दो-तीन श्लोक भी उद्धृत हैं।
माण्डपत्र	३३ × १०	४	१६	५०	१००	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में कृष्ण के मथुरा-गमन का वर्णन ब्रज गद्य में किया गया है। लिपि अर्वाचीन है।
माण्डपत्र	२६ × १४	२१६	१०	३८	२५९९	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में महाभारतके उद्योग-पर्व की कथा का वर्णन दोहों और चौपाइयों में ३१ अध्यायों में किया गया है। लिपि सुन्दर है।
माण्डपत्र	२६.५ × १३.३	४२	१०	४०	५२५	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में महाभारत के कर्ण पर्व की कथा का वर्णन दोहा, चौपाई छन्दों में ५ अध्यायों में है। ग्रन्थ पत्राकार है।
माण्डपत्र	२७ × ११.५	२६	९	३५	२५६	पूर्ण	,,	इसमें महाभारत के गदापर्व का वर्णन ओजपूर्ण वीर शैली में दोहा, चौपाई छन्दों में किया गया है। ग्रन्थ यत्र-तत्र कीट-दंशित है।
माण्डपत्र	२९.५ × १३	१६	१०	४०	१५०	पूर्ण	,,	महाभारत के गदापर्व का वर्णन ओजपूर्ण शैली में दोहा, चौपाई छन्दों में किया गया है। ग्रन्थ कीट-दंशित है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
१४३	८१२६/४६००	महाभारत (गदापर्व)	–	भवन त्रिवेदी	१८५३ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
१४४	८१८७/४६३२	महाभारत (द्रोणपर्व)	–	भवन त्रिवेदी	१८५३ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
१४५	८३६२/४७४४	महाभारत "नीलकाण्ड" (अश्वमेध माहात्म्य)	–	–	१८५६ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
१४६	८१३३/४६०४	महाभारत (विराटपर्व)	–	कमला-राम मिश्र	१८३७ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
१४७	७६१६/४४५३	महाभारत (शल्यपर्व)	–	गजराज	१८८१ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
१४८	८२३४/४६६५	मोहन विलास	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१४६	८२५१/४६७७	रसखान के कवित्त	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२७ × १३.५	२६	९	३१	२३०	पूर्ण	डॉ० नवल-विहारी मिश्र, सीतापुर	महाभारत के गदापर्व की कथा का वर्णन दोहा, चौपाई छन्दों में ओजपूर्ण शैली में किया गया है।
माण्डपत्र	२७ × १३.७	११२	९	३२	१००८	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में महाभारत के द्रोण-पर्व की कथा का वर्णन है। ग्रन्थ पत्राकार व लिपि आधुनिक है।
माण्डपत्र	३१.५ × १३.५	११	१३	४७	२१०	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में महाभारत के नीलकाण्ड की कथा के अन्तर्गत अश्वमेध यज्ञ के माहात्म्य का वर्णन दोहा, चौपाई, छन्दों में हुआ है। रचयिता का नाम अस्पष्ट है।
माण्डपत्र	२६ × १२.७	११०	९	४०	१२४	पूर्ण	,,	ग्रन्थ में महाभारत के विराट-पर्व की कथा का वर्णन १३ अध्यायों में दोहा, चौपाई छन्दों में किया गया है।
माण्डपत्र	२६.५ × १३	२०	८	३५	१७५	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में महाभारत के शल्यपर्व की कथा का वर्णन दोहा, चौपाई छन्दों में २ अध्यायों में हुआ है।
माण्डपत्र	२३.५ × १५.५	१६	१६	१८	१४४	अपूर्ण	श्रीराम वर्मा, दतिया	कवि ने भगवान् कृष्ण के गुणों एवं क्रियाकलापों का वर्णन शृंगार एवं भक्ति के माध्यम से किया है। कुल ११२ छन्द हैं, जिनमें दोहे एवं सोरठे हैं।
माण्डपत्र	२४.५ × १२.५	३	८	२४	१८	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	इस पत्राकार ग्रन्थ में रसखान जी के तीन पूर्ण एवं एक अपूर्ण कवित्तों का संग्रह है। लिपि अत्याधुनिक है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
१५०	७७६५/४३६६	राधाकृष्ण विहार चौपही	–	–	–	हिन्दी	नागरी
१५१	७७४३/४३३६	लालजी की बधाई	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१५२	८२८५/४६६०	विनय मंजरी	–	मूलचन्द्र	१८८० ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१५३	७६२६/४४६०	विराटपर्व (भाषानुवाद)	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
१५४	८२६८/४६८५	वृन्दावन महिमा	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१५५	८२८४/४६६०	वृन्दावन शत	–	लाला जगन्नाथ	१८७० ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (से०मी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१७ × ११.५	१७	११	१२	६४	पूर्ण	श्री मुन्नालाल परसरिया, दतिया	इस ग्रन्थ में राधा-ललिता नायिका के प्रेममय प्रसंगों से सम्बद्ध चुड़िहारिन आदि का मार्मिक वर्णन हुआ है।
माण्डपत्र	२१.५ × १६.५	२६	१६	१८	२३४	पूर्ण	श्री अटल-बिहारी श्रीवास्तव, दतिया	इस ग्रन्थ में कवि ने उर्दू-मिश्रित ब्रजभाषा में कृष्ण के जन्म एवं उनकी लीलाओं का वर्णन किया है।
माण्डपत्र	१६.५ × ११.५	१६	११	१६	८८	पूर्ण	श्रीराम वर्मा, दतिया	दोहों में विरचित इस ग्रन्थ में कवि ने भगवान् श्रीकृष्ण से भक्ति का निवेदन किया है।
माण्डपत्र	२८ × १५	१४३	१४	३०	१८७७	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में महाभारत के विराटपर्व का भाषानुवाद दोहा व चौपाई छन्दों में किया गया है। ग्रन्थारम्भ में संस्कृत के श्लोक हैं। ग्रन्थ अपूर्ण होने पर भी कृष्णकाव्य के अनूदित ग्रन्थों में महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	१६ × १०	९	५	२०	२८	अपूर्ण	श्री श्यामा-चरण खरे, दतिया	इस ग्रन्थ में कवि ने श्रीकृष्ण के लीलाधाम वृन्दावन का यशोगान बहुत ही ललित छन्दों में किया है। ग्रन्थ का आदि भाग अप्राप्त है, जिससे प्रारम्भिक ७ छन्द प्राप्त नहीं हैं।
माण्डपत्र	१६.५ × ११.५	३२	११	१६	१७६	पूर्ण	श्रीराम वर्मा, दतिया	'सोलह सौ ध्रुव व्यासिया पूनौ अगहन मास' के आधार पर ग्रन्थ का रचनाकाल १६८२ वि०सं० ज्ञात होता है। इस ग्रन्थ में वृन्दावन का वर्णन श्री कृष्ण के लीलाधाम के रूप में किया गया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
१५६	७६७१/४४६०	व्रज विलास	–	भवन त्रिवेदी	१८६० ई.	हिन्दी (व्रज)	नागरी
१५७	८२६६/४६८६	व्यास जी के दोहा	–	–	–	हिन्दी (व्रज)	नागरी
१५८	८०१०/४५१४	व्यास जी के वानी के पद	–	–	–	हिन्दी (व्रज)	नागरी
१५६	८६७०/४६६६	श्यामा श्याम विहार	–	काशीराम सौधी	१८२१ ई.	हिन्दी (व्रज)	नागरी
१६०	८४२१/४७७७	श्रीकृष्णाष्टक	–	–	–	हिन्दी (व्रज)	नागरी
१६१	८३४१/४७२८	श्रीमद्‌भागवत (जन्मकाण्ड)	–	बखतावर मिश्र	१७८७ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (से०मी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२३ × १८	३८८	१९	२६	५६४०	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	ग्रन्थ में श्रीकृष्ण के चरित्र का वर्णन दोहा, चौपाई, सोरठा, छन्द में किया गया है। ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	१६ × १०	३	५	२२	११	(पूर्ण)	श्री श्यामा-चरण खरे, दतिया	इस ग्रन्थ में श्रीकृष्ण के लीला-धाम का वर्णन १० छन्दों में संकलित है।
आधुनिक माण्डपत्र	२१·५ × १७	९	१६	२४	१२०	पूर्ण	श्री अटल-बिहारी श्रीवास्तव, दतिया	इस ग्रन्थ में हरीराम व्यास के पदों को लिपिबद्ध किया गया है। वैसे वाणियों का प्रयोग अध्यात्मक्षेत्र में किया जाता है, जिनका सम्बन्ध निर्गुण भक्ति की परम्परा से जोड़ा जाता है। पर इस ग्रन्थ में राधा-कृष्ण के एकाकार रूप के विषय में हरीराम व्यास ने अपनी वाणी का कौशल पिरोया है।
माण्डपत्र	१९.५ × १२	८८	१८	१२	५९४	पूर्ण (जीर्ण)	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में कवि ने भागवत पुराण की कथा राधा-कृष्ण विहार का वर्णन शृंगारिक दोहों एवं चौपाइयों में ७ अध्यायों में किया है। ग्रन्थ कीट-दंशित है।
माण्डपत्र	१६ × १०	४	५	१९	१२	पूर्ण	श्री श्यामा-चरण खरे, दतिया	इसमें कवि ने श्रीकृष्ण की स्तुति ८ ललित छन्दों में की है। लिपि आधुनिक प्रतीत होती है।
माण्डपत्र	२२ × १२.५	५४३	९	२५	४२०९	पूर्ण	—	इस पत्राकार ग्रन्थ में भागवत पुराण की कृष्णजन्म की कथा का वर्णन दोहा, सोरठा छन्दों में २२ अध्यायों में किया गया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
१६२	७६६४/४२६३	श्रीमद्भागवत (दशम स्कन्ध)	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१६३	८३४०/४७२८	श्रीमद्भागवत (पारायणकाण्ड)	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
१६४	८२५४/४६७६	श्री राधाकृष्ण जू की सगारथ लीला	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१६५	८३५५/४७३८	श्री हरिनाम सुधा-निधि रस विलास	–	–	–	हिन्दी	नागरी
१६६	७६७७/४४६२	सनेह सागर	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
प्राचीन माण्डपत्र	३३×२३	२०३	२६	३०	४९४२	पूर्ण	केशवकिशोर तिवारी, दतिया (म०प्र०)	इसमें भागवत के दशम स्कन्ध का पद्यानुवाद विभिन्न छन्दों में किया गया है। भाषानुवाद की प्रचीनता की दृष्टि से ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है। इसकी रचना गुमानधनिक ने इन्द्रजीत सिंह के लिए की थी।
माण्डपत्र	२५.५×१४.५	१०४१	७	२८	६३४५१	पूर्ण	—	इस ग्रन्थ में श्रीमद्भागवत की कथा का वर्णन ३२ अध्यायों में हुआ है। पत्राकार इस ग्रन्थ का आयाम विस्तृत एवं अत्याधुनिक है।
माण्डपत्र	१६.५×१०.५	५३	१३	११	२३४	पूर्ण	श्रीराम वर्मा, दतिया (म० प्र०)	श्रृंगार रस से पूर्ण इस कृति में श्रीराधा जी के रूपादि का वर्णन व श्रीकृष्ण के रूप, धाम, लीलातत्त्वों का विवेचन किया गया है। ग्रन्थ में ४ हुलास हैं। कृति की पूर्णता के पश्चात् ५-६ पत्रों में कुछ स्फुट लोकगीत लिखे हैं।
माण्डपत्र	३०×२२	२७	२८	३५	८२७	पूर्ण	डॉ० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ के 'प्रगट्यो तिहिकुल महा-मंदमति पतित पापनिधि मीना। कृष्ण सहाय प्रसिद्ध नाम जग स्यामाली गुरुदीना' के आधार पर ग्रन्थकार का नाम कृष्णसहाय ज्ञात होता है तथा 'हस्तवेदनिधिविधुगत विक्रमवर्षे' के आधारपर रचनाकाल १८८५ ई० है।
माण्डपत्र	२३×१६	१३०	१४	१६	९१०	अपूर्ण	श्रीब्रजकिशोर शर्मा, भरतगढ़, दतिया	इसमें कवि ने राधा और कृष्ण के प्रेमास्पद प्रसंगों की व्यंजना सरस शब्दावली में की है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
१६७	७८६४/४४०२	सभापर्व	–	–	–	हिन्दी	नागरी
१६८	७८८५/४४२०	सभापर्व (अनुवाद)	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१६९	७८२८/४३८१	सिद्धान्त के पद	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१७०	८२७६/४६८९	सुदामा चरित्र	–	–	–	हिन्दी	नागरी
१७१	८४११/४७७५	सूर के पद (दशम स्कन्ध)	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१७२	७६६५/४२६४	सूर मंजरी	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
आधुनिक माण्डपत्र	२४.५ × १३.५	१२०	११	३८	१७६८	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इसमें महाभारत के सभापर्व को दोहा और चौपाई छन्दों में निबद्ध किया गया है।
माण्डपत्र	२७ × १३	१०६	९	४०	११९३	अपूर्ण	,,	महाभारत के सभापर्व का अनुवाद हिन्दी (ब्रज) में किया गया है। प्रतिलिपि से ग्रन्थ प्राचीन प्रतीत होता है। प्रति कीट-दंशित पर महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	१४ × ८.५	२०	८	१८	९०	अपूर्ण	डॉ० राजेन्द्र-कुमार मिश्र, नौटा, झाँसी	इसमें हरिदास द्वारा मोक्ष-प्राप्ति के सिद्धान्तों की विवेचना की गयी है और राधा-कृष्ण को एकाकार मानकर राधा की आह्लादकारिणी शक्तियों की विवेचना की गयी है।
माण्डपत्र	१६.५ × १३	४७	१८	१२	३१७	पूर्ण	मुजफ्फरनगर	इसमें सुदामा का जीवनवृत्त प्रस्तुत किया गया है। द्वारका-गमन, विद्यार्जन, कृष्ण के साथ संवाद तथा इसके पूर्व पत्नी के साथ संवाद छन्दों में वर्णित है, लिपि अति दुरूह है।
माण्डपत्र	१८.८ × १५	८४	१५	१८	७०९	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इसमें भागवत के दशम स्कन्ध की कथा से सम्बन्धित सूरदास के कुछ पदों को संकलित किया गया है। ग्रन्थ में राधा और उनकी कीरति का संवाद बहुत ही रोचक ढंग से विविध छन्दों में लिखा गया है। कृति में १०४ पद हैं।
माण्डपत्र	३३ × २३.५	२३७	२०	२६	४६०१	पूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	लिपिकार ने इसे सूरदास की एक अलग रचना माना है। किन्तु इसमें सूरसागर के पदों को लिपिबद्ध कर, उसे सूर मंजरी की संज्ञा दे दी गयी है। यह प्रकाशित हो चुकी है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
१७३	७६७३/४३०१	सूर मंजरी	—	लालाराम-प्रसाद बैद	१८७५ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१७४	७८६५/४४०३	सूरसागर	—	गुलाब	१८५३ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१७५	७८०१/४३६६	स्नेह सागर	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१७६	८३०८/४७०६	स्फुट कवित्त	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१७७	८३१३/४७१०	स्फुट पद	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१७८	८२७०/४६८६	स्फुट पद	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१७९	८४२३/४७७७	स्फुट पद	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (से० मी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२२·५ × १६	५०४	१८	२०	५६७०	पूर्ण	श्री अटल-बिहारी श्रीवातव, दतिया	इस ग्रन्थ में सूरसागर के स्फुट पदों को लिपिकार ने संकलित कर, उसे 'सूर मंजरी' की संज्ञा से अभिहित कर सूरदास की अन्य रचना मानने की घोषणा की है। वस्तुतः 'सूर मंजरी' सूरदास की अलग रचना नहीं है।
माण्डपत्र	२७ × १३	२६६	१०	२८	२३२८	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर (उ०प्र०)	इस प्रत्राकार प्रति में सूरसागर के कुल ३०५८ पदों को लिपि-बद्ध किया गया है। प्रति महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	२१ × १४	११४	२०	१८	१२८३	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस खण्डित प्रति में भारतीय भक्ति-पद्धति में राधा और कृष्ण के प्रेम को अनेक छन्दों में वर्णित किया गया है। प्रति महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	१८ × १३.५	१४	१०	१६	७०	अपूर्ण	मुजफ्फरनगर	इस ग्रन्थ में महाकवि ग्वाल के ३५ कवित्तों का संग्रह है, जिनमें गोपियों के विरह-वर्णन, कुबरी-कृष्ण एवं उद्धव के प्रति उलाहना का उल्लेख किया गया है।
माण्डपत्र	२३.५ × १५.५	२६	२०	१६	२६०	अपूर्ण	कोटा (राजस्थान)	इसमें सूरदास आदि अष्टछापी कवियों के कुछ पद संग्रहीत किये गये हैं। प्राचीनता के कारण कुछ स्थल अस्पष्ट एवं दुरूह हैं।
माण्डपत्र	१६ × १०	२५	८	१५	९४	अपूर्ण	श्री श्यामा-चरण खरे, दतिया	इसमें सूरदास जी के २२ छन्दों का संकलन है।
माण्डपत्र	१६ × १०	२६	६	२०	९८	अपूर्ण	,,	इसमें सूरदास जी के २६ पदों का संकलन किया गया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
१८०	८३१०/४७०८	स्फुट पद संग्रह	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	कैथी (महा-जनी)
१८१	७६६६/४२६४	स्फुट पद (सूरदास)	—	—	१८४६ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१८२	८२६४/४६६४	स्वाध्याय	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
१८३	७७६६/४३६७	हरिदास की बानी	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१८४	७८२७/४३८१	हरिदास जी के पद	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (से० मी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१७.५ × १३	३३६	१७	१६	३३५६	पूर्ण	कोटा (राजस्थान)	इसमें लोकगीतों की शैली में कृष्णलीला का वर्णन किया गया है। कवि का नाम स्पष्ट नहीं है। ग्रन्थ की पुष्पिका में इसे असीपुराण कहा गया है।
माण्डपत्र	३३ × २३·५	६४	२०	२६	१०४०	पूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया	इस ग्रन्थ में कृष्ण के लीला-परक शृंगारिक पदों को लिपि-बद्ध किया गया है।
माण्डपत्र	२६·३ × ११·२	२	१५	५८	४७	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	इस ग्रन्थ में कृष्ण एवं द्वारका नगरी का वर्णन किया गया है। ग्रन्थ का प्राप्त एकमात्र पत्र भी कीट-दंशित है।
माण्डपत्र	१४ × ८·५	८७	८	१८	३९२	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया	भक्त स्वामी हरिदास ने अपने आराध्य राधा-कृष्ण की भक्ति में इस ग्रन्थ की रचना की है।
माण्डपत्र	११·८ × ८·५	१५६	६	१२	३५१	अपूर्ण	डॉ० राजेन्द्र-कुमार मिश्र, नौटा, झाँसी	इसमें कृष्ण-भक्त हरिदास कवि ने कृष्ण और राधा के लीला-मय रूपों को चित्रित किया है।

कोश

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	१	३	४	५	६		८
१८५	८०२५/४५१७	अनेकार्थ	१८८० ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१८६	८४१०/४७७५	अनेकार्थ	–	ठाकुर विभूति-सिह	१८५४ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१८७	७६६१/४३०८	अनेकार्थ मंजरी	१७८५ ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१८८	७७१७/४३२३	अनेकार्थ मंजरी	–	गंगा सिंह	१८५६ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१८९	७८६९/४४०७	अनेकार्थ मंजरी	–	–	१८३५ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१९०	७९८०/४४९४	उमराउ कोश	–	बलदेव मिश्र	१८९० ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१९१	८१३५/४६०६	नाममाला	–	सीताब-सिंह पवार	१८३० ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१९२	७९१५/४४४९	नाममाला	–	शिवराम	१८२८ ई.	हिन्दी	नागरी
१९३	८४०९/४७७५	नाममाला कोश	–	कालिका	१८५४ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (से० मी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
६	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१८
माण्डपत्र	२२.५ × १६	२२	१५	१७	१७५	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	नन्ददासकृत इस ग्रन्थ में शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग पर्याय के रूप में निर्दिष्ट है।
माण्डपत्र	१८.५ × १५	२४	१५	१८	२०३	पूर्ण	,,	दोहों में लिखित इस ग्रन्थ में एक ही शब्द के दो-तीन रूप अनेकार्थ के रूप में प्रयुक्त हैं।
माण्डपत्र	२१ × १५.५	३७	१४	१८	२६१	पूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया	इसमें मंगलाचरण के उपरान्त कवि ने गो, सुरभि, आत्मा आदि अनेक शब्दों के पर्याय-बाची नामों का उल्लेख दोहा व चौपाई छन्दों में किया है।
माण्डपत्र	२४.५ × १६	२५	१५	१६	१८८	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	दोहा और सवैया छन्दों में रचित इस ग्रन्थ में नन्ददास ने अनेक नामों के पर्यायवाची शब्दों को प्रस्तुत किया है।
माण्डपत्र	२०.५ × १२.५	१४	१२	३२	१६८	पूर्ण	,,	इसमें विभिन्न नामों के पर्याय और उनके अर्थ दिये गये हैं। ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	२० × १५.५	२५२	१६	१८	२६६३	पूर्ण	,,	यह उमराव सिंह के नाम पर लिखा गया एक उत्तम पर्याय-वाची कोश है।
माण्डपत्र	२४.३ × १२.३	२६	१३	३२	३७६	पूर्ण	,,	दोहों में लिखित इस ग्रन्थ में एक ही शब्द के कई पर्याय दिये गये हैं। यह शब्दकोश का उत्तम ग्रन्थ है।
माण्डपत्र	२० × १०.५	–	–	–	–	अति-जीर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इसके पृष्ठ परस्पर इतने संश्लिष्ट हैं कि ग्रन्थ खोला नहीं जा सकता है।
माण्डपत्र	१८.५ × १५	५७	१६	१७	४८४	पूर्ण	,,	अति प्राचीन एवं कीट-दंशित इस ग्रन्थ में विविध शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखे गये हैं।

चरितकाव्य

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
१६४	८२८७/४६६१	अज्ञात	–	–	–	हिन्दी (गद्य)	नागरी
१६५	७६८४/४३०४/१	छत्रसाल गौरवगाथा	–	–	–	हिन्दी (खड़ीबोली)	नागरी
१६६	८६६६/४६६६	जसवंत विलास	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
१६७	८१०३/४५७६	ज्ञानेश्वर चरितआर्या	–	–	–	हिन्दी (गुजराती)	नागरी
१६८	८३८४/४७५८	दिग्विजय प्रकाश	१८६१ ई.	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (से० मी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१५ × १३	२४	११	१६	१३४	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	इस ग्रन्थ में राजस्थानी में किसी राजा की प्रशंसा की गयी है । ग्रन्थ का वर्ण्य-विषय अस्पष्ट है । राजवैभव सम्बन्धी वस्तुओं का वर्णन प्रतीत होता है ।
आधुनिक माण्डपत्र	१९ × १५	३७५	२०	१४	३२८१	अपूर्ण	श्री अटल-बिहारी श्रीवास्तव, आधुनिक प्रेस, दतिया	इस ग्रन्थ में छत्रसाल की वीरता के साथ बुन्देलखण्ड की गौरव-गाथा का वर्णन दोहा, सवैया और घनाक्षरी छन्दों में किया गया है। यह सरस्वती की वन्दना से प्रारम्भ होकर १६ सर्गों में पूर्ण हुआ है । यह खड़ी-बोली का चरित महाकाव्य होने का महत्त्व रखता है ।
माण्डपत्र	१९.५ × १२	११	१८	१३	८०	पूर्ण जीर्ण, कीट-दंशित	श्री नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में महाराजा जसवन्त-सिंह के शौर्य का वर्णन किया गया है, साथ ही ३१ दोहों में शृंगारिक वर्णन भी है। ग्रन्था-रम्भ में 'निधानकविकृत साल-होत्र लिख्यते' लिखा गया है, किन्तु अन्त में 'इतिश्री निधान-कविकृत जसवंत विलास' ऐसा लिखा है ।
माण्डपत्र	२१.५ × १०.५	५७	७	२२	२७८	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	इस पत्राकार ग्रन्थ में गोविन्द-पन्त ब्राह्मण और उनकी साध्वी पत्नी रविप्रभा का वर्णन है ।
माण्डपत्र	२२ × १८	९४	१४	२३	९२९	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस प्रशस्ति ग्रन्थ में ग्रन्थकार ने महाराज दिग्विजय सिंह के सम्पूर्ण जीवन-चरित का आद्यो-पान्त वर्णन किया है ।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
१९९	८३७०/४७४७	पृथ्वीराज राइसौ (पृथ्वीराज रासो)	१०९४ ई.	लाल हरी-सिंह कायस्थ	१८१७ ई.	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२००	८२९१/४६६२	शृंग रोहनी (पाण्डव चरित)	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
२०१	८२६२/४६८२	सुदामा चरित्र	–	शंकर प्रसाद	१८७९ ई.	हिन्दी (उर्दू) ब्रज	नागरी

आधार	आकार (से० मी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पृ०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२२.५ × १६	३१७	१९	१६	३०१२	पूर्ण	दतिया	'ग्यारह सै इक्यावना चैत तीज रविवार' के आधार पर ग्रन्थ-काल (सं० ११५१-५७) = १०९४ ई० ज्ञात होता है। इसमें पृथ्वीराज चौहान और संयोगिता के विवाह तक की कथा का वर्णन दोहरा, कवित्त, छप्पय, गाथा आदि छन्दों में किया गया है। कृति में कुल ८९९ छन्द हैं।
माण्डपत्र	१५ × ११.५	६८	११	१४	३२४	अपूर्ण	ब्रजकिशोर शर्मा, भरत-गढ़, दतिया	'तासै चापि विस्न कवि भनै' के आधार पर ज्ञात होता है कि ग्रन्थकार विष्णु कवि हैं। ग्रन्थ में पाण्डवों के अन्तिम समय के पर्वतारोहण की कथा दी गयी है। लिपि सुपाठ्य नहीं है।
माण्डपत्र	१३.५ × ११.५	७४	४	१८	१६७	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में सुदामा की जीवन-चर्या, दारिद्र्य, पत्नी से वार्ता, द्वारकागमन एवं कृष्ण-सुदामा संवाद का वर्णन कवि ने ५४ छन्दों में सजीव शैली में किया है। भाषा में फारसी शब्दावली का पर्याप्त मिश्रण है।

छन्दशास्त्र

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
२०२	८३५२/४७३७	उमराउ पिंगल	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
२०३	७६६०/४५००	गण विचार	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
२०४	७६६०/४४८१	चिन्तामणि पिंगल	१६०४ ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
२०५	७६८५/४४६८	छन्द छप्पयनी	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
२०६	७७००/४३१५	पिंगल	१८०२ ई.	काशीनाथ मिश्र	१८५६ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सें०मी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र० पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२१.५ × १७	५८	२०	१६	६८८	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इसमें कवि ने सर्वप्रथम राजवंश-वर्णन, तत्पश्चात् मात्रिक एवं वर्णिक छन्दों का विवेचन किया है। छन्दों का लक्षण दोहों में एवं उदाहरण यथा-छन्द हैं। ग्रन्थ की लिपि प्राचीन है, आदि भाग नहीं है।
माण्डपत्र	२६ × १६	१६	२०	२०	२००	अपूर्ण कीट-दंशित	,,	पिंगलशास्त्र के इस ग्रन्थ में गणों का विचार करते हुए, उनके अनुसार छन्दों का लक्षण दिया गया है। उदाहरण यथा-छन्द दिये गये हैं।
माण्डपत्र	३३ × २०	५८	१६	२४	६९६	अपूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में कतिपय छन्दों का विवेचन केवल उदाहरणों द्वारा किया गया है। उदाहरणों द्वारा लक्षणों की खोज पाठक पर छोड़ दिया गया है। इसकी रचना कवि ने अपने आश्रय-दाता मकरन्दसिंह के लिए की थी।
माण्डपत्र	२१.५ × १५	२२	२०	१६	४४०	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में ५६ प्रकार के छन्दों का विवेचन लक्षण व उदाहरण के आधार पर किया गया है। इसमें उदाहरणों में मतिराम का नामोल्लेख है। ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	१७.५ × १५	११४	१२	२४	१८२४	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में छन्दशास्त्र का वर्णिक एवं मात्रिक ढंग से वर्णन रीतिशैली में किया गया है। ग्रन्थारम्भ में एक छन्द 'हनुमान बाहुक' का रखा गया है, जो कवि की हनुमद्भक्ति का परिचायक है। ग्रन्थ महत्त्व-पूर्ण है। प्रतिलिपि का कुछ अंश छेदा कवि ने पूरा किया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
२०७	८२३८/४६६८	पिंगल	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
२०८	७८६८/४४३३	पिंगल ग्रन्थ	—	पं० गंगा-दीन	१८३७ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
२०९	८३८१/४७५६	पिंगल मात्रावृत्त प्रबन्ध	—	शंकर पाठक	१८७२ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
२१०	८३८०/४७५६	पिंगल मात्रावृत्त प्रबन्ध	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
२११	७७६८/४३५८	पिंगलशास्त्र	१७५७ ई	—	—	प्राकृत	नागरी
२१२	७८६६/४४०४	वृत्त तरंगिणी	१८१६ ई.	हीरालाल पाठक	१८४३ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२७ × १७	५२	२७	२४	१०५३	अपूर्ण	मुजफ्फरनगर	इसमें विविध मात्रिक एवं वर्णिक छन्दों का विवेचन किया गया है। ग्रन्थ लिपि से आधुनिक प्रतीत होता है।
माण्डपत्र	२३ × १५.५	६६	२४	२०	१११५	पूर्ण कीट-दंशित	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इसमें छन्दशास्त्र का अनूठा वर्णन है। इसमें विविध छन्दों के लक्षण व उदाहरण दिये गये हैं। प्रथम दो उल्लासों में महाराज उमराव सिंह के राज्यस्थान और वृत्ति का वर्णन है।
माण्डपत्र	१६.७ × १५.५	२६	१७	२४	३४५	अपूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में पिंगलशास्त्र का वर्णन है। प्रारम्भ के ४० छन्द इसमें नहीं हैं।
माण्डपत्र	१६.७ × १५.५	७६	१७	२४	९६९	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में छन्दशास्त्र का विस्तृत वर्णन किया गया है। यथास्थान विविध छन्दों के उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं। कुल १२१ छन्द हैं।
प्राचीन माण्डपत्र	२० × १२.५	७८	१२	३२	९३६	अपूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में मात्रिक एवं वर्णिक छन्दों का विवेचन लक्षण व उदाहरण के साथ रीतिशैली में किया गया है। ग्रन्थ अपूर्ण, किन्तु महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	२४.५ × १६	१५०	२३	२२	२३७२	पूर्ण	,,	इसमें विविध छन्दों के लक्षण व उदाहरण दिये गये हैं। छन्दों के लक्षण अधिकांशत: दोहों में हैं। ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।

जैन धर्म

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
२१३	८०६८/४५७१	अज्ञात (हित-शिक्षा)	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी अप्रभ्रंश)	नागरी
२१४	८३०२/४७००	अज्ञात	–	–	–	हिन्दी (अप्रभ्रंश राजस्थानी)	नागरी
२१५	८२७४/४६८८	अज्ञात	–	केहरसिंह	१७३५ ई.	हिन्दी (अप्रभ्रंश)	नागरी
२१६	८१४२/४६१२	अज्ञात	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (से०मी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२५·५ × ११	२	१३	४८	३९	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म की कुछ शिक्षाएँ लिखी गयी हैं। ग्रन्थ का नाम अप्राप्य है। शिक्षा सम्बन्धी होने के कारण हित-शिक्षा शीर्षक दे दिया गया है। ग्रन्थ के मात्र २ पृष्ठ प्राप्य हैं। ग्रन्थ पत्राकार है। कृति में कूटशैली में प्रहेलिकाएँ दी गयी हैं।
माण्डपत्र	२५ × ११	१०	११	४१	१४२	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के आध्यात्मिक तत्त्वों का उल्लेख किया गया है, जिसमें विशेष-कर मोक्ष सम्बन्धी बातों का अधिक वर्णन है। ग्रन्थ पत्राकार एवं अपूर्ण है। ग्रन्थ-शीर्षक अज्ञात है, जिसका कारण—आदि और अन्त में ग्रन्थ के पृष्ठों का प्राप्त न होना है। ग्रन्थ में अन्य किसी भी प्रकार की पुष्पिका इत्यादि का संकेत नहीं है।
माण्डपत्र	३८ × १२	२	४०	२२	५५	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में एक पद में गंगा-स्तुति के पश्चात् युद्ध का वर्णन किया गया है। ग्रन्थ वीर रस प्रधान है। ग्रन्थ पत्राकार है। साथ-ही-साथ ग्रन्थ की लिपि प्राचीन है।
माण्डपत्र	२९·२ × १२·५	७	१२	३२	८४	अपूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में विविध इन्द्रियों का विभिन्न पुरियों के रूप में वर्णन है। यथा आँख की नेत्र-पुरी, कान की कर्णपुरी, हाथ की हस्तपुरी इत्यादि। ग्रन्थ पत्राकार एवं अपूर्ण है। ग्रन्थ का शीर्षक अप्राप्य है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
२१७	८०१७/४५१५	अठ्ठारह ढाल	१६६८ ई.	–	–	हिन्दी	नागरी
२१८	८८६६/५१६५	अष्टपदी गीतम्	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२१९	८०६०/४५६३	अतीचार	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२२०	८०८६/४५५६	अतीचार श्रावक	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२२१	८१७४/४६३०	आत्मापरिस्वाध्याय	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२१ × १६	११	२३	२२	१७४	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	इस ग्रन्थ में जैन धर्म के स्तवन की प्रधानता है।
माण्डपत्र	११.५ × ११	२	१०	१६	१०	पूर्ण	अज्ञात	ग्रन्थ में मात्र ८ पद हैं।
माण्डपत्र	२० × ११	२३	१०	२५	१८०	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के अतीचारों, ज्ञानाचार, दर्शनाचार, तपाचार, वीर्याचार, पंचविध अतीचार एवं गोत्र-देवता, ग्रहपूजा संन्यासी, योगी दरवेश आदि का वर्णन, तत्पश्चात् १२ व्रतों का उल्लेख, इसके साथ ही संवत्सरी होली, पूर्णिमा, नागपंचमी, एकादशी, धनतेरस, अनन्त चतुर्दशी इत्यादि हिन्दू पर्वों का उल्लेख है। ग्रन्थ पत्राकार एवं अपूर्ण है।
माण्डपत्र	२४ × १०.५	१६	१५	३८	२८५	पूर्ण	"	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म की महत्त्वपूर्ण आचार सम्बन्धी बातों का सन्निवेश है। यथा ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार इत्यादि के साथ ही शिक्षापरक वादों का भी उल्लेख है—मृषवाद, मैथुन, परिग्रह, काम, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग-द्वेष, आदि का भी विवरण दिया गया है। ग्रन्थ पत्राकार एवं लिपि से प्राचीन प्रतीत होता है।
माण्डपत्र	१५.५ × ११.५	४	६	२२	२५	पूर्ण	"	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्मानुसार आत्मा विषयक तत्त्व पर विचार किया गया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
२२२	८१५०/४६२०	उपदेशमाला प्रकरण	–	–	–	हिन्दी (प्राकृत राजस्थानी)	नागरी
२२३	८०२०/४५१५	एकीभावभाषा	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
२२४	८०१८/४५१५	कर्मकाण्डभाषा	–	–	–	हिन्दी	नागरी
२२५	८१०७/४५८०	कल्पवसानबोध	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२२६	८१४४/४६१४	कल्पसूत्र	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२२७	८०२१/४५१५	कल्याणमन्दिरभाषा	–	कुमुदचन्द्र	–	हिन्दी	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
६	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२५ × १२.५	२३	२२	६४	१०१२	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म सम्बन्धी शिक्षाएँ निहित हैं। ग्रन्थ मूलरूप से प्राकृत की गाथाओं में रचित है। उनकी राजस्थानी हिन्दी भाषा में बालबोधिनी टीका अत्यधिक लघु अक्षरों में की गयी है। लिपि से ग्रन्थ प्राचीन प्रतीत होता है। ग्रन्थ पत्राकार है।
माण्डपत्र	२१ × १६	५	२६	२०	८१	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ का विषय भक्ति और अध्यात्म है। इसमें जैन गुरु वादिराज का स्तवन किया गया है।
आधुनिक माण्डपत्र	२१ × १६	११	२४	२०	१६५	पूर्ण	,,	इसमें ज्ञान और कर्मादि का विवेचन किया गया है।
माण्डपत्र	२५.५ × ११	६७	११	३२	७३७	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जिनेश्वर की वन्दना के पश्चात् विविध कल्पों का, फिर विविध उत्कृष्ट देवांशों का, तत्पश्चात् जैन धर्मावलम्बी विविध बातों का उल्लेख किया गया है। ग्रन्थ पत्राकार है। लिपि से प्राचीन प्रतीत होता है।
माण्डपत्र	२६ × १०·५	२४६	१३	३७	३६६७	अपूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के आध्यात्मिक सूत्रों का प्रतिपादन किया गया है। साथ ही विविध नगरियों का भी उल्लेख किया गया है। ग्रन्थ पत्राकार है, जिसके आरम्भिक पृष्ठ अप्राप्य हैं।
आधुनिक माण्डपत्र	२१ × १६	४	२४	२४	७२	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	यह जैन धर्म विषयक ग्रन्थ है, जिसमें जिन-स्तुति आदि की महिमा का वर्णन हुआ है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
२२८	८९०१/४५७४	कामधेनु वाडरवाइ	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२२९	८१७२/४६२९	काय स्थिति	—	कीर्तिगणि	१४८२ ई.	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२३०	८३१४/४९११	कुशीलरासंख्यात-गुणानिपंगरो थोकडो	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२३१	८३००/४६९८	गुरु परम्परा पदावली ढाल वंधमास	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (से०मी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२५ × १२	१०	१७	५४	२८७	पूर्ण	श्री सूरजराज, धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के गुरुओं की वन्दना के साथ ही वशीकरण मन्त्र आदि का विस्तृत विवेचन किया गया है। बीच-बीच में इस बात का स्पष्ट संकेत किया गया हैं कि किन ओषधियों के सेवन से स्त्री आदि वश में हो जाती हैं।
माण्डपत्र	२६ × ११	३	२२	४६	९८	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में अपभ्रंश की गाथाएँ लिखने के पश्चात् हिन्दी (राजस्थानी भाषा) में ग्रन्थ की व्याख्या की गयी है। ग्रन्थ में शरीर के बारे में विश्लेषण हुआ है। ग्रन्थारम्भ का पृष्ठ अप्राप्य है एवं तिथि से कृति प्राचीन प्रतीत होती है।
माण्डपत्र	२६.३ × १४	१०	१५	३०	१४०	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म की आध्यात्मिक बातों का निरूपण किया गया है। ग्रन्थ में जैन धर्म के विविध द्वारों का वर्णन है। ये द्वार हैं— प्रथमद्वार, वेदद्वार, चरित्रद्वार, शरीर-द्वार, कालद्वार इत्यादि।
माण्डपत्र	२५.५ × १२.५	२८	१३	४५	५१२	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन गुरुओं की वन्दना ढालों एवं कलशों में की गयी है। परम्परागत बातों के विवेचन के साथ-ही-साथ जैन धर्म के शिक्षाप्रद उपदेश निहित हैं। ग्रन्थ पत्राकार है। लिपि से ग्रन्थ प्राचीन प्रतीत होता है। कई पृष्ठों के परस्पर सम्पृक्त हो जाने से वर्ण्य-विषय स्पष्टतया नहीं ज्ञात होता है।

क्रम स०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
२३२	८१६३/४६२३	गुरु पूजा	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२३३	८०१३/४५१५	गुरु वर्णन	–	–	–	हिन्दी	नागरी
२३४	८१५१/४६२१	गोडीजीस्तवन	–	–	–	हिन्दी	नागरी
२३५	८०५२/४५३६	गौतमपृच्छा बालाबलो	–	शिवसुन्दर राम	१५३१ ई.	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२३६	८१३८/४६०९	चतुर्मासी व्याख्यान (पर्वण)	–	व्यलाक हींसु	१८८८ ई.	हिन्दी (प्राकृत राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१७.५ × १६.५	२०	११	१९	३१९	पूर्ण	मुजफ्फरनगर	प्रस्तुत ग्रन्थ में गुरु-पूजा की विधि लिखी गयी है। ग्रन्थ की लिपि आधुनिक है।
आधुनिक माण्डपत्र	२१ × १६	२१	२४	२०	३१५	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	इसमें गुरुओं का स्तवन किया गया है। इसकी भाषा अपभ्रंश-मिश्रित हिन्दी है।
माण्डपत्र	१५.५ × १०	६	८	१६	२४	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म से सम्बन्धित गोडी जी का स्तवन किया गया है।
माण्डपत्र	२७.५ × ११.५	९३	१५	६१	२६५९	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के अध्यात्मतत्त्व का विश्लेषण किया गया है, जिसमें ४८ प्रश्नों का भी उल्लेख किया गया है। कृति कवित्तों में है। ग्रन्थ पत्राकार है। लिपिकाल अति प्राचीन होने के कारण ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	२५ × ११	४१	१५	४०	७६८	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में चतुर्मासिक पर्वण की व्याख्या की गयी है। मूल ग्रन्थ प्राकृत के गाथाओं में रचित है। तत्पश्चात् हिन्दी राजस्थानी भाषा में उसकी व्याख्या की गयी है। यह चतुर्मासा आषाढ़ मास से प्रारम्भ है, जिनमें चतुर्मासा के कृत्यों का यथा—आनन्द, परमानन्द, परमेष्ठी, तत्पश्चात् प्रथम, द्वितीय इत्यादि त्रिसंख्यावादी सामायक का उल्लेख है। कृति में स्थान-स्थान पर दृष्टान्तों का आश्रय कथा के रूप में किया गया है। पत्राकार रूप में कृति सुस्पष्ट लेखों में रचित है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
२३७	८०८०/४५५१	चतुर्विंशति जिन स्तवनम्	—	—	—	हिन्दी (अपभ्रंश राजस्थानी)	नागरी
२३८	८१८५/४६३१	चिन्तानिर्गुणम्	—	—	१५६२ ई.	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२३९	८०१६/४५१५	चेतन कर्म चरित्र भाषा	१६७३ ई.	ऋषि विजय वदेन	—	हिन्दी (ब्रज-पद्य)	नागरी
२४०	८०८२/४५५७	चौढालियाँ	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२४१	८१७८/४६३०	चौदह (चवैद) गुण स्वानक स्तवन	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२४२	८०६६/४५७२	चौंतीस अतिशयना नाम	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
ाण्डपत्र	२७ × १२	५८	१४	३२	८१२	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकरों या गुरुओं की स्तुति की गयी है। कृति का आदि भाग ४६ पृष्ठों तक अप्राप्य है। ग्रन्थ पत्राकार एवं अपूर्ण है। ग्रन्थ की लिपि प्राचीन है।
माण्डपत्र	१४.५ × १२	७	१०	१६	३५	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्मानुसार निर्वाण का विवेचन किया गया है। कीट-दंशित होने के कारण यत्र-तत्र अपाठ्य है। लिपि की प्राचीनता देखते हुए ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	२१ × १६	२६	२१	२०	३६६	पूर्ण	,,	इसमें चेतना कर्म आदि के सम्बन्ध में कवि ने आध्यात्मिक तत्त्वों का निरूपण किया है।
माण्डपत्र	२३ × ११	९	९	३२	८१	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में परिग्रह को बतलाते हुए ग्रन्थकार ने धन की अति निन्दा के साथ-ही-साथ धन-भोग-विलास इत्यादि की लिप्साओं को निरतिसार बताया है। ग्रन्थ पत्राकार एवं पूर्ण है। लिपि से ग्रन्थ आधुनिकतम ज्ञात होता है। ग्रन्थ दूहों एवं ढालों में रचित है।
ाण्डपत्र	१५.५ × ११.५	८	९	२१	४७	पूर्ण	,,	प्रस्तुत कृति में जैन धर्मानुसार शरीर के प्राकृति, मोह आदि चतुर्दश गुणों की चर्चा है।
ाण्डपत्र	२५.५ × ११	२	१२	४०	३०	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में ३४ अतिशय नामों के उल्लेख के पश्चात् वाणी के ३५ गुणों का उल्लेख किया गया है। ग्रन्थ का मात्र एक ही पृष्ठ प्राप्य है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
२४३	८९०४/५१६५	चौबीस जिन स्तवनम्	–	–	–	हिन्दी (अपभ्रंश राजस्थानी)	नागरी
२४४	८९१४/५१६५	चौबीस जिन स्तवन	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२४५	८९९९/५१६५	चौबीस जिनेश्वर जी स्तवन	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२४६	८०९५/४५६८	चौबीस खण्डक	–	–	१७९९ ई.	हिन्दी (प्राकृत)	नागरी
२४७	८३१५/४७१२	चौमासीदेव वन्दन	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	११.५ × ११	४५	१४	१७	३३५	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के २४ गुरुओं का नाम एवं उनका स्तवन किया गया है। यह स्तवन राजस्थानी भाषा के अपभ्रंश में मिलता है। कृति कई व्यक्तियों द्वारा लिखी या अनेक लेखनियों से लिखित ज्ञात होती है। लिपि प्राचीन प्रतीत होती है। कृति में अनेक छन्दों का प्रयोग हुआ है।
माण्डपत्र	११.५ × ११	८	१०	१६	४०	अपूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में २४ जिनों का स्तवन किया गया है।
माण्डपत्र	११.५ × ११	४३	१०	१६	२१५	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के २४ तीर्थंकरों का या जैन गुरुओं का स्तवन विविध रागों एवं छन्दों में किया गया है।
माण्डपत्र	१६.५ × ११	१४	२४	६५	६८२	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के २४ दण्डक लिखे गये हैं, जिनमें यम, संयम, आहार, मात्सर्य, आदि का उल्लेख है। ग्रन्थ के द्वार गाहा प्राकृत में लिखे हुए हैं। ग्रन्थ पत्राकार है। कृति का आदि पृष्ठ निकल चुका है।
माण्डपत्र	२६.३ × १२	२०	१२	३२	२४०	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के गुरुओं एवं तीर्थंकरों के साथ-ही-साथ जैन धर्म के देवों, ऋषियों की वन्दना और चैत्य-वन्दना भी की गयी है। ग्रन्थ पत्राकार एवं अपूर्ण है। ग्रन्थ की लिपि आधुनिक एवं सुस्पष्ट ज्ञात होती है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
२४८	८०७१/४५४६	चौरासी अक्षादन	—	जवार	१८५१ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
२४९	८१८०/४६३०	चौरासी आक्षातना स्तवन	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२५०	८६०१/५१६५	(जिनपद)	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२५१	८१४६/४६१६	जीव विचार	—	—	१८१७ ई.	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२५२	८२३१/४६६२	जीव काया	—	—	१६३८ ई.	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२५३	८१८६/४६३१	जीव विचार प्रकरण	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१७ × १२.५	५	१४	१९	४२	पूर्ण	कोटा, राजस्थान	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्मावलम्बी चौबीस जिन गुरुओं की वन्दना के पश्चात् दोहों, चौपाई छन्द में जिनों के आहार-विहार एवं कार्यों आदि का उल्लेख किया गया है।
माण्डपत्र	१५.५ × ११.५	४	१०	२३	२७	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के स्तवन हैं। साथ ही, इसमें जैन धर्मानुसार दुर्वृत्तियों तथा स्त्री-भोगादि का वर्जन किया गया है। इसके साथ-ही-साथ दुर्व्यसनों के दुष्परिणाम का सुन्दर वर्णन किया गया है।
माण्डपत्र	११.५ × ११	८	१२	१७	५१	अपूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में अनेक जिनपद संगृहीत हैं। ग्रन्थ में ज्ञानी और ज्ञान विषयक बातें लिखी गयी हैं।
माण्डपत्र	२६ × १३	१६	११	२०	११०	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जीवों के भेद-प्रभेद के बारे में विस्तृत विवेचन है। इस पत्राकार ग्रन्थ का आदि पृष्ठ अप्राप्य है।
माण्डपत्र	२३ × १३	१२	१६	३२	१९२	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म सम्बन्धी आध्यात्मिक चर्चाएँ निहित हैं। इसमें आत्मा, शरीर, ईश्वर आदि का वर्णन किया गया है। ग्रन्थ पत्राकार व महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	१४.५ × १२	४६	१२	२२	७९४	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के आध्यात्मिक तत्त्वों का विवेचन किया गया है। जीर्ण-शीर्ण कृति की लिपि प्राचीन प्रतीत होती है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
२५४	८२४३/४६७१	जूसण सिझाय	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२५५	८१५८/४६२३	जैन के कवित्त	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२५६	८२६४/४६८३	जैन शतक	१७३४ ई.	भगुअन दास	१८७० ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
२५७	८०८६/४५६२	तपः कल्प	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी गद्य)	नागरी
२५८	८२४६/४६७४	त्वर मुरोनेच्यत्व-मुये थोवड़ो	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२५६	८१६१/४६२३	दस क्षनिक पूजा	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२६०	८१७१/४६२६	दसण सुद्धि पद्यासं	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (से०मी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
६	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१७.५×१३.५	५	११	१६	२७	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म की शिक्षाएँ निहित हैं। ग्रन्थ की लिपि अत्याधुनिक प्रतीत होती है।
माण्डपत्र	१७.५×१६.५	३	६	१८	१५	अपूर्ण	मुजफ्फरनगर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के आदि गुरु जिनदेव के बारे में कुछ कवित्त लिखे हैं। ग्रन्थ अत्याधुनिक प्रतीत होता है।
माण्डपत्र	१७×११.५	८८	१२	१३	४२६	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में १०८ छन्द हैं, जिनमें सवैया आदि छन्दों में जैन धर्म सम्बन्धी चर्चाएँ निहित हैं।
माण्डपत्र	२४.५×११	५	७	३५	३७	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में तप के फल का उल्लेख किया गया है, जिसमें विविध रोगों का उपचार विविध मन्त्रों के पाठ के माध्यम से बतलाया गया है।
माण्डपत्र	२६.५×११.३	२	११	२८	१३	पूर्ण	श्री शिवदत नागर, बूँदी	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म सम्बन्धी चर्चाएँ हैं।
माण्डपत्र	१७.५×१६.५	१५	१२	१५	८५	पूर्ण	मुजफ्फरनगर	प्रस्तुत ग्रन्थ में दस क्षनिक की पूजा लिखी गयी है, जिसमें इन्द्रियनिग्रह, मन-वशीकरण इत्यादि का उल्लेख दोहों एवं सोरठों में किया गया है।
माण्डपत्र	२६×११	६	२२	२२	८६	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में इन्द्रियनिग्रह इत्यादि के बारे में विवेचन किया गया है। ग्रन्थ पत्राकार एवं पूर्ण है। ग्रन्थ की लिपि अति प्राचीन प्रतीत होती है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विप्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
२६१	८०६३/४५६६	(दानविषयक)श्लोक	—	कल्याण सुन्दर	—	हिन्दी (अपभ्रंश राजस्थानी)	नागरी
२६२	८२६६/४६६७	(धर्मोपदेश)	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२६३	८१५७/४६२३	नन्दीश्वर पूजा	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२६४	८१०८/४५८१	नवतत्व	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२६५	८०६१/४५६४	नवतत्व	—	विनायक सुन्दर	१८२५ ई.	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२६६	८१८१/४६३०	नवतत्व प्रकरण	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२४ × १०	२	१२	३२	२४	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में एक श्लोक अपभ्रंश भाषा में लिखा हुआ है, जिसकी व्याख्या राजस्थानी हिन्दी भाषा में की गयी है। श्लोक में दान विषयक बातें लिखी गयी हैं। ग्रन्थ मात्र दो पृष्ठ का है।
माण्डपत्र	१६.५ × १०	२	८	३६	१८	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के कुछ उपदेश लिखे हुए हैं। ग्रन्थ के मात्र दो पृष्ठ प्राप्य हैं। ग्रन्थ लिपि से प्राचीन ज्ञात होता है। साथ-ही-साथ ग्रन्थ विकृत भी है।
माण्डपत्र	१७.५ × १६.५	७	१२	१२	५४	पूर्ण	मुजफ्फरनगर	प्रस्तुत ग्रन्थ में नन्दीश्वर की पूजा लिखी गयी है। ग्रन्थ की लिपि अत्याधुनिक है।
माण्डपत्र	२५.७ × १२.५	१४	११	३२	१५४	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के अध्यात्म विषयक नौ तत्त्वों का यथा – जीव, अजीव, पुण्य, पाप आदि के भेद-प्रभेद दिखलाये गये हैं। ग्रन्थ कोष्ठकों में विषयानुक्रम से लिखा गया है।
माण्डपत्र	२५.२ × ११.८	११	१३	३२	१४३	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जीव, आजीव, पुण्य, पाप, संवर निर्झर, आश्रय, बन्धन, मोक्ष इत्यादि नौ तत्त्वों और उनके भेदों-प्रभेदों का विस्तार से निरूपण संख्या सहित किया गया है।
माण्डपत्र	१५.५ × ११.५	१०	१०	१८	–	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म से सम्बन्धित नौ तत्त्वों का वर्णन है। साथ-ही-साथ कृति में इन्द्रियों के नाम व उनके वर्णन हैं।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
२६७	८६१२/५१	नवतत्व रानाम	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२६८	८१६८/४६२८	नेमिनाथ रास	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२६९	८०८३/४५५८	निर्वाण काण्ड	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२७०	८१४१/४६१२	पंच कल्याण करो स्तवन	–	हुकुमचन्द्र	१८३८ ई.	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२७१	८२४७/४६७४	पठमरो थोवड़ो	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२७२	८९०८/५१६५	पद	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२७३	८१५६/४६२२	पद संग्रह	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	११.५ × ११	३१	१०	१६	१५५	अपूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में नौ तत्त्वों के नाम यथा-जीव, अजीव, पुण्य, पाप इत्यादि एवं उनके भेदों-प्रभेदों की चर्चा की गयी है।
माण्डपत्र	२० × १६	८२	१५	२४	९२३	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में सरस्वती-वन्दना के पश्चात् अवन्तीनरेश अरि-मर्दन और उनकी पत्नी गुणा-वली के कथानक का उल्लेख प्रेमाख्यानक काव्य के रूप में हुआ है।
माण्डपत्र	१७.५ × १६	६	१०	२०	३९	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के नेमिनाथ स्वामी का वर्णन गिरिनार नामक स्थल के साथ हुआ है। कृति में निर्वाण सम्बन्धी बातें निहित हैं।
माण्डपत्र	२६.२ × १२ ५	१०	१२	२१	७९	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में जम्बूद्वीप के दक्षिण भारत के निवासी देवानन्द ब्राह्मण की कथा का वर्णन एवं जिनदेव का स्तवन किया गया है। ग्रन्थ पत्राकार है।
माण्डपत्र	२६.५ × ११.३	२	११	२८	१३	पूर्ण	श्री शिवदत्त-नागर, (राजस्थान)	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म सम्बन्धी बातों का आकलन किया गया है।
माण्डपत्र	११.५ × ११	५	१०	१६	२५	पूर्ण	अज्ञात	प्रस्तुत ग्रन्थ में दो पदों का संकलन है। किन्तु एक-एक पद के अन्तर्गत कई रागों में एका-धिक छन्द संकलित हैं।
माण्डपत्र	१०·५ × ८	७५	७	११	१७१	अपूर्ण जीर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के पदों का संग्रह किया गया है। ये पद विशेषतया अध्यात्म विषयक हैं। कृति की लिपि अति प्राचीन है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
२७४	८१५५/४६२२	पद संग्रह	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२७५	८१५४/४६२२	पद्म	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२७६	८१५२/४६२१	पद्म (स्तवन)	–	–	–	हिन्दी	नागरी
२७७	८१००/४५७३	पाँच चरित्राणि	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२७८	८६१३/५१६५	पार्श्वनाथजिनस्तवनम्	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२७९	८६११/५१६५	पार्श्वनाथजिनस्तवन	–	–	–	हिन्दी (अपभ्रंश)	नागरी
२८०	८१६२/४६२३	पूजा	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	९.५ × ८	४५	१०	१६	२२५	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में बहुत से पदों का संग्रह किया गया है, जो जैन धर्म से सम्बन्धित हैं। ग्रन्थ की लिपि प्राचीन ज्ञात होती है।
माण्डपत्र	१० × ७.५	७५	८	१२	१६९	अपूर्ण	,,	दोहों एवं ढालों में रचित इस ग्रन्थ में जैन धर्म के बहुत से पदों का संग्रह है। ग्रन्थ खण्डित अवस्था में है।
माण्डपत्र	१५.५ × १०	४	१०	१६	२०	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के कुछ स्तवन पद के रूप में प्राप्त हैं। यह स्तवन जिनदेव के हैं।
माण्डपत्र	२४.५ × ११	४	१८	५४	१२३	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत पत्राकार ग्रन्थ में पञ्च-चरित्रों का यथा—समायक, बीजुछेद, बीजपरिहार, सूक्ष्म-संपराय, मुयंथाखात इत्यादि का वर्णन है। तत्पश्चात् १४ गुणों एवं लोकस्वरूपों के साथ सप्तद्वीपों का वर्णन किया गया है।
माण्डपत्र	११.५ × ११	५	१०	१६	२५	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन गुरु पार्श्व-नाथ जिन का स्तवन किया गया है।
माण्डपत्र	११.५ × ११	६	१४	१३	३४	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन गुरु श्री पार्श्वनाथ जी का स्तवन संकलित है। यह स्तवन एक बार समाप्त होने पर पुष्पिका देने के पश्चात् पुन: प्रारम्भ होता है। ग्रन्थ की लिपि प्राचीन है।
माण्डपत्र	१७.५ × १६.५	९	११	१९	५६	पूर्ण	मुजफ्फरनगर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के कर्म-काण्ड एवं पूजा-विधि सम्बन्धी बातें उल्लिखित हैं। ग्रन्थ की लिपि अत्याधुनिक प्रतीत होती है।

क्रम सं०	ग्रन्थसं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का माम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
२८१	८०६४/४५६७	बत्तीसदोष स्वाध्याय	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२८२	८१४५/४६१५	ब्रह्मव्रतो परिशीलनी कथा (सूक्तावली)	–	–	–	हिन्दी (अपभ्रंश राजस्थानी)	नागरी
२८३	८१०६/४५७६	बन्धन तत्वभेद	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२८४	८१६०/४६२३	बीस तीर्थङ्कर पूजा	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२८५	८०१६/४५१५	भक्ताभर भाषा	–	–	–	हिन्दी (व्रज)	नागरी
२८६	८१६६/४६२६	भवस्थिति	–	अनन्त-कीर्ति गण	१४८२ ई.	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र० पृ०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	१०	१२	१३	१४	१५	१६	१७
ाण्डपत्र	२५ × ११	२	२०	६७	८४	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत पत्राकार ग्रन्थ में जैन धर्म सम्बन्धी चर्चा निहित है। ग्रन्थ में जैन धर्म के गुरु जिनदेव के वर्णन के साथ-ही-साथ मनुष्य के दोषों का निरूपण किया गया है।
माण्डपत्र	२५ × ११.३	४	१३	३२	५२	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत कृति में चार पृष्ठ हैं, जिनमें दो पृष्ठों की लिपि भिन्न है। एक पृष्ठ में जिनदेव का वर्णन है, अपर में भी जैन धर्म सम्बन्धी चर्चा है। परन्तु रामकथा का भी दृष्टान्त है। ग्रन्थ के हाशिये पर पुस्तक का नाम "सूक्तावली" लिखा हुआ है।
माण्डपत्र	२४.५ × ११	८	१५	३८	१४२	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म सम्बन्धी बातों का उल्लेख हुआ है, जिसमें विविध बन्धनों एवं उनके भेदों, तीर्थङ्करों का विस्तृत रूप से विवेचन है। साथ-ही-साथ ८५ विविध आर्य देशों का भी वर्णन एवं उनके नाम हैं।
माण्डपत्र	१७.५ × १६.५	६	१२	१८	३४	पूर्ण	मुजफ्फरनगर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के बीस तीर्थङ्करों की पूजा लिखी गयी है। किन्तु इसकी लिपि अत्याधुनिक प्रतीत होती है।
आधुनिक माण्डपत्र	२१ × १६	६	२४	२४	१०८	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	जैन धर्म विषयक इस ग्रन्थ में भक्ति-तत्त्व की महत्ता का प्रतिपादन हुआ है और कवि ने यह ग्रन्थ हेमराज के निमित्त लिखा था।
माण्डपत्र	२६ × ११	२	१८	४६	५२	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में सांसारिक स्थिति का विवेचन जैन धर्मान्तर्गत हुआ है। ग्रन्थ पत्राकार एवं लिपि से अति प्राचीन है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
२८७	८०२२/४५१५	भूपाल चौबीसी	—	हरिवाच आनन्द	—	हिन्दी	नागरी
२८८	८६०६/५१६५	महावीर स्तवन	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२८६	८०६२/४५६५	मांडलाविधि	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२६०	८०७६/४५५४	मुक्ति जाणकी डीगरी	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२६१	८२३६/४६६६	मौन एकादशी देव वंदन विधि	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२६२	८१०२/४५७५	रात्री भोजन चौपई	—	—	—	हिन्दी (अपभ्रंश राजस्थानी)	नागरी
२६३	८०७८/४५५३	रिषभदेव धवलबंध	—	—	—	हिन्दी (अपभ्रंश राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
आधुनिक माण्डपत्र	२१ × १६	३	२४	२०	४५	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	इस ग्रन्थ में भूपालनरेश का जीवन-चरित्र वर्णित है।
माण्डपत्र	११.५ × ११	२	१०	१६	१०	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थङ्कर का स्तवन किया गया है।
माण्डपत्र	२४.७ × १०	२	८	३२	१६	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	२ पृष्ठों के पत्राकार इस ग्रन्थ में जैन धर्म के अध्यात्म सम्बन्धी २४ माण्डलाविधियों का उल्लेख है।
माण्डपत्र	१७.५ × १३.५	८	९	२३	५२	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में तीर्थ, दया, साधु-सन्तों की संगति, आर्यों एवं श्रावकों का विवरण दिया गया है।
माण्डपत्र	२५.५ × १३.५	६	१५	३०	२४	अपूर्ण	अज्ञात	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म सम्बन्धी देव एकादशी व्रत का विधान लिखित है।
माण्डपत्र	२५ × ९	२५	९	४०	२८१	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के अध्यात्म विषयक बातों का निरूपण किया गया है। ग्रन्थ में बहुत-सी नदियों—गोमती, नर्मदा, सिन्धु आदि के उल्लेख के साथ-ही-साथ भुवन भास्कर भगवान् सूर्य आदि का वर्णन, उसके पश्चात् जैन धर्मावलम्बी गुरुओं की स्तुति की गयी है।
माण्डपत्र	२४.५ × १०.५	२८	११	३२	३०८	पूर्ण	,,	कीट-दंशित इस ग्रन्थ में जैन धर्म के प्रसिद्ध तीर्थङ्कर ऋषभ-देव की जीवनचर्या स्तवन शैली में वर्णित है। यह ग्रन्थ प्राचीन मालूम पड़ता है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
२६४	८१४०/४६११	रीषि मंडल	–	रामविजय	१८४३ ई.	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२६५	८१४३/४६१३	लघु संग्रहणी मंत्र	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२६६	८०८५/४५५८	विषैपहार	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२६७	८०१५/४५१५	शान्ति	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२६८	८२००/४६३८	शिक्षाय	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
२६६	८२०१/४६३८	श्रावकरी करणी	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२७ × १२.८	१९५	१५	४२	३८३६	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के विविध गुरुओं से सम्बन्धित चर्चा की गयी है। इसके साथ अन्य विशिष्ट पुरुषों के सम्बन्ध में भी कुछ आख्यान हैं।
माण्डपत्र	२७.५ × १३	८	१३	२२	७१	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में विविध द्वारों, द्वीपों एवं खण्डों का वर्णन उनके परिमाण के द्वारा किया गया है।
माण्डपत्र	१७.५ × १६	६	१०	२०	३९	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जिनदेव की वन्दना के साथ-ही-साथ भगवान् शंकर की वन्दना एवं उनके द्वारा विषपान का अलौकिक वर्णन विविध दृष्टान्तों के माध्यम से कवि ने किया है।
माण्डपत्र	२१ × १६	५८	१७	२०	६१६	अपूर्ण	,,	जैन धर्म विषयक इस ग्रन्थ में नरकादि की विस्तृत विवेचना की गयी है। ग्रन्थ की भाषा अपभ्रंश मिश्रित हिन्दी है।
माण्डपत्र	१२ × ११	१४	९	१०	४०	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में 'समय सुन्दर कहे' के आधार पर यह ज्ञात होता है कि ग्रन्थकार समय-सुन्दर जी हैं। ग्रन्थ में जैन धर्म के गुरु जिनस्वामी का वर्णन हुआ है। इस शिक्षाय के अन्तर्गत कई शिक्षाएँ हैं, यथा, आरण्यक आदि।
अधुनिक माण्डपत्र	१२ × ११	९	९	१२	५३	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म से सम्बन्धित चर्चाएँ की गयी हैं। भोजन सामग्री—दूध, दही, घी, तक्र, तेल इत्यादि का भी उल्लेख है। उसमें मिथ्या भाषण का निषेध किया गया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
३००	८०८१/४५५६	श्रावकरी करणी	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी गद्य)	नागरी
३०१	८३१८/४७१४	श्रीपाल चरित्र	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
३०२	८१७६/४६३०	श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन	–	–	१८३३ ई.	हिन्दी	नागरी
३०३	८०८४/४५५८	श्रीपाल दरसन	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
३०४	८२०२/४६३८	श्री वर्द्धमान जी नी पारणों	–	–	–	हिन्दी (अप्रभ्रंश)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२६ × १२	२२	१०	२२	१५६	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के साथ महावीर स्वामी के वाणी का विश्लेषण किया गया है। इसमें जैन धर्मानुसार कर्म, धर्म, गुरु एवं आत्मा के बारे में बतलाया गया है। मृषा, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, रागद्वेष, कलह, अभ्याखान इत्यादि १८ पापों के साथ ही ज्ञान सम्बन्धी बातें उल्लिखित हैं।
माण्डपत्र	३२.८ × १३	१४०	९	४३	१६६३ ई.	अपूर्ण	—	प्रस्तुत पत्राकार ग्रन्थ में जैनी आख्यानकाव्य मिलता है। ग्रन्थ की नायिका मयण है।
माण्डपत्र	१५.५ × ११.५	९	९	२३	५८	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में पृथ्वी, अग्नि, जल, वनस्पति, जगत्, स्थावर आदि के साथ-ही-साथ जैन धर्म के गुरु पार्श्वनाथ जी का स्तवन हुआ है।
माण्डपत्र	१५.७ × ११.६	५	१०	२०	३३	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में श्रीप्राल जी दर्शन-उल्लेख के पश्चात् जैन धर्म के गुरुओं की वन्दना की गयी है। ग्रन्थ की लिपि अत्याधुनिक है। कृति में सम्यक् दृष्टि का भी विवेचन कृतिकार ने किया है।
माण्डपत्र	१२ × ११	१३	९	१०	३७	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ का शीर्षक 'श्री अरिहन्त अनन्तगुण' ग्रन्थारम्भ में दिया गया है। जिसमें ३० ढालें हैं। ग्रन्थान्त में लिपिकार ने पुष्पिका में 'इति श्री वर्द्धमान जी पारणों सम्पूर्ण' लिखा है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
३०५	८६०३/५१६५	श्री ऋषभदेव फूल चड़र व्याख्याने	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
३०६	८८६७/५१६५	श्री स्तवन	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
३०७	८१०४/४५७७	षडसीतिक चतुर्थी कर्म	–	–	–	हिन्दी (अपभ्रंश राजस्थानी)	नागरी
३०८	८०६७/४५७८	षदंक का चौढ़ालियो	–	जयराम	–	हिन्दी (अपभ्रंश)	नागरी
३०९	८६०६/५१६५	सतरभेद पूजा विधि	–	थान सिंह	१८४६ ई.	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
३१०	८१८८/४६३३	सप्रदेशी अप्रदेशी रो थोवड़ो	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पृ०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	११·५ × ११	३३	१०	१६	१६५	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन गुरु ऋषभदेव के फूल चढ़ाने का व्याख्यान है, जिसमें विविध फूलों एवं फलों के साथ ओषधियों के नाम भी ग्रन्थ में उल्लिखित हैं।
माण्डपत्र	११·५ × ११	२	६	१६	६	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन गुरु श्री जिन का स्तवन किया गया है।
माण्डपत्र	२७ × १२·७	१३	११	३०	१३४	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्मावलम्बियों के व्यावहारिक आचारों का प्रतिपादन किया गया है। ग्रन्थ में जैन गुरुओं की स्तुति भी की गयी है। इसके साथ-ही-साथ जीव, कर्म, मार्ग इत्यादि का विस्तृत विवेचन अपभ्रंश के ८९ गाथा छन्दों में है। ग्रन्थ पत्राकार है।
माण्डपत्र	२५ × ११	६	१९	२८	१००	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म का वर्णन है। कृति में कुल मिलाकर चार ढाले हैं। इन ढालों में गुरुओं की महिमा उल्लिखित है।
माण्डपत्र	११.५ × ११	३१	१०	१६	१५५	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में पूजा-विधि एवं उनके भेदों का विवरण दिया गया है। ग्रन्थ विविध रागों में लिखा गया है। ग्रन्थ की समाप्ति पर अगले दो पृष्ठों पर क्रमशः स्नान, विलेपन आदि का वर्णन है।
माण्डपत्र	२५ × १२	७	१०	२७	५९	पूर्ण	श्री शिवदत्त नागर, बूँदी (राजस्थान)	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म सम्बन्धी चर्चाएँ निहित है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
३११	८१३७/४६०८	सम्बोध सत्तरि	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी अपभ्रंश)	नागरी
३१२	८०८८/४५६१	सम्बोध सत्तरि	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
३१३	८०८७/४५६०	सम्बोध सत्तरी	–	समय सुन्दर	१८७८ ई.	हिन्दी (राजस्थानी अपभ्रंश)	नागरी
३१४	८१७०/४६२९	सम्यक् सत्तरी	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	–
३१५	८१६७/४६२७	परीक्षा की वचनिका	–	–	–	हिन्दी	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र० पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२५.५ × १२	१८	१०	२७	१५२	पूर्ण	–	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म की अध्यात्म विषयक बातों की चर्चा है। ग्रन्थ में शिक्षाप्रद बातों यथा—माया, मोह, काम, क्रोध आदि शारीरिक, मानसिक दोषों का निरूपण किया गया है। साथ-ही-साथ ज्ञान आदि अन्य बातों को भी प्रश्रय दिया गया है। ग्रन्थ पत्राकार एवं यत्र-तत्र कीट-दंशित भी है। ग्रन्थ राजस्थानी अपभ्रंश के गाथाओं में लिखा गया है।
माण्डपत्र	२७ × १२.५	१२	११	३२	१३२	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म की आध्यात्मिक बातों का निरूपण किया गया है। ग्रन्थ में मद्य, मांस, हिंसा आदि का बल देकर निषेध किया गया है। साथ-ही-साथ और भी उपदेश कृति में निहित हैं। ग्रन्थ पत्राकार है।
माण्डपत्र	२७.५ × १३.५	२१	९	२४	१४१	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म की अध्यात्म सम्बन्धी बातों का विवरण है। साथ-ही-साथ जैन गुरुओं के क्रियाकलापों का वर्णन हुआ है। ग्रन्थ में राजस्थानी अपभ्रंश की १०४ गाथाएँ हैं। ग्रन्थ पत्राकार है।
–	२६ × ११	१	११	४६	१५	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म की कुछ शिक्षाएँ निहित हैं। ग्रन्थ पत्राकार है एवं मात्र एक पृष्ठ के कुछ अंश ही प्राप्त हैं।
ाण्डपत्र	२४.५ × १२.५	२०	१५	४८	४५०	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के आदि गुरु महाप्रभु जिनदेव की चर्चा है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
३१६	८१५६/४६२३	सरस्वती पूजा	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
३१७	८६००/५१६५	साधू गूंण विमाई	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
३१८	८२६३/४६८३	सिद्धपूजा	—	भगुवादास	१८७१ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३१९	८१३६/४६१०	सिद्ध पंचाशिका बालाबोध	—	निहाल सुन्दर	१८५० ई.	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
३२०	८१६६/४६३८	सीतलनाथ जी स्तवन	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
३२१	८१७३/४६३०	सीषमाण स्वाध्याय	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१७.५ × १६.५	५	१२	१८	३२	पूर्ण	मुजफ्फरनगर	प्रस्तुत ग्रन्थ में सरस्वती जी की पूजा-विधि एवं उनके स्तोत्र दिये गये हैं। ग्रन्थ की लिपि अत्याधुनिक है।
माण्डपत्र	११.५ × ११	२	१५	१६	१५	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन गुरुओं की स्तुतियाँ एवं साधुओं के गुणों का व्याख्यान है।
माण्डपत्र	१७ × ११.५	१०	१२	१३	४९	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जिनदेव का जैन सिद्ध सम्प्रदाय के प्रतिष्ठापक के रूप में वर्णन हुआ है। इसमें जिनों के मन्दिरों की संख्या के साथ-ही-साथ परम, सहज आदि भावों का विवेचन किया गया है।
माण्डपत्र	२४.८ × ११.५	४७	१२	४४	—	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म से सम्बन्धित अध्यात्म तत्त्व विषयक बातें निहित हैं। कृति में विविध द्वारों का वर्णन हुआ है। यथा-कालद्वार, गतिद्वार, वेदद्वार, तीर्थद्वार, अन्तरद्वार, ज्ञानद्वार इत्यादि। ये द्वार सूत्रों में बद्ध किये हुए हैं। बाद में उनके अर्थ अपभ्रंश में लिखे गये हैं। ग्रन्थ पत्राकार है। आरम्भ का एक पृष्ठ कृति में अप्राप्य है।
माण्डपत्र	१२ × ११	५	९	१०	१४	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के श्री शीतलदास जी का वर्णन किया गया है।
माण्डपत्र	१५.५ × ११.५	३	९	२२	१६	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म की शिक्षाएँ निहित हैं।

कम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
३२२	८३२२/४७१७	(स्तवन)	–	–	–	हिन्दी (अपभ्रंश)	नागरी
३२३	८१५३/४६२१	स्तवन	–	–	–	हिन्दी	नागरी
३२४	८०१४/४५१५	स्तवन	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३२५	८२०३/४६३८	स्तवनसंग्रह	१८१६ ई.	–	–	हिन्दी (अपभ्रंश)	नागरी
३२६	८३२१/४७१७	(स्तवन) श्री समकित सम सद्धिवोल स्वाध्या	–	–	–	हिन्दी (अपभ्रंश)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२४.५ × १२	४	१५	४७	८८	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म सम्बन्धी स्तवन हैं। ग्रन्थ का आरम्भिक अंश खण्डित है। कृति में पृष्ठसंख्या भी नहीं है। अतः ग्रन्थ का शीर्षक निश्चयरूपेण नहीं ज्ञात होता। प्राकृत भाषा में ग्रन्थ की ढालें लिखी गयी हैं, जो दीर्घाक्षरों में हैं। अल्पाक्षरों में उसका भाष्य किया गया है।
माण्डपत्र	१४.७ × १०	४	१०	१४	१७	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में धर्म-गुरुओं के स्तवन लिखे हुए हैं। ग्रन्थ की लिपि सुस्पष्ट है।
आधुनिक माण्डपत्र	२१ × १६	२३	२४	२०	४५	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में जिनदेव का स्तवन है।
माण्डपत्र	१२ × ११	४६	९	१०	१२९	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के तीर्थङ्करों यथा—पार्श्वनाथ आदि का स्तवन किया गया है। इसके साथ-ही-साथ ग्रन्थ में जैन धर्म के २४ तीर्थङ्करों का नाम सहित उल्लेख किया गया है। इन तीर्थङ्करों के अतिरिक्त जैन धर्म में १६ स्मृतियों की चर्चा भी है यथा—ब्रह्मा जी इत्यादि।
माण्डपत्र	२४.५ × १२	४	१५	४७	८८	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म सम्बन्धी स्तवन लिखे गये हैं। इस पत्राकार ग्रन्थ के नाम का पता नहीं चलता। ग्रन्थ की लिपि प्राचीन है, जो मोटे और लघु अक्षरों में है। ग्रन्थ ढालों में रचित है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
३२७	८२४०/४६७०	स्फुट पद	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
३२८	८१७५/४६३०	स्फुट पद	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
३२९	८०९६/४५९९	स्याद्वाद मत	–	–	–	हिन्दी (प्राकृत)	नागरी
३३०	८१८२/४६३०	स्याद्वाद सूचक स्तवन	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१६.५ × १२.५	३६	११	१८	२२३	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में संसार को मिथ्याभ्रमजाल बताया गया है। यहाँ न तो माता, न पिता, न भाई और स्त्री-पुत्रादि, कोई भी नहीं है। एकमात्र प्रभु ही सर्वस्व है; वह भी जिनदेव है। ग्रन्थ की लिपि आधुनिक-सी लगती है। ग्रन्थ लोक-साहित्य में लिखित है, जिसमें विविध छन्द या पद हैं।
माण्डपत्र	१५.५ × ११.५	४	६	२२	२५	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के गुरु-स्तवन विषयक स्फुट पदों का संकलन हुआ है।
माण्डपत्र	२६ × १२	४	११	३४	४६	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के स्याद्वाद मत का निरूपण किया गया है। ग्रन्थ का अधिकांश गाथा छन्दों में रचित है, जो अपभ्रंश में है।
माण्डपत्र	१५.५ × ११ ५	१२	१०	२३	६०	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के स्याद्वाद दर्शन का प्रतिपादन किया गया है।

ज्योतिष

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
३३१	८२५०/४६७६	गतिग्रहकरण विधि	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
३३२	८१२५/४५६७	ग्रहफल एवं लग्न विचार	–	–	–	हिन्दी	नागरी
३३३	८११६/४५६२	ग्रहलाघवसारिणी (ग्रहस्पष्ट)	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
३३४	८२३५/४६६६	चिन्तामणिप्रश्न	–	–	–	हिन्दी	नागरी
३३५	७६८२/४३०४	चौपहरा	१८५३ ई.	–	–	हिन्दी	नागरी
३३६	८११७/४५६०	चौवीसदण्डक विचार	–	–	–	हिन्दी	नागरी
३३७	७८३८/४३६०	जयसिंह प्रकाश	१८०४ ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१६.२ × १२	२१	१६	२८	२६४	अपूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में चन्द्रग्रहण विधि, ग्रहस्पष्ट, योगिनीदशा, त्रिकोणस्थ ग्रह, अयनांश, वर्षफल इत्यादि बनाने की विधि दी गयी है।
माण्डपत्र	२३.२ × १०	२	२२	५०	८०	अपूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में राशिगत ग्रहादि-विचार किया गया है। तत्पश्चात् द्वादश लग्नों पर विचार किया गया है। ग्रन्थ नष्टप्राय है।
माण्डपत्र	२४ × ११.५	२४	१३	४०	३९०	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में विविध ग्रहों का फलादेश, उच्च, नीच, मन्द का विवेचन चक्र-निर्माण-क्रम में किया गया है। कृति पूर्णरूपेण चक्रों में निर्मित है।
माण्डपत्र	१२.५ × १०.५	३०	१०	१४	१३१		मुजफ्फरनगर	प्रस्तुत ग्रन्थ में अंगिरादि ऋषियों के नाम से चक्र बने हैं। उन चक्रों के अनुसार उत्तरार्द्ध भाग में फलनिरूपण निबद्ध है।
माण्डपत्र	२३.५ × १६.५	७	१२	१८		पूर्ण	श्री हरदयाल सक्सेना, बरहा	इस ग्रन्थ में शिव-पार्वती संवाद के माध्यम से मंगलदायक एवं शुभ घड़ियों का विवेचन किया गया है। ग्रन्थान्त में चित्रबंध-शैली में जन्माङ्ग योजना है।
माण्डपत्र	२५.४ × ११.८	१३	१७	३२	२२१	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में विभिन्न सारणियों में २४ दण्डक विचार किया गया है। ग्रन्थ पत्राकार है।
माण्डपत्र	२२.५ × ११	१७०	८	३५	१४८५	अपूर्ण	श्री कन्हैयालाल सिरोहिया, चरखारी, हमीरपुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में राशि एवं ग्रहों का ज्योतिषीय उल्लेख विभिन्न छन्दों में किया गया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
३३८	८११६/४५८६	ताजिक नीलकंठी भाषा	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
३३९	८२१३/४६४७	ताजिकसार	–	–	–	हिन्दी (अपभ्रंश)	नागरी
३४०	८३१७/४७१३	द्वादशभावविचार	–	–	–	हिन्दी (अपभ्रंश)	नागरी
३४१	८१९१/४६३५	पारसीगुरां	–	लाला बखतसिंह	१८३२ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३४२	८३०३/४७०१	प्रश्नोत्तर	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३४३	८२३७/४६६७	मगजई रमल	–	–	–	हिन्दी (गद्य)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२६.५ × ११	२८	१६	४०	५६०	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	इस ग्रन्थ में ताजिक नीलकंठी की भाषाटीका की गयी है, जिसमें वर्षफल निर्माण-विधि, हद्दा, मुन्थाफ़ल, त्रैराशिक चक्र एवं विविध ज्योतिषीय तत्त्वों का विवेचन है।
माण्डपत्र	२२.८ × ११.८	३९	१२	३२	४६८	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में वर्षफल, वर्ष-गण, प्रवेश, अहर्गण, तिथि, गतेष्टकरण, अयनांश साधन, लग्नसाधन, लंकोदय, प्रमाण, त्रैराशिकचक्र, सर्षर्क्ष घटी, मुन्थादिदशा का विवेचन अप-भ्रंश मिश्रित हिन्दी में किया गया है।
माण्डपत्र	१६.५ × १०.५	२२	११	२४	१८२	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में तन्वादि द्वादश-भाव विचार, ग्रहदशाफल, दिनरात्रि मान आदि का विचार वर्णित है। लिपि से कृति प्राचीन प्रतीत होती है।
माण्डपत्र	१७ × १२	११	१५	११	५७	पूर्ण	दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में ज्योतिष विष-यक ग्रह आदि का वर्णन है।
माण्डपत्र	१७.५ × १४	६८	११	११	३२६	अपूर्ण	मुजफ्फरनगर	प्रस्तुत ग्रन्थ में विविध ऋषि, देवों के नाम से प्रश्न पूछने तदनुसार शुभाशुभ फलादेश का निर्देश है।
माण्डपत्र	२५.५ × १६	७१	२०	१३	५७७	अपूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में मनुष्यों के लक्षण वर्णित हैं। ग्रन्थ में शाहंशाह अकबर का नामोल्लेख है। मुर्गी, बकरी, बजार, लड़ाई आदि उर्दू शब्दों का भी प्रयोग है। चक्रनिर्माण द्वारा युद्ध, व्यापार आदि का भी वर्णन प्राप्त होता है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
३४४	७६१६/४३०२	रतनसागर	१६६८ ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३४५	८१८२/४५६५	रमल	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३४६	८१२१/४५६४	रमल	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३४७	८११८/४५६१	रमल शास्त्र	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३४८	७८६८/४४०६	रमलसार	–	–	१८७७ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३४९	७६७६/४३०३	राजयोग	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३५०	७८२३/४३७६	रामाज्ञा प्रश्न	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पृ०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२४.५ × १६	३८	१४	३२	५३२	पूर्ण	श्री केशवकिशोर तिवारी, दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में विविध रत्नों के शुभाशुभ स्वरूप, धारण-काल, विधि, उपयोगिता आदि पर प्रकाश डाला गया है।
माण्डपत्र	१४.७ × ११	४४	८	१६	१७६	अपूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में रमल ज्योतिष के अनुसार शकुनविचार वर्णित है। प्रश्नकर्ता पक्षी से शकुन विषयक प्रश्न करता है। कृति ४४२ दोहों में थी, जिसमें आरम्भ के ११२ दोहे नहीं हैं। अन्तिम अंश भी खण्डित है।
माण्डपत्र	१६ × १२	२१	१८	१६	३७८	अपूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में विविध शुभा-शुभ प्रश्नों का विचार ग्रह, नक्षत्र एवं वारादि के माध्यम से किया गया है। ग्रन्थ में स्वरों एवं नाड़ियों का भी विश्लेषण है।
माण्डपत्र	२६.५ × ११	८	१५	४६	१६२	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में रमल ज्योतिष ग्रह, नक्षत्र एवं प्रश्नपद्धति में निरूपित है। ग्रन्थ २० सिकलों (श्रृंखलाओं) में वर्णित है।
माण्डपत्र	२८ × १४	४८	१४	३६	७५६	पूर्ण	डा० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में रमलसार का अनुवाद ब्रजभाषा गद्य में किया गया है।
माण्डपत्र	२४.५ × १६	१४	११	३३	१५२	पूर्ण	श्री केशवकिशोर तिवारी, दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में राजयोग के विभिन्न उपादानों का तथ्यात्मक विश्लेषण रीतिकालीन शैली में किया गया है।
माण्डपत्र	२२ × ११.५	५१	२२	१६	५६१	पूर्ण	,,	दोहा, चौपाई छन्दों में रचित इस ग्रन्थ में सप्ताह के दिनों के अनुसार किस-किस दिन कौन-कौन से कर्मों के फलों का विचार करना चाहिए, विवेचित है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का माम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
३५१	८३५१/४७३६	राशि विचार एवं फलादेश	–	टीकाराम	१६०८ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
३५२	८११४/४५८७	विवाह पटलराआव दूषण (भाषासहित)	–	–	–	हिन्दी (संस्कृत)	नागरी
३५३	८३०४/४७०२	विवाह सहारी विधि	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी गद्य)	नागरी
३५४	७६६३/४३१०	शकुनविचार	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३५५	८१२०/४५६३	श्रावकाचार (भाषाटीका)	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
३५६	८१२७/४५६८	श्री सिरो दे (स्वरोदय)	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२० × १७.५	३५	२०	२४	५२५	अपूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में राशिफल चरण के माध्यम से, तत्पश्चात् रमण के कुछ प्रश्नों का शुभाशुभ विचार दिया गया है। एक पृष्ठ में कुछ ओषधियों का विवरण है।
माण्डपत्र	२५.५ × ११.२	२०	१८	४८	५७१	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में विवाह के शुभाशुभ मुहूर्त्त, दोष, नक्षत्रादि के साथ-साथ ग्रहों के उदयास्त, गृहप्रवेशादि का भी वर्णन है।
माण्डपत्र	२३.५ × १६	८	१८	३२	१४४	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में विवाह सम्बन्धी शुभाशुभ माह, दिन, नक्षत्र, ग्रह आदि का विचार किया गया है।
माण्डपत्र	२४.५ × १७.५	४३	१२	२०	३२३	अपूर्ण	श्री बाबूलाल गोस्वामी, बिहारी जी का मन्दिर, दतिया	इस ग्रन्थ में राशियों, ग्रहों तथा दिनों को आधार मानकर शकुन विचार किया गया है। इसमें यात्रा, धन, शरीरादि पर प्रभाव सम्बन्धी विवरण दिनानुसार वर्णित है।
माण्डपत्र	२६ × ११.५	५	१८	५२	—	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में शुभाशुभ की जानकारी हेतु ज्योतिष विषयक बाते हैं। ग्रन्थ में बहुत से चक्र भी हैं। जिनदेव की स्तुति होने के कारण ग्रन्थ जैन धर्म से सम्बद्ध प्रतीत होता है।
माण्डपत्र	१५.५ × १५	१८	१४	१६	१२६	अपूर्ण	डॉ० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में यात्रा, ग्रह, नक्षत्र, राशि आदि से सम्बन्धित विवरण है। ग्रन्थान्त में श्री सिरो दे सम्पूर्ण के आधार पर ग्रन्थ शीर्षक स्वरोदय मान्य होता है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
३५७	७७४४/४३४०	सगुनवर्णन	—	—	—	हिन्दी (ब्रज-मिश्रत अवधी)	नागरी
३५८	७८५०/४३६२	सगुनविचार	—	—	—	हिन्दी	नागरी
३५९	७८६१/४३९९	सगुनविचार	—	—	—	हिन्दी	नागरी
३६०	७७९७/४३६६	सगुनविचार	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३६१	८२३०/४६६१	सगुनावली	—	—	—	हिन्दी (अवधी)	नागरी
३६२	७७५९/४३४९	सम्वत्सरी	—	—	—	हिन्दी	नागरी
३६३	८२१२/४६४६	सामुद्रिक	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३६४	८११५/४५८८	सूर्यग्रहण	—	—	—	हिन्दी (अपभ्रंश)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२४.५ × १७	४	२२	२४	६६	अपूर्ण	श्री कन्हैया-लाल सिरोहिया चरखारी, हमीदपुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में तुलसीदास ने अपने आराध्यदेव भगवान् श्री राम को सगुण की कसौटी पर विवेचित किया है।
माण्डपत्र	२१ × १३.५	२०	१६	१६	३८	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में शरीर के विभिन्न अंगों पर स्थित चिह्नों के अनुसारसगुन विचार किया गया है।
माण्डपत्र	१६ × ११.५	४	८	१६	१६	अपूर्ण	श्री श्यामा-चरण, दतिया म०प्र०	इस ग्रन्थ में यात्रा तथा शरीरादि सम्बन्धी सगुनों पर विचार किया गया है। ग्रन्थान्त में कुछ लोगों के जन्माङ्गों का वर्णन है।
माण्डपत्र	१७ × ११.५	४	१५	१२	२३	अपूर्ण	श्री मुन्नालाल परसिया, दतिया	इस ग्रन्थ में चित्रबन्ध द्वारा सगुन विचार किया गया है।
माण्डपत्र	१७ × १२	२४	१०	२३	१७३	अपूर्ण	श्री श्यामा-चरण खरे, दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में सकुनवर्णन दिन एवं ग्रहों के माध्यम से किया गया है।
माण्डपत्र	११.२ × ८.५	१६०	८	१०	४००	अपूर्ण	श्री हरदयाल सक्सेना लहार, भिण्ड	प्रस्तुत ग्रन्थ में ग्रहों एवं राशियों के मासानुसार विचार कर, भविष्य के विषय में आख्या की सूचनिका दी गयी है।
माण्डपत्र	१६.५ × १२	४५	८	२५	२८१	अपूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में सामुद्रिक ज्योतिष के अनुसार पुरुष एवं स्त्रियों के अंगलक्षण एवं तदनुसार फलाफल का वर्णन है। लिपि से कृति प्राचीन ज्ञात होती है।
माण्डपत्र	२६.५ × १२.५	२०	१५	३८	३४१	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में सूर्य ग्रहण सम्बन्धी विवरण गद्यबद्ध है। गणितीय विधि से अन्य ग्रहों का भी फलाफल वर्णित है। लिपि से कृति प्राचीन प्रतीत होती है।

तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
३६५	८२७१/४६८७	अज्ञात	—	—	—	हिन्दी गद्य	नागरी
३६६	८२५२/४६७८	गणपति आराधना	—	—	—	हिन्दी (अपभ्रंश)	नागरी
३६७	७७७७/४३६३	डाकिनी के जंत्र	१८८५ ई.	—	—	हिन्दी	नागरी
३६८	८८६८/५१६५	विषहरणमंत्र	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
३६९	७८७५/४४१२	साबरतंत्र	—	—	—	हिन्दी (ब्रज गद्य)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पृ०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२३.५ × १२.५	७८	११	२४	६४४	अपूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में रोग, व्याधि, शत्रुनाश, यात्रागमन, वशीकरण आदि से सम्बद्ध मन्त्र - यन्त्र निरूपित हैं।
माण्डपत्र	१६ × ११.५	४	११	२२	३०	पूर्ण	श्री सूजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में गणपति पूजन का तान्त्रिक विधान वर्णित है। लिपि से ग्रन्थ आधुनिक प्रतीत होता है।
माण्डपत्र	१८ × १५	२	१०	२६	१६	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में जादू-टोना छुड़ाने की विधि बातायी गयी है।
माण्डपत्र	११.५ × ११	२	१०	१६	१०	अपूर्ण	—	इस ग्रन्थ में जैन धर्म (तन्त्र) के कुछ मन्त्र लिखे हुए हैं। ग्रन्थ में विषहरणमंत्र भी दिये गये हैं।
माण्डपत्र	२१ × १२.५	२९	१२	३०	३२६	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में कुछ मंत्रों को लिपिबद्ध किया गया है। वशीकरण मन्त्र का भी विवेचन है। तन्त्र मन्त्र ने हमारे लोकजीवन को अत्यधिक प्रभावित किया है। इस अर्थ में ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।

दर्शन (वेदान्त)

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
३७०	७७६६/४३५६	आनन्दानुभव	—	—	—	हिन्दी	नागरी
३७१	८२६३/४६६३	उपनिषद्स्मृति टीका	—	—	—	हिन्दी गद्य	नागरी
३७२	७७६५/४३५५	विचार षट् बिशका बीस	१८४५ ई.	—	—	प्राकृत	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२२ × १२	६८	६	२४	३०६	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	इस ग्रन्थ में दार्शनिक पीठिका पर परमात्ममिलन की स्थिति में उत्पन्न आनन्द का उल्लेख किया है ।
माण्डपत्र	२६ × १७	७२	११	२४	५९४	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में उपनिषद् या स्मृतियों के अध्यात्मतत्त्व निरूपण, सृष्टि-नियम, गर्भाधानादि संस्कारविधान का उल्लेख हिन्दी खड़ीबोली गद्य में वर्णित है ।
माण्डपत्र	२६ × १२.५	३६	१६	४०	७२०	अपूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में दार्शनिक तत्त्व एवं उनके अर्न्सतम्बन्धों का विवेचन है ।

नीति एवं उपदेश

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
३७३	८२४५/४६७३	आर्याभारत	–	–	–	हिन्दी (मराठी)	नागरी
३७४	८२६९/४६८९	कवित्त	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३७५	८२७५/४६८८	कवित्त एवं कुण्डलिया	–	–	१७३७ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३७६	७८४०/४३९१	कवित्तसंग्रह	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३७७	८२४८/४६७४	कवित्तसंग्रह	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३७८	८२५४/१/४६७९	कुण्डलियाँ	–	हरप्रसाद	१८४५ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३७९	८००८/४५१३	गिरधरदास की कुण्डलियाँ	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३८०	७८४५/४३९१	गिरधर की कुण्डलिया	–	–	१८३७ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र० पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
६	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२६ × १३	५२	१३	३२	६७६	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में महाभारत के विराटपर्व में पाण्डवों द्वारा अज्ञातवास, कीचकवध आदि की कथा का वर्णन है।
माण्डपत्र	१६.५ × १३	५	१३	१२	२४	अपूर्ण	मुजफ्फरनगर	प्रस्तुत ग्रन्थ में नीति, उपदेश, कृपणप्रकृति आदि का वर्णन कवित्त-शैली में निबद्ध है।
माण्डपत्र	४५ × १३	४	४०	१८	६०	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में अधिकांशतः गिरधरकविराय की कुण्डलियाँ संकलित हैं। यदा-कदा कुछ कवित्त तुलसी के नाम से भी मिलते हैं।
माण्डपत्र	१६ × ६.२	५२	७	२०	२१२	अपूर्ण	श्री बलवीर सिंह, दतिया (म० प्र०)	अध्यात्म एवं नीति विषयक कवित्तों का यह संग्रह-ग्रन्थ है।
माण्डपत्र	२६ × १२	४	१५	४०	७५	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में कृपणता, लक्ष्मी की चंचलता एवं अकबर की दानशीलता का वर्णन है।
माण्डपत्र	१७.५ × ११	८८	६	१०	२४३	पूर्ण	श्री श्रीराम वर्मा, दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में कविवर अग्रदास ने नीति एवं उपदेश के माध्यम से ईश्वरभक्ति को प्रधान मानकर विविध दृष्टान्तों से प्रतिपादित किया है। छन्द प्रायः छन्दशास्त्र की दृष्टि से अशुद्ध हैं।
माण्डपत्र	१६ × १०.५	२१	६	१६	६	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इसमें गिरधरदास की १८ कुण्ड-लियाँ हैं। अन्त में तुलसी का एक दोहा भी है।
माण्डपत्र	१६ × ६.२	६८	७	२०	२८८	पूर्ण	श्री बलवीर सिंह, दतिया (म० प्र०)	इसमें नीति एवं उपदेश पर ६४ छन्दों का संकलन है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
३८१	७७७३/४३६१	जमींदार चरित्र	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३८२	७६८५/४३१२	ज्ञानमाला	—	—	१८५५ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३८३	८६०५/५१६५	नैवरत्न के कवित्त	—	—	—	हिन्दी (अपभ्रंश)	नागरी
३८४	८२४६/४६७५	ब्रह्मोत्तर खण्ड	—	—	—	हिन्दी (मराठी)	नागरी
३८५	८३५७/४७३६	भर्तृहरि शतक टीका	—	पं० हरि देव	१७५२ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३८६	८३६७/४७६८	महाभारत (ललितकांड)	—	—	—	हिन्दी (अवधी)	नागरी
३८७	८३२३/४७१८	महाभारत दर्पण (भाषा)	—	—	१८७६ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	—	१५	१४	१६	१०५	पूर्ण	श्री वलबीर सिंह, दतिया	इस ग्रन्थ में राजनीति, धर्म-नीति के आधार पर जमींदारों के कर्तव्याकर्तव्य का सम्यक् निरूपण किया गया है।
माण्डपत्र	२३.५ × १६.५	२६	१६	१४	२०३	पूर्ण	केशव किशोर तिवारी, दतिया (म०प्र०)	इस ग्रन्थ में परीक्षित एवं शुकदेव वार्ता की कथा को ब्रज गद्य में अनूदित किया गया है।
माण्डपत्र	११.५ × ११	९	१०	९	२५	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में नीति एवं उपदेश-परक बातें अपभ्रंश के दोहरा छन्द में लिखी गयी हैं। वाराह-मिहिर एवं कालिदास प्रभृति विद्वानों का भी नामोल्लेख है।
माण्डपत्र	२४.५ × १६.३	२२	१३	३२	२५५	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में ब्रह्मोत्तरपुराण की कथा प्रतिपादित है। शिव एवं उनकी शक्ति वर्णित है।
माण्डपत्र	३२ × २०	३०	४०	२३	८६२	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में नीतिमंजरी, शृंगारमंजरी एवं वैराग्यमंजरी नामक तीन शतकों का दोहा, छप्पय, कुण्डलिया आदि छन्दों में अनुवाद किया गया है।
माण्डपत्र	३१ × १५	७	१३	४५	१२८	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में महाभारत के ललितकाण्ड की कथा दोहा, चौपाई एवं सोरठा छन्दों में है। ग्रन्थ कीट-दंशित है।
माण्डपत्र	३६ × १८.३	१५५८	१३	५७	३६०७७	अपूर्ण	,,	इस ग्रन्थ को काशीनरेश श्री उदितनारायण के आदेश से रघुनाथ बन्दीजन के आत्मज श्री गोकुलनाथ जी ने लिखा था। इसमें महाभारत के आदि, शल्य, कर्ण, इत्यादि पर्वों की कथा विविध छन्दों में वर्णित है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन भी लखनऊ से हो चुका है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लि
१	२	३	४	५	६	७	८
३८८	८२४४/४६७२	मूर्ख शतक	–	–	–	हिन्दी (अपभ्रंश प्राकृत)	नागरी
३८९	८९०७/५१६५	रंग बऊतरी	–	–	–	हिन्दी (अपभ्रंश)	नागरी
३९०	८२५३/४६७९	रहीम के दोहरा	–	पं० लाला माखन	१७४४ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
३९१	८१३१/४६०२	रहीम के दोहे	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
३९२	७७९६/४३६६	लघुचरनाइके	–	–	–	हिन्दी (ब्रज-मिश्रित अवधी)	नागरी
३९३	७७९०/४३६६	वृक्ष चेताउनी	१८२७ ई.	–	–	हिन्दी	नागरी
३९४	७६७८/४३०३	सभाजीत के दोहे	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२६ × ११	४	१९	४०	९५	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत कृति में नीति एवं उपदेश के माध्यम से मूर्ख-लक्षण एवं उनसे दूर रहने का उपाय लिखित है। लिपि के अनुसार कृति प्राचीन प्रतीत होती है।
माण्डपत्र	११.५ × ११	२१	१०	१२	७८	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में जिनदेव को सम्बोधित करते हुए शिक्षाप्रद बातें लिखी गयी हैं। ग्रन्थ में ७३ छन्द हैं।
माण्डपत्र	१६.५ × १०.५	२१	१५	११	१०८	अपूर्ण	श्री श्रीराम वर्मा, दतिया म०प्र०	प्रस्तुत ग्रन्थ में महाकवि रहीम के १०० दोहों का संकलन है, जिनमें आरम्भ के ३५ दोहे अप्राप्त हैं। ग्रन्थान्त में कवित्त छन्द भी प्राप्त हैं, जो रहीम कृत हैं या नहीं यह विवादास्पद है।
माण्डपत्र	२०.५ × १६	१६	१९	३०	२८५	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में २०० दोहों का संकलन है, जिसमें नीति एवं शिक्षाप्रद तथ्य हैं।
माण्डपत्र	१७ × ११.५	११	१२	१४	५८	पूर्ण	श्री मुन्नालाल परसरिया, दतिया	इसमें नीति सम्बन्धी जीवनोपयोगी बातें दोहा छन्द में कही गयी हैं। ग्रन्थान्त में तुलसीदास के भी कुछ दोहे हैं।
माण्डपत्र	१७ × ११.५	१४	७	१०	३६	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में चित्रबन्धशैली में वृक्षों के नाम हैं। "चेताउनी" अध्यात्म विषयक ग्रन्थ है, किन्तु इस ग्रन्थ में उक्त विधा का अभाव है।
माण्डपत्र	२४.५ × १६	२५	१२	२६	२४४	पूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में दोहा एवं सवैया छन्द में राम को आधार मानकर श्रृंगार और वैराग्य के माध्यम से विभिन्न मन:स्थिति का विश्लेषण कवि ने किया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
३६५	७६८६/४३०५	सभाविलास	–	प्रधान रामचन्द्र कुंडरा	१८३५ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३६६	७८२४/४३८०	सोरहों चरन नाइकौ	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३६७	८४३०/४७८३	स्फुट कवित्त	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
३६८	८२५५/४६७६	स्फुट कवित्त दोहा	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२४×१६.५	५६	२०	२४	८४०	पूर्ण	श्री केशव किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में तुलसी, रहीम, गिरधर आदि कवियों के नीति-परक दोहों का लालकवि ने संकलन किया था, जिसकी संज्ञा प्रधान रामचन्द्र कुंडरा ने सभा-विलास दी है। यह ग्रन्थ लखनऊ, बम्बई एवं बनारस से प्रकाशित भी हो चुका है।
माण्डपत्र	१५×१२	७	१५	१४	४६	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में दोहा और श्लोक-शैली में भाग्य के विषय में राजनीति सम्बन्धी बातें कही गयी हैं। श्लोक का तात्पर्य चौपाई छन्द से है।
माण्डपत्र	१८×१२	१०	२४	२२	—	पूर्ण	श्री श्यामा-चरण खरे	प्रस्तुत ग्रन्थ में ठाकुर, रहीम, बिहारी आदि कवियों के स्फुट छन्द संकलित हैं। कृति नीति एवं उपदेशपरक है। लिपि प्राचीन ज्ञात होती है।
माण्डपत्र	१७.५×११	३०	१०	१०	६४	अपूर्ण	श्री श्रीराम वर्मा, दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में तुलसीदास, बिहारी, रहीम आदि विविध कवियों के दोहे एवं कवित्तों का संग्रह किया गया है। ये दोहे एवं कवित्त नीति एवं उपदेश के साथ-साथ भक्ति एवं श्रृंगार से ओतप्रोत हैं।

भक्तिकाव्य

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
३९९	८२९५/४६९५	(अज्ञात)	–	–	–	हिन्दी	नागरी
४००	८३०६/४७०४	(अज्ञात)	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४०१	८३१६/४७१३	(अज्ञात)	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
४०२	७९११/४४४५	अतरीदेव की कथा	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४०३	७८४९/४३९१	अध्यात्मप्रकाश	१६९८ ई.	–	१८३७ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४०४	७७४०/४३३९	अनित्य निश्चयात्मक	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१७.२ × १२.५	६	१२	१३	२०	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में भक्ति सम्बन्धी कुछ भजन लोकगीत-शैली में लिखे हुए हैं।
माण्डपत्र	२८ × १२	३५६	१२	३६	५४५१	अपूर्ण	रायबरेली	प्रस्तुत ग्रन्थ में राम, माधव, कृष्ण, शक्ति आदि का उल्लेख है। इसके साथ-ही-साथ हनुमान जी की भी स्तुति ग्रन्थान्त में कवि ने की है। कृति में तीन-चार प्रकार की लिपियाँ प्रयुक्त हैं। पृष्ठ आपस में सटे हैं। लिपि प्राचीन है।
माण्डपत्र	१६.५ × १०.५	४४	१०	२३	३१६	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में कृष्ण-श्यामा, साथ-ही-साथ राम-रावण के भी नाम उद्धरण के रूप में लिखे गये हैं। ग्रन्थ पूर्णरूपेण विकृत होने के साथ बीच-बीच के पृष्ठ निकल गये हैं। शीर्षक भी संदिग्ध है। ग्रन्थ के पत्र से लगता है कि यह अत्यन्त प्राचीन है।
माण्डपत्र	२४.५ × १३	४	११	२८	२५	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर (उ० प्र०)	प्रस्तुत ग्रन्थ में द्विजदेव-अतरी-देव की कथा है। कृति दोहा, सोरठा और चौपाई जैसे सरल छन्दों में लिखी हुई है।
माण्डपत्र	१६ × ६.२	८३	७	२०	३६३	पूर्ण	श्री बलबीर सिंह, दतिया (म० प्र०)	प्रस्तुत ग्रन्थ में दोहा एवं कवित्त छन्दों में अध्यात्म तत्त्व का निरूपण किया गया है।
माण्डपत्र	२१.५ × १६.५	५४	१४	१६	३७८	पूर्ण	श्री अटल-बिहारी श्रीवास्तव, दतिया	इस ग्रन्थ में वैराग्य के प्रति समर्पित होने के भावों एवं मन के विविध सोपानों की व्याख्या दार्शनिक धरातल पर की गयी है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
४०५	८३५०/४७३५	अभंग पद	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४०६	८०५१/४५३५	अमर लोकलीला	–	–	१८७१ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४०७	७७१४/४३२०	अम्बानन्द विलास	१८८१ ई.	–	–	हिन्दी	नागरी
४०८	८०६५/४५४५	आदितवार व्रतकथा	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
४०९	७८८१/४४१७	उपदेश बत्तीसी	–	–	–	हिन्दी (ब्रज मिश्रित राजस्थानी)	नागरी
४१०	७६६४/४३११	उषा चरित्र	–	–	–	हिन्दी (ब्रजमिश्रित अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२०.५ × १५.५	३३६	११	१४	१६१७	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में अभंग पदों में मन, आत्मा आदि को सम्बोधित किया गया है। इसमें तुलसीदास जी के भी कुछ छन्द हैं।
माण्डपत्र	१३ × ८.५	१०३	४	१२	१५५	पूर्ण	डॉ० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में भक्ति विषयक बातों का; जैसे ब्रह्म, जीव, माया आदि का विस्तृत रूप से निरूपण किया गया है। कवि ने अपने को सुखदेव का शिष्य बताया है।
आधुनिक माण्डपत्र	२१ × १६.५	२१०	१८	२४	—	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में माँ भवानी की वन्दना की गयी है और विनय की शैली में शिवदास ने चित्त-बन्ध के माध्यम से उनके प्रति अपनी आस्था व्यक्त की है। यद्यपि विलास की रचना श्रृंगार से सम्बन्धित है, पर इसका शिल्प-विधान कुमार सम्भववत् है।
माण्डपत्र	१०.५ × १०.५	१	१२	१८	१३	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में मात्र एक ही छन्द में रविवार व्रत की कथा का उल्लेख किया गया है।
माण्डपत्र	२६ × १२.५	३	१२	३८	४३	अपूर्ण	डॉ० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में गुरु द्वारा बत्तीस प्रकार के उपदेशों का वर्णन किया गया है।
माण्डपत्र	२३.५ × १६.५	८	१२	१४	४२	अपूर्ण	श्री बाबूलाल गोस्वामी, बिहारीजी का मन्दिर, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में उषा-अनिरुद्ध की कथा-वार्ता-शैली में ब्रह्मलीन की कथा का वर्णन किया गया है और इसके लिए कथाकार ने रामावतार की कथा के बीच हनुमान और राम के सम्बन्धों को स्थापित कराकर ब्रह्मज्ञान का श्रेयस् सिद्ध किया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
४११	८०७४/४५४६	करम हिंडोल्या	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४१२	८०३४/४५२१	कवित्त अष्टक	–	–	१८८० ई.	हिन्दी (ब्रज़)	नागरी
४१३	७६६४/४५०२	कवित्त महादेव	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४१४	७८०७/४३७०	कवित्तसंग्रह	–	–	–	हिन्दी (ब्रजमिश्रित अवधी)	नागरी
४१५	७८४७/४३६१	कुण्डलियाँ	–	–	–	हिन्दी	नागरी
४१६	७६७३/४४६२	गंगा लहरी	–	बैजनाथ	१८७५ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र० पृ०	अक्षर प्र० पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१७ × १२.५	३	१२	१९	१०२	पूर्ण	कोटा, राजस्थान	प्रस्तुत ग्रन्थ में मन की चपलता का वर्णन है । ईश्वर की माया अपार है । जिस प्रकार हिंडोला स्थिर नहीं रहता, ठीक उसी प्रकार यह मनुष्य कभी निर्धन, कभी राजा, तो कभी शूर होता है । ग्रन्थ की लिपि सुस्पष्ट है ।
माण्डपत्र	२२.५ × १४.५	४	१६	२०	४०	पूर्ण	डॉ० नवल बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत कृति में कवि ने विविध रूपों में भगवान् के विविध कार्यों का वर्णन अष्टक के माध्यम से किया है ।
माण्डपत्र	२६ × २२	५	१७	२४	६४	पूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया	इस ग्रन्थ में भगवान् महादेव की स्तुति कवित्त-सवैया छन्द में की गयी है । छन्दों में अनुप्रास अलंकार का भरपूर प्रयोग हुआ है । इन पदों के रचयिता का नाम गदाधर है ।
आधुनिक माण्डपत्र	१६·५ × ११·५	८	१३	१०	३३	अपूर्ण	श्री जगदीश-शरण, 'मधुप' बिलगइयाँ, दतिया	इस ग्रन्थ में सूरदास, तुलसीदासादि के पदों को संकलित किया गया है।
माण्डपत्र	१६ × ९.२	२७	७	२०	२३९	पूर्ण	श्री बलबीर सिंह जी, दतिया	इसमें अध्यात्म पर प्रकाश डालनेवाली ३१ कुण्डलियों का संकलन है ।
माण्डपत्र	२३ × १६	२९	१४	१८	३५३	पूर्ण	श्रीब्रजकिशोर शर्मा, भरतगढ़, दतिया	इस ग्रन्थ में पद्माकर ने विभिन्न छन्दों में गंगा के सौन्दर्य का सांगोपांग निरूपण सरस शब्दावली में किया है । ग्रन्थ का प्रकाशन पद्माकर ग्रन्थावली के अन्तर्गत हो चुका है । इस रचना के द्वारा पद्माकर ने अपनी भक्ति-भावना को व्यंजित करने का प्रयास किया है ।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
४१७	७८०८/४३७०	गंगा स्तुति	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४१८	७८०९/४३७१	गणेश की पोथी	–	–	–	हिन्दी	नागरी
४१९	८०३५/४५२१	गणेश पुराण	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४२०	७८५८/४३९८	गणेश पूजनविधि	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४२१	८२८८/४६९१	गुण हरिरस	–	–	–	हिन्दी (अपभ्रंश)	नागरी
४२२	८०७६/४५५१	गुरुन्याय ज्ञानदीपिका	–	रिषिनाथ	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
आधुनिक माण्डपत्र	१६.५ × ११	३	१४	१४	१८	अपूर्ण	श्री जगदीश-शरण बिलगइयाँ, पट्टापुरा, दतिया	इसमें गंगा स्तुति विषयक कविताओं का संकलन है। इसके रचयिता शिवलाल कवि हैं। ग्रन्थ में मात्र ३ पृष्ठ हैं। इसमें गंगा की भक्ति का वर्णन किया गया है।
माण्डपत्र	१६.५ × ११	१	७	१८	४	अपूर्ण	श्री हरिदास मुखिया, ग्राम-पो०-नौटा, झाँसी	इस ग्रन्थ में गणेश की वन्दना केवल २ छन्दों में की गयी है।
माण्डपत्र	२२.५ × १४.५	३३	२०	२०	४१	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में ब्रह्मवैवर्त पुराण के गणेश खण्ड नामक कथा का वर्णन है। इसमें गणेशजी के जन्म इत्यादि का वर्णन दोहा और चौपाई छन्दों में वर्णित है।
माण्डपत्र	१६.५ × १०	३	७	२०	१३	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया, (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में गणेश की पूजा किस-किस महीने में किस-किस तिथि को और कैसे करनी चाहिये, इसका विवेचन है।
माण्डपत्र	१५ × १३	५६	११	१६	३०५	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में अपभ्रंश के दोहा जैसे छन्द के साथ-ही-साथ गद्य के अंश भी मिलते हैं। ग्रन्थ में अनेकों देवता विषयक चर्चाएँ मिलती हैं। लिपि अति प्राचीन है और अन्त के कुछ पृष्ठ किसी प्रकार से नष्ट हो गये हैं।
माण्डपत्र	२० × १३.५	२१७	१८	१२	१४६५	अपूर्ण	श्री जगदीश-प्रसाद, देवरिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में दोहा, चौपाई छन्दों में सन्तों एवं भक्तों के गुणों का वर्णन किया गया है। गुरु की महिमा एवं ज्ञान विषयक बातें भी हैं। लिपि से ग्रन्थ प्राचीन ज्ञात होता है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
४२३	७८१३/४३७४	गुरु महिमा	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४२४	८०२६/४५१६	गीता	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४२५	७८११/४३७३	चरनदास	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४२६	७८१५/४३७४	चिन्तावणी	–	–	–	हिन्दी (ब्रज-मिश्रित अवधी)	नागरी
४२७	८०६८/४५४७	चिन्तावरणी	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
४२८	७८४६/४३६१	चौपही	–	–	१८३७ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४२९	७८०२/४३७०	छन्द संग्रह	–		–	हिन्दी (अवधी)	नागरी

ाधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
ण्डपत्र	१२×८.५	१५	७	१४	४६	अपूर्ण	श्री ब्रज-किशोर शर्मा, भरतगढ़, दतिया	इस ग्रन्थ में राम को सच्चा गुरु मानकर निर्गुण शब्दावली के द्वारा दोहा और चौपाई छन्द में उनका माहात्म्य वर्णित है।
ण्डपत्र	२१×१५.५	१११	१८	१३	–	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	यह ग्रन्थ कीट-दंशित है। दोहा, चौपाई जैसे छन्द में इसकी रचना हुई है। यह गीता का पद्यबद्ध अनुवाद है।
ाण्डपत्र	१४.५×११.५	३२	११	१४	१५४	पूर्ण	श्री श्यामा-चरण खरे, दतिया (म०प्र०)	इस ग्रन्थ में चरनदास जी ने ज्ञान और वैराग्य की शैली में अज्ञानान्धकार से छुटकारा पाने की विधि का वर्णन किया है।
ाण्डपत्र	१२×८.५	३८	७	१४	२२३	पूर्ण	श्री ब्रज-किशोर शर्मा, भरतगढ़, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में निर्गुण राम की उपासना के फल का संकेत दिया गया है। तथा साथ ही शुभ और अशुभ कर्मों के परि-णाम की सूचनिका भी मानकर उनका माहात्म्य वर्णित है।
ाण्डपत्र	१६.५×११.५	२३	११	२१	१६६	अपूर्ण	–	प्रस्तुत ग्रन्थ में रामभक्ति के साथ-ही-साथ हरिभक्ति पर भी जोर दिया गया है। ग्रन्थ में वामनरूप इत्यादि दृष्टान्त भी प्राप्य हैं। ग्रन्थकार सम्भ-वतः रामचरण जी हैं। ग्रन्थ में माया-मोह आदि को असत्य बताया गया है।
ाण्डपत्र	१६×९.२	१०	७	२०	४४	पूर्ण	श्री बलबीर सिंह, दतिया (म० प्र०)	इसमें चौपाई छन्दों में भक्ति एवं ज्ञान-तत्त्व का कथन है।
ाधुनिक ाण्डपत्र	१६.५×११·५	७	११	२२	५३	अपूर्ण	श्री जगदीश-शरण, बिलगइयाँ दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ के प्रारम्भिक पृष्ठ में हनुमान का स्तवन किया गया है और बाद के पृष्ठों में जल-विहार आदि कृष्ण-लीलाओं का वर्णन है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
४३०	७८८०/४४१६	जैमिनि पुराण	१८२३ ई.	झाऊराम मिश्र	१८३८ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४३१	७७६२/४३६६	तैंतीस अक्षरी	१६१५ ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४३२	८०७५/४५५०	दशावतार	–	रिषिनाथ	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४३३	७६६३/४२६२	दोहा एवं पद	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४३४	७७४८/४३४२	नाम महातम	–	–	–	हिन्दी	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
६	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२४ × १२.५	४७२	१०	३६	५३१०	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में २३ अध्याय हैं। ग्रन्थ की भाषा अवधी है। इसमें सूत-सौनक संवाद के माध्यम से गुरुकृपा के द्वारा युधिष्ठिर को जाग्रतावस्था में पहुँचने का वर्णन दोहा व चौपाई छन्दों में किया गया है।
माण्डपत्र	१७ × ११.५	११	१३	१२	५४	पूर्ण	श्री मुन्नालाल पटसारिया, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में हिन्दी-वर्णमाला के ३३ अक्षरों का वर्णनात्मक विवेचन दोहा व चौपाई छन्द में है और बीच-बीच में देवताओं की स्तुति भी की गयी है।
माण्डपत्र	२३ × ११.५	१०	११	२८	—	अपूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में दोहा एवं चौपाइयों के माध्यम से भगवान् के दश अवतारों का वर्णन कवि ने किया है। ग्रन्थ पत्राकार एवं अपूर्ण है। लिपि से ग्रन्थ प्राचीन ज्ञात होता है।
माण्डपत्र	३३ × २३	७६	२६	३०	१३४२	पूर्ण	श्री अटल-बिहारी श्रीवास्तव, आधुनिक प्रेस, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ के प्रारम्भ में रामनाथ के लड़के का जन्मांग एवं लाला भट्टलाल के लड़के का जन्मांक दिया गया है। तदनन्तर कवि ने भक्ति-पदों के साथ बीच-बीच में शृंगारिक पदों को रखा है।
माण्डपत्र	१८.५ × १४.५	११	१३	१७	७७	अपूर्ण	श्री हरदयाल सक्सेना, मु० पो०—बरहा, जिला भिण्ड (म० प्र०)	ग्रन्थ के अन्त में मुहम्मद अब्दुल अजीज, चौक, कानपुर के नाम से एक इश्तिहार भी लगा हुआ है। इससे प्रतीत होता है कि यह प्रति मुद्रित प्रति की प्रपिलिपि है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
४३५	७६७७/४३०३	निरधार के दोहे	१८१० ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४३६	७७४१/४३३६	निर्विघ्न मनरंजन	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४३७	७६१२/४४४६	पंच को सार	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४३८	८०६१/४५४३	पंची कर्ण	–	श्रीराम-दास स्वामी समर्थ	१८२६ ई.	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
४३९	७७०४/४३१६	पद संग्रह	–	–	–	हिन्दी	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पृ०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
६	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२४.५ × १६	१०	१६	३६	१८०	पूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया	इस ग्रन्थ में ब्रह्म की सर्वगुण सम्पन्नता का बखान विविध छन्दों में किया गया है तथा उसे ही सर्वात्मज्ञान का प्रतीक मानकर श्रेय और प्रेय के पक्षों पर विश्लेषित किया गया है। ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	२१.५ × १६.५	१२	१६	१८	१०८	पूर्ण	श्री अटल-बिहारी श्रीवास्तव, दतिया	इस ग्रन्थ में कुण्डलिया की शैली में मन के विकारों को उपदेशात्मकता के कलेवर में प्रस्तुत किया गया है, इसके साथ ही योग और भोग की अन्त: सम्बन्ध स्थापना भी है।
माण्डपत्र	१७.५ × ११	२८	८	२०	१४०	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर (उ० प्र०)	प्रस्तुत कृति में वद्ध, मुमुक्षु कैवल्य, मुक्त, नित्य आदि के साथ-ही-साथ दाता, कर्ता, भोक्ता तथा शारीरिक तत्त्वों—रक्त, मांस, मज्जा, अस्थि आदि के घृणा उत्पादक विषयों का वर्णन निर्वेद भाव से कवि ने किया है।
माण्डपत्र	२१ × १०.५	४७	७	२५	२५७	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में अध्यात्म विषयक चर्चाएँ निहित हैं। शम, दम, विराग, तितिक्षा, उपरति, श्रद्धा आदि का वर्णन एवं गुरु-महत्त्व का प्रतिपादन किया गया है। साथ-ही-साथ पाँचों तत्त्वों का विवेचन है।
आधुनिक माण्डपत्र	२०.५ × १६.५	१२	१४	२०	१०५	पूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म०प्र०)	इसमें धरमदास, मीराँबाई के स्फुट पदों को लिपिबद्ध किया गया है। इनके पदों में कृष्ण-भक्ति की अनुगूंज है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
४४०	८६७२/५२१६	प्रभाती	—	श्री ठकु-राइन साहिब	१८६५ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४४१	८२१४/४६४८	प्रहलाद चरित्र	—	कुन्दन पाठक	१८२७ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४४२	८०४८/४५३२	प्रहलाद चरित्र	—	बेनीशुक्ल	१८५८ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४४३	७८४४/४३६१	बाईसी	—	—	१८३७ ई.	हिन्दी	नागरी
४४४	७६८७/४३०५	भक्तमाल टीका	—	—	१७११ ई.	हिन्दी (ब्रजपद्य)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
ाण्डपत्र	१६.५ × ११	२	८	१८	९	पूर्ण	डॉ० नवल बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में मात्र एक प्रभाती (प्रातःकाल जागरण के समय का) छन्द लिखा गया है। यह छन्द भक्ति से परिपूर्ण है।
ाण्डपत्र	२४ × १२.५	३५	१०	२८	३०६	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रह्लाद के जन्म-वृत्तान्त, पाठशाला-गमन, विद्या के प्रति अरुचि एवं राम-नाम में आस्था के साथ हिरण्य-कश्यप के क्रोध, प्रह्लाद की यातनाएँ, नृसिंह अवतार, हिरण्यकश्यप का वध एवं प्रह्लाद के सुयश का वर्णन कवि ने चौपाई एवं दोहों के माध्यम से किया है। कृति मनोहारी है।
माण्डपत्र	२३.५ × १२	३२	१०	२७	२७०	पूर्ण	,,	इस कृति में भक्त प्रह्लाद की कथा का वर्णन है। ग्रन्थ दोहा एवं चौपाई छन्दों में लिखित हैं।
माण्डपत्र	१६ × ९.२	२०	७	२०	८८	पूर्ण	डॉ० बलबीर सिंह, दतिया (म०प्र०)	इसमें २२ छन्दों में भगवान् राम और कृष्ण का गुणानुवाद किया गया है।
प्राचीन माण्डपत्र	२४ × १६.५	२५६	१४	१६	१७९२	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में प्राचीनकाल से लेकर समकालीन भक्तिकाल तक के प्रमुख भक्तों का यश-गान किया गया है, जिसके कारण हिन्दी इतिहासज्ञ इसे काफी महत्त्व देते हैं; मूल रचना के साथ इसमें प्रियादास की टीका भी है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
४४५	७६४६/४४७५	भक्तमाल (टीका)	—	—	१८६६ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४४६	७७५८/४३४८	भक्ति	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४४७	७६८६/४३०६	भक्ति योग	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४४८	८०५८/४५४२	भगत विरदावली	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४४६	८०३०/४५१६	भगति विवेक	—	—	१७४४ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	३३ × १७	२७०	११	३६	३०६६६	पूर्ण	डॉ० नवल बिहारी मिश्र, सीतापुर	इसमें कवित्तों में नाभादास द्वारा रचित भक्तमाल की टीका प्रियादास के कवित्त छन्दों में प्रस्तुत की गयी है। इतिहास ग्रन्थों की दृष्टि से यह महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	२१ × १७	३६	१८	२९	७३	अपूर्ण	श्री सोमकान्त त्रिपाठी, नावेल सेण्टर, दतिया (म० प्र०)	इस अपूर्ण एवं खण्डित प्रति में विभिन्न छन्दों में कवि ने अपनी आस्था का अर्घ्य श्रीकृष्ण एवं भगवान् राम के चरणों में अर्पित कर ज्ञान, इच्छा और कर्म का अमर सन्देश दिया है।
माण्डपत्र	३२.५ × २०.५	७६	३२	२४	१८२४	अपूर्ण	डॉ० नवल बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में विभिन्न छन्दों में ज्ञान, भक्ति एवं योग का विवेचन किया गया है।
माण्डपत्र	१६.५ × १२.५	१३	१०	१०	४०	अपूर्ण	श्री श्यामाचरण खरे, दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में भक्तिभाव में ओत-प्रोत होकर कवि ने भगवान् के गुणों का गान किया है। कवि के अनुसार वही भगवान् कबीर के लिए नाम के रूप में, मलूकदास के लिए कृष्ण के रूप में और वही राजा सगर को भी तारने वाले हैं! इसके साथ-ही-साथ प्रह्लाद, नृसिंह आदि के दृष्टान्त हैं। कृति पद्य में है।
माण्डपत्र	२१ × १५.५	१४६	१६	१३	५४२	पूर्ण	डॉ० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर	कीट-दंशित होने से ग्रन्थ स्पष्ट रूप से पढ़ने योग्य नहीं है। यह भक्तिकाव्य का ग्रन्थ है, जिसमें केवल दोहा और चौपाई छन्दों का प्रयोग हुआ है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
४५०	७६२०/४४५४	भजन	—	—	—	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४५१	७८५५/४३६५	भवानी उत्तम चरित्र	—	—	—	हिन्दी	नागरी
४५२	८३८३/४७५७	भ्रमर गीत	—	गुलाब पाठक	१८५३ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४५३	७८७६/४४१३	भारती सरूप	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४५४	७७०६/४३१६	मंजे	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पृ०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१८ × १२	६	११	२२	४५	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	ग्रन्थ की पूर्णता पर किसी भी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता है, क्योंकि रचनाकार द्वारा ग्रन्थान्त में 'इति रामरतनकृत भजन समाप्तम्' ऐसा लिखा है। किन्तु ग्रन्थ के आदि के चार पृष्ठ अप्राप्य हैं। ग्रन्थ का वर्ण्य-विषय रामकथा का गुणगान है।
माण्डपत्र	१६.५ × १२	४१	१०	२४	३०२	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस अपूर्ण ग्रन्थ में अक्षरअनन्य ने माँ भवानी के प्रति अपनी आस्था का सुमन अर्पित किया है। इसकी रचना हरिगीतिका, दण्डक, सुन्दरी आदि छन्दों में हुई है।
माण्डपत्र	२७ × १४	३०	११	३२	३३०	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में विरहगीतों का आकलन किया गया है। ये विरहगीत विविध छन्दों में लिखित हैं। यह श्री हरिमोहन मालवीय द्वारा सम्पादित, होकर हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से प्रकाशित भी हो चुका है।
माण्डपत्र	१७ × ११.५	७	२२	१६	७७	अपूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में देवीलाल, बृजलाल आदि के २५ छन्द लिपिबद्ध किये गये हैं। विषय भक्ति, शृंगार से अनुप्राणित है। इसमें यथास्थान सरस्वती, राधा आदि की वन्दना की गयी है।
आधुनिक माण्डपत्र	२०.५ × १६.५	६	१२	१६	३६	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में रीतिकालीन शैली में भक्ति के पदों की रचना है तथा बीच-बीच में पद्माकर के प्रति सम्बोधन है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
४५५	८०४६/४५३३	रामायण माहात्म्य	१८८२ ई.	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४५६	८०५०/४५३४	बन्दी मोचन	–	बाल· गोविन्द	१८६५ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४५७	७८३६/४३८८	विज्ञान गीता	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४५८	७८७३/४४१०	विज्ञान गीता	–	–	१८०२ ई.	हिन्दी (ब्रज मिश्रित बुन्देली)	नागरी
४५९	७६७४/४४६२	विनय माल	–	–	१८८० ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
६	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१६×१४	१४	१७	२१	१८७	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में 'रामायण माहात्म्य' है, जिसमें बीच-बीच में अनेक अन्तर्कथाएँ भी हैं। ग्रन्थ दोहों और चौपाइयों में लिखित है।
माण्डपत्र	१६.८×१०.५	४०	६	१७	—	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में श्री भगवान् रामचन्द्र के अहिरावण द्वारा बन्दी किये जाने का वर्णन है। हनुमान के पाताल-गमन एवं भगवान् राम के वन्दीमुक्ति के लिए अहिरावण को मारना आदि कथा प्रस्तुत ग्रन्थ का वर्ण्य-विषय है। ग्रन्थ अपूर्ण है। इसके साथ-ही-साथ ग्रन्थ प्राचीन भी है।
माण्डपत्र	२६.५×११.५	२१५	६	३२	१६३५	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में केशवदास ने तत्त्व-चिन्तन पर प्रकाश डाला है। ग्रन्थारम्भ में उन्होंने भाषा की विकास-यात्रा से सम्बद्ध एक दोहा लिखकर भाषाविषयक मान्यता को व्यक्त किया है। ग्रन्थ मुद्रित होने के बावजूद यह प्रति महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	१८×१२	१८१	१८	१६	१६२६	पूर्ण	,,	केशवदास द्वारा रचित इस ग्रन्थ में २१ प्रकाश हैं। इन प्रकाशों से अध्यात्मविषयक चर्चा विभिन्न छन्दों में की गयी है। ग्रन्थ कवि की बहुज्ञता को प्रमाणित करता है।
माण्डपत्र	२३×१६	१६	१४	२०	१४०	पूर्ण	श्री ब्रज-किशोर शर्मा, भरतगढ़, दतिया	इस ग्रन्थ में दयादास ने विनय की शैली अपनाकर ईश्वर के प्रति अपनी आस्था व्यक्त की है। इसमें कृष्ण, राम आदि देवताओं से सम्बद्ध पद्य हैं।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का माम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
४६०	७६६८/४४८७	वियोग शतक	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४६१	७६०१/४४३५	विरह अंग वर्णन (शतक)	१८३८ ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४६२	७८४३/४३६१	विवेक तरंग	–	–	१८३७ ई.	हिन्दी	नागरी
४६३	७८४१/४३६१	विवेक शतक	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४६४	८०२३/४५१५	विषापहार	–	–	–	हिन्दी	नागरी
४६५	८०३१/४५२०	वैराग्य शतक	–	–	१६२६ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
ाण्डपत्र	२२.५ × २१.५	५०	१८	२४	६७५	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर, (उ० प्र०)	इस ग्रन्थ में भक्तिविषयक लगभग ९४ छन्द हैं। इन छन्दों में भक्ति की भाव-विह्वलता का निरूपण कवित्त व घनाक्षरी में किया गया है।
ाण्डपत्र	२२.५ × ११.५	१२	१२	३०	१३५	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में भगवान् से भक्त का विरह कितना असह्य है, विविध दृष्टान्तों के माध्यम से १०२ दोहों में वर्णन किया गया है। यह एक भक्तिपरक काव्य है।
ाण्डपत्र	१६ × ९.२	२०	७	२०	८८	पूर्ण	श्री बलवीर सिंह, दतिया, (म०प्र०)	यह २९ कवित्तों का संग्रह है, जिसमें योग मार्ग, शिव-शक्ति एवं निर्गुण ब्रह्म आदि का प्रतिपादन किया गया है।
ाण्डपत्र	१६.९ × ९.२	६	७	२०	२४	पूर्ण	,,	इसमें १०० दोहों में निर्गुण ब्रह्म का निरूपण किया गया है।
आधुनिक माण्डपत्र	२१ × १६	४	२६	२०	६५	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	इसमें भगवान् की भक्ति का वर्णन है।
आधुनिक माण्डपत्र	३२.५ × २०	५२	१६	१८	४६८	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में चार पचीसी के माध्यम से १०३ छन्दों में इस शतक को पूर्ण किया गया है। ये पचीसी इस प्रकार से हैं—१–जगद्दर्शन पचीसी, २–आत्म-दर्शन पचीसी, ३–तत्त्व-दर्शन पचीसी, ४–प्रेम पचीसी। महाकवि देवदत्त जी ने वैराग्य सम्बन्धी इस शतक में संसार की नश्वरता एवं क्षणभंगुरता आदि को दिखाया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
४६६	८३२४/४७१६	शव्द सागर बानी	–	रामअधीन	१६०१ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४६७	८०७७/४५५२	शिव (माहात्म्य)	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
४६८	७८२२/४३७८	शिवस्तुति	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४६९	८०५४/४५३८	श्री सत्यनारायण कथा	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
४७०	७६८५/४३०५	सतसई	१७६४ ई.	–	१८२३ ई.	हिन्दी (ब्रजपद्य)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
ाण्डपत्र	३२.५ × २५	४१८	२२	२८	७६८४	पूर्ण	श्रीमती रानी टण्डन एवं श्री सन्त-प्रसाद टण्डन, इलाहाबाद	प्रस्तुत ग्रन्थ में विषयानुक्रमणिका के पश्चात् विविध विषयों का यथा शब्दसागर, शब्दलीला, दोहावली इत्यादि में मन को बोधि करने हेतु एवं निर्गुण ब्रह्म की उपासना एवं भक्ति का विवरण है। ग्रन्थ पूर्णरूपेण कीटदंशित है। लिपि से कृति अत्याधुनिक प्रतीत होती है।
ाण्डपत्र	२४.५ × ११.५	१४	७	३२	८४	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में भगवान् शिव के माहात्म्य वर्णन के साथ-ही-साथ उनके दिव्य अलौकिक कार्यों एवं निवास स्थान का वर्णन किया गया है। ग्रन्थ पत्राकार है। लिपि से ग्रन्थ प्राचीन ज्ञात होता है।
माण्डपत्र	१४.५ × १०.५	२	१२	१६	१२	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	सम्वादात्मक शैली में रचित इस ग्रन्थ में यशोदा और शिव की बड़ी सरस वार्ता प्रस्तुत की गयी है।
माण्डपत्र	१६.५ × १४	६३	६	१७	३००	अपूर्ण	अज्ञात	प्रस्तुत ग्रन्थ में भगवान् श्री सत्य-नारायण का स्तवन ६ अध्यायों में प्राप्त होता है। ग्रन्थ का अन्तवाला भाग अप्राप्य है। ग्रन्थ के मध्य में बहुत-सी अन्त-र्कथाएँ निहित हैं।
प्राचीन माण्डपत्र	२४ × १६.५	७५	१८	२४	१०१३	पूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	लिपिकार ने ७०३ दोहों में इस ग्रन्थ को लिपिबद्ध किया है। इसके रचयिता को गोस्वामी तुलसीदास माना है, जो नितान्त भ्रमात्मक है। इस ग्रन्थ में ज्ञान, नीति, भक्ति एवं वैराग्य सम्बन्धी पदों को लिपिबद्ध किया गया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
४७१	७८५४/४३९५	सत्यनारायण कथा	–	–	–	संस्कृत	नागरी
४७२	७९०९/४४४३	सनेह लीला	–	–	१८२६ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४७३	७७८५/४३६४	सप्त भूमिका	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४७४	८२८०/४६८९	स्फुट छन्द	–	–	–	हिन्दी	नागरी (अस्पष्ट)
४७५	८०७२/४५४९	स्फुट पद	–	–	१८५१ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४७६	८००१/४५०८	चर्चरी (स्फुट पद)	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४७७	८३७४/४७५०	स्फुट 'भजन'	–	गुलाब पाठक	१८६९ ई.	हिन्दी (अवधी	नागरी
४७८	८८६१/४९६६	सारगीता	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१६.५ × १२	२४	८	२२	१३२	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस अपूर्ण प्रति में कथावाचक द्वारा सतयनारायण की कथा लिपिबद्ध है।
माण्डपत्र	२१ × ९.५	३२	७	२२	१५४	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर (उ० प्र०)	प्रस्तुत ग्रन्थ में कृष्ण-कथा वर्णित है। उद्धव-गोपी संवाद की कथा बहुत ही मार्मिक है। कृति सम्पूर्णरूप से १२८ दोहों में है।
प्राचीन माण्डपत्र	२२ × १२	५	९	३२	४५	पूर्ण	—	इस ग्रन्थ में परमात्मज्ञान की विवेचना करते हुए कवि ने ब्रह्म को ही मोक्ष का साधन मानकर उसका गुणानुवाद किया है।
माण्डपत्र	१६.५ × १३	५	१२	१३	२४	अपूर्ण	मुजफ्फरनगर	प्रस्तुत ग्रन्थ में निर्वेद भाव से भगवान् की भक्ति का उल्लेख किया गया है।
माण्डपत्र	१७ × १२.५	३०	१३	१७	२०६	पूर्ण	(भेंट स्वरूप) कोटा, राजस्थान	प्रस्तुत ग्रन्थ में २२ पद स्फुट रूप से मिलते हैं, जिसमें कवि ने जीव-स्थिति का ज्ञान एवं माया का आवरण हटाने के लिए निर्वेद भाव से भक्ति का उपदेश दिया है।
माण्डपत्र	२१ ५ × १६.५	२	१८	२४	२७	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इसमें कृष्ण और राम की भक्ति के विषय में कुछ छन्द लिपिबद्ध किये गये है। अन्त में सूरदास का नाम आया है।
माण्डपत्र	२१ × १६.५	६८	१७	१४	४८६	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ सूरदास आदि कवियों के भजनों का संग्रह है।
माण्डपत्र	१६.२ × १०	२५	७	१७	—	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ मे श्रीमद्भगवद्गीता का सारांश ब्रजभाषा गद्य में लिखा गया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
४७६	७६८२/४४६५	सावित्री कथा	–	गौरीशंकर मिश्र	१८६५ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४८०	८३७६/४७ ५२	सुखसनाथ	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४८१	८३४६/४७३२	सुखसागर (भाषाबानी)	–	राम-अधीन	१६०० ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४८२	७७८०/४३६४	सूक्त संग्रह	–	–	१७८५ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४८३	७८७०/४४०८	सूर्यपुराण (अनुवाद)	१८८० ई.	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४८४	७८१०/४३७२	हनुमान बाहुक	–	–	–	हिन्दी (ब्रज मिश्रित अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
६	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२६.५ × १७.५	५६	२२	१६	५१६	पूर्ण (जीर्ण एवं कीट-दंशित)	डॉ० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में महाभारत के उषा-सावित्री कथा का अनुवाद २५ अध्यायों में दोहा व चौपाई छन्दों में वर्णित है। इसकी रचना अजीत सिंह ने करायी है। रचनाकार अज्ञात है।
माण्डपत्र	३८ × ३२.५	१५६	२०	२४	२३८५	अपूर्ण	रायबरेली	ग्रन्थ में भक्ति का प्रतिपादन हुआ है। साथ ही गुरु-महिमा वर्णित है। ग्रन्थ के प्रथम पृष्ठ पर तिथिविषयक संकेत है।
माण्डपत्र	३२ × १८.५	१८३	१३	२६	२१५६	पूर्ण	श्रीमती रानी टण्डन एवं श्री सन्तप्रसाद टण्डन, इलाहाबाद	ग्रन्थ में राम, कृष्ण आदि की अध्यात्मिक, लीलाधाम आदि की गाथाएँ हैं। ग्रन्थ की लिपि अत्याधुनिक एवं ग्रन्थ कीट-दंशित भी है। ग्रन्थ की रचना दोहा, चौपाई एवं सोरठों में की गयी है।
प्रचीन माण्डपत्र	१२ × २२	२४	६	३२	२१६	पूर्ण	अज्ञात	इस सूक्त-संग्रह में ज्ञान, गुरु-दया, भ्रम-विघ्वंस, गुरु-कृपा, उपदेश, ज्ञान, गुरुदेव महिमा, ब्रह्मस्तोत्र आदि विषयों की विवेचना दोहा व चौपाई छन्द में की गयी है।
माण्डपत्र	२२ × ११	२	६	२५	१८३	पूर्ण	डॉ० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर	इसमें सूर्य पुराण का अनुवाद अवधी के दोहा, चौपाई छन्द में किया गया है। अनुवाद अर्वाचीन होते हुए भी भाषायी विकास की परम्परा में महत्त्व-पूर्ण स्थान रखता है। इसमें उन्नीस अध्याय हैं।
माण्डपत्र	१४.५ × ६	४४	५	२०	१३८	अपूर्ण	श्री केशवकिशोर तिवारी, दतिया	इस ग्रन्थ में तुलसीदास ने हनुमान की वन्दना की है।

रामकाव्य

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
४८५	८३७५/४७५१	अध्यात्म रामायण (भषा)	–	मोतीराम	१७५३ ई.	राजस्थानी (गद्य)	नागरी
४८६	८३२६/४७२२	अन्तर्दर्शन (रावण)	–	उदयशंकर भट्ट	१६५७ ई.	हिन्दी (पद्य)	नागरी
४८७	७६७०/४४८६	अवधविलास	–	–	१६०७ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४८८	७६१४/४४४८	उपासना शतक	१८३८ ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४८६	८००३/४५०६	कवित्त रामायन	–	छेदाराइ बन्दीजन	१८३३ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४६०	८२७३/४६८८	कवित्त रामायन के	–	–	१७३६ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
[माण्ड]पत्र	२३ × २२	१५६	२१	२७	२७६४	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में अध्यात्म रामायण की भाषा-टीका गद्य में लिखित है। उत्तरकाण्ड के १० अध्याय तक की कथा इस कृति में प्राप्त होती है।
आधुनिक पत्र	३२.२ × २१·५	२३	२०	३०	४३१	पूर्ण	श्री उदय-शंकर भट्ट	यह एक खड़ीबोली का खण्ड-काव्य है, जिसमें राम और रावण के युद्ध का वर्णन है। ग्रन्थ अत्याधुनिक एवं पत्राकार है।
नवीन माण्डपत्र	२३ × १७	५६५	१४	२०	४९४४	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम की लीलाओं का वर्णन रामचरित मानस के अनुकरण पर किया गया है। ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	२३ × ११.५	१३	१२	२४	११७	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में कवि ने राम-नाम की उपासना पर जोर डालते हुए नाम के महत्त्व का प्रतिपादन किया है। कृति में कुल मिलाकर १०३ दोहे हैं।
माण्डपत्र	२२ × १७	९८	१८	२०	११०३	पूर्ण (जीर्ण)	,,	इसमें लिपिकार ने 'कवितावली' के छन्दों को लिपिबद्ध किया है और उसे कवित्त रामायन की संज्ञा से अभिहित किया है। यद्यपि कवित्त रामायन अलग से तुलसीदास की कोई रचना नहीं है। प्रति कीट-दंशित है।
माण्डपत्र	४५ × १३	४	४०	१८	९०	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में रामायण के सुन्दरकाण्ड की कथा का वर्णन है। साथ ही लंकाकाण्ड की कथा का कुछ अंश कवित्तों के माध्यम से वर्णित है। ये कवित्त संख्या में मात्र २५ हैं। ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
४६१	७६६३/४४८४	कवितावली	१७३७ ई.	–	१८३६ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४६२	८२१५/४६४६	गीतावली	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४६३	७६६२/४५०१	गीतावली	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
४६४	७८१६/४३७४	चिन्प्राण	–	–	–	हिन्दी (ब्रज-मिश्रित अवधी)	नागरी
४६५	७६२२/४४५६	दोहावली	–	ठाकुर-प्रसाद शुक्ल	१ ०५ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४६६	७७३४/४३३६	दोहावली	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पृ०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	३३ × १३	९६	८	४२	१००८	पूर्ण	डॉ० नवल बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में गोस्वामी तुलसीदासकृत 'कवितावली' को लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्थ के अनेक संस्करण विभिन्न स्थानों से मुद्रित हो चुके हैं।
माण्डपत्र	२९.७ × १४.७	१०४	११	३५	१२५१	अपूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में सम्पूर्ण रामायण की कथा पदशैली में दी हुई है। ग्रन्थ पत्राकार, अपूर्ण एवं कीट-दंशित है। ग्रन्थ लिपि के अनुसार प्राचीन ज्ञात होता है।
माण्डपत्र	२४.५ × १५	१४	१३	२०	११४	अपूर्ण	श्रीब्रजकिशोर शर्मा, भरतगढ़, दतिया	गीतावली की यह प्रति अपूर्ण है। इसके अनेक संस्करण गीता प्रेस एवं नवलकिशोर प्रेस लखनऊ से निकल चुके हैं। इसकी रचना गीतिशैली में हुई है।
माण्डपत्र	१२ × ८.५	४०	७	१४	१२६	अपूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में राम को जीवनाधार मानकर, इस भवसागर से पार उतारने की विधि का वर्णन निर्गुण शब्दावली में किया गया है।
माण्डपत्र	२१ × ९.५	६३	९	३३	४८९	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ महाकवि तुलसीदासजी ने दोहावली के नाम से लिख राम-नाम की महिमा का उल्लेख किया। ग्रन्थ में ज्ञान, भक्ति, वैराग्य का प्रतिपादन ४८३ दोहों में किया गया है।
प्राचीन माण्डपत्र	२१.५ × १५	१२४	१६	१७	१०५४	पूर्ण	—	गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित ७०२ दोहों वाले इस ग्रन्थ में भक्ति एवं उपदेशपरक भावों का समावेश किया गया है। दोहों की संख्या के आधार पर इसे सतसई की संज्ञा भी दी जा सकती है।

क्रम स०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का माम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
४९७	८०४१/४५२६	दोहावली	–	–	१८३० ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४९८	८०४३/४५२८	दोहावली	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
४९९	८००४/४५१०	दोहावली रामायण	–	–	१८६६ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५००	७७०२/४३१६	नृत्य राघव मिलन	१७४७ ई	रामसुख	–	हिन्दी (ब्रज पद्य)	नागरी
५०१	७७०३/४३१६	पद्य संग्रह	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५०२	७७४६/४३४१	पदावली रामायण	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२५ × १२.५	५८	१२	३०	६५२	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में ५६५ ललित दोहों में भगवान् श्रीराम के गुणों का वर्णन कवि ने किया है।
माण्डपत्र	२५.५ × १४	४६	१२	३८	६६८	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में गोस्वामी तुलसी-दास जी ने भगवान् श्री राम-चन्द्र जी के गुणानुवाद एवं नीति आदि का वर्णन ४१८ दोहों में किया है। ग्रन्थ की लिपि सुस्पष्ट और पाठ्य है।
माण्डपत्र	२० × १५.५	६५	१२	२०	७०५	पूर्ण	,,	इसमें गोस्वामी तुलसीदास की रचना दोहावली को आद्यन्त लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्थ कीट-दंशित है। इसका प्रकाशन विभिन्न स्थानों से कई बार हो चुका है। प्रति प्रायः अपाठ्य है।
आधुनिक माण्डपत्र	२०.५ × १६.५	६	१५	२०	५६	पूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म०प्र०)	इस ग्रन्थ में राघव से मिलने के लिए पद्यात्मक रूप का आश्रय लिया गया है, जिसमें नृत्यशैली का अनुगमन है। सीता और राम नृत्य करते हैं। हिन्दी के रसिक-सम्प्रदाय के भक्तिकाव्य की दृष्टि से इसका किंचित महत्त्व है।
माण्डपत्र	२०.५ × १६.५	५०	१२	१६	३००	अपूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में तुलसी आदि राम-भक्त कवियों के स्फुट पदों को लिपिबद्ध किया गया है।
माण्डपत्र	२२.५ × १६	७२	१७	२०	७६५	अपूर्ण	,,	इस अपूर्ण ग्रन्थ में किसी राम-भक्त ने तुलसी की रचनाओं में से कुछ स्फुट पदों को लिपिबद्ध किया है। ग्रन्थारम्भ के कुछ पद कीर्तनशैली के अनुकरण कहे जा सकते हैं।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
५०३	७८५७/४३६७	पदावली रामायण	–	–	–	हिन्दी (ब्रज-मिश्रित अवधी)	नागरी
५०४	८०४२/४५२७	बरवै रामायण	–	सीता	१८४३ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५०५	७६६७/४३१४	बारामासी	–	–	–	हिन्दी (ब्रज-मिश्रित अवधी)	नागरी
५०६	७६७५/४४६२	बारामासी	–	गोकुल-प्रसाद	१८५६ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५०७	७८६२/४४००	भजन पदावली	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
देशी कागज	१७.५ × ११.५	२४	१६	१६	१६२	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में रामभक्ति का उल्लेख है और लिपिकार ने इसे गोसाईं तुलसीदास की रचना माना है। परन्तु भाषिक स्तर पर इसके रचयिता उनसे भिन्न प्रतीत होते हैं।
माण्डपत्र	२२ × १२	८	११	२५	१८	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर (उ० प्र०)	प्रस्तुत ग्रन्थ में रामायण की बालकाण्ड से लेकर उत्तरकाण्ड-पर्यन्त की कथा का प्रतिपादन बरवै छन्द में है।
माण्डपत्र	२४.५ × १७.५	८	१४	२४	८४	पूर्ण	श्री नवल-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में राम-रावण की लड़ाई का वर्णन स्फुट छन्दों में करके बारह मासों का सांगोपांग वर्णन किया गया है। ग्रन्थान्त में लिपिकार एवं लिपिकाल का नाम अज्ञात है।
माण्डपत्र	२३ × १६	१४	८	१४	४९	पूर्ण	श्री ब्रज-किशोर शर्मा, भरतगढ़ दतिया (म० प्र०)	तुलसी के नाम पर प्राप्त इसमें बारहों महीनों के अन्तर्गत प्रकृति के व्यापारों का निरूपण किया गया है। इसका शिल्प पक्ष मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास से नितान्त भिन्न है।
माण्डपत्र	१५ × १२.५	२७	१४	२४	२६४	अपूर्ण	श्री हरिदास मुखिया, नौटा (झाँसी)	इस अपूर्ण ग्रन्थ में रामचरित की मुख्य घटनाओं को केन्द्र मानकर भजनों की रचना की गयी है। कहीं-कहीं वनवास जैसे प्रसंगों में अलख जगाकर निर्गुण मत का प्रभाव स्वीकार किया गया है। भजन की शैली में रचित होने के कारण इसे भजन पदावली की संज्ञा दी जा सकती है। इसमें रचयिता का नाम तुलसीदास दिया हुआ है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
५०८	७८०३/४३७०	मरथ की बारामासी	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५०९	७८०६/४३७०	मगनमस्त की बारा-मासी	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५१०	७९९३/४५०१	राम अनुग्रह	१८१६ ई.	प्रधान रघुनाथ सिह	१८४० ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५११	८३९०/४७६३	राम-गीतावली	–	–	१८१२ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५१२	८३५९/४७४१	रामचन्द्रिका	–	–	१८३५ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
आधुनिक माण्डपत्र	१६.५ × ११.५	११	११	१२	४५	पूर्ण	श्री जगदीश-शरण बिलगइयाँ, मधुप पट्टापुर दतिया	बारह मासा शैली में प्रस्तुत इस ग्रन्थ में राम-जन्म की कथा से भरत के राजा होने तक की बात कहकर भाग्य की प्रधानता को प्रमाणित किया गया है। लोक तात्त्विक दृष्टि से इसकी सरसता सराहनीय है।
आधुनिक माण्डपत्र	१६.५ × ११.५	१४	११	१२	५८	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में राम वनगमन से रावण दरबार में अंगद पराक्रम तक का उल्लेख बारहमासा शैली में किया गया है। हनुमान् की सेना के पराक्रम को देखकर देवताओं को अत्यधिक हर्ष हुआ है। इस कथ्य को कवि ने प्रस्तुत किया है।
माण्डपत्र	२४.५ × १५	४५३	१४	२०	३९६४	पूर्ण	श्री ब्रज-किशोर शर्मा, भरतगढ़ दतिया	इस ग्रन्थ में राम अनुग्रह ने 'राम' के अनुग्रह पर वार्ता-शैली में रामायण की सुतीक्ष्ण वाली घटना को लेकर वशिष्ठ एवं राम से वार्ता कराकर अपनी आस्था उनके प्रति विभिन्न छन्दों में व्यक्त की है। ग्रन्थ का शिल्प पक्ष श्रीमद्-भागवत की शैली पर है।
माण्डपत्र	२२ × १६	२२३	११	२५	१९१६	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में रामायण की कथा का आद्योपान्त वर्णन है। ग्रन्थ विविध छन्दों में लिखा गया है। ग्रन्थ कीट-दंशित है।
माण्डपत्र	२२.५ × १६	१७९	२२	२८	३४५२	पूर्ण (जीर्ण)	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में रामायण की कथा का वर्णन आचार्य केशवदास जी ने नाना प्रकार के छन्दों में किया है। ग्रन्थ ३९ प्रकाशों में विभक्त है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
५१३	७९६९/४४८८	रामचन्द्रिका	—	कुशाल दुबे	१८०० ई.	हिन्दी (ब्रज-मिश्रित बुन्देली)	नागरी
५१४	७९९६/४५०४	रामचन्द्रिका	—	—	१८६१ ई.	हिन्दी (ब्रज-मिश्रित बुन्देली)	नागरी
५१५	७९३७/४४७०	रामचन्द्रिका	—	सेवक-राम त्रिपाठी	१७८७ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५१६	७९२५/४४५९	रामचन्द्रिका	—	ठाकुरसिंह	१८३७ ई.	हिन्दी (ब्रज-मिश्रित बुन्देली)	नागरी
५१७	७८३५/४३८७	रामचन्द्रिका (लव कुशाया)	—	—	१८३७ ई.	हिन्दी (बुन्देली ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पृ०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२३ × १४.५	२६४	२२	२०	३६३०	पूर्ण	डॉ० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर	ग्रन्थ की प्रति महत्त्वपूर्ण है। इसमें केशवदास की रामचन्द्रिका को लिपिबद्ध किया गया है।
माण्डपत्र	२०.५ × १८	३१८	१६	२०	३१८०	पूर्ण	श्री ब्रजकिशोर शर्मा, भरतगढ़, दतिया	रामचन्द्रिका की यह पूर्ण प्रति है। इसके लिपिकार का नाम अज्ञात है। ग्रन्थ के अनेक संस्करण अनेक जगहों से निकल चुके हैं। यह रचना केशव के छन्द-ज्ञान-प्रदर्शन को प्रमाणित करती है।
माण्डपत्र	२८ × १५.५	१६५	१२	४८	३६१८	पूर्ण	डॉ० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर (उ० प्र०)	रामचन्द्रिका नामक इस ग्रन्थ की रचना आचार्य केशवदास ने की है, जिसमें उन्होंने राम के यश का वर्णन विविध छन्दों में किया है। 'रामचन्द्र की चन्द्रिका बरनत है वह छन्द' से यही ध्वनि निकलती है कि आचार्य केशवदास छायावादी हैं, कोरे हृदयवादी नहीं। हृदय और बुद्धि में यही अन्तर है।
प्राचीन माण्डपत्र	२६ × १२.५	३७३	८	३६	३३५६	पूर्ण	,,	रामचन्द्रिका की यह प्रति पूर्ण है। इसमें लिपिकार का नाम ठाकुर......सिंह है। ग्रन्थान्त में तुलसी का एक दोहा लिपिकार ने लिपिबद्ध किया है। रामचन्द्रिका की यह प्रति महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	२५ × १२	४८	१०	३०	४५०	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में केशवदास की रामचन्द्रिका के उनतालीसवें प्रकाश को लिपिबद्ध किया गया है। इसमें राम के वंशजों के पराक्रम का परिचय कराया गया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
५१८	७६६२/४२६१	रामचरित मानस	–	मिट्ठूलाल प्रधान	१८१५ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५१९	७६६७/४२६५	रामचरित मानस	१५७४ ई.	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५२०	८२२५/४६५७	रामचरित मानस (अयोध्याकाण्ड)	१५७४ ई.	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५२१	८३३८/४७२७	रामचरित मानस (अयोध्याकाण्ड)	–	शीतल ठठेर	१८५० ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५२२	७६६८/४३१४	रामचरित मानस (अयोध्याकाण्ड)	१५७४ ई.	पण्डित दयाराम तिवारी	१७४३ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	३३ × २२.५	६०४	२०	२४	९०६०	पूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरित मानस' की यह पूर्ण प्रति है, जिसके लिपिकार मिट्ठूलाल प्रधान हैं। इस ग्रन्थ में गोस्वामी जी ने राम के सम्पूर्ण जीवन का चित्रण किया है।
प्राचीन माण्डपत्र	१७ × ३०	१५९	१२	४४	२६२२	अपूर्ण	,,	इस खण्डित प्रति में अयोध्याकाण्ड के ही कुछ प्रसंगों को लिपिबद्ध किया गया है। प्रारम्भ और अन्त के संस्कृत श्लोकों को भी लिपिकार ने लिपिबद्ध नहीं किया है।
माण्डपत्र	२१.५ × १२.५	९८	१६	२४	११७६	अपूर्ण खण्डित	अज्ञ त	प्रस्तुत ग्रन्थ में 'जब ते राम व्याहि घर आये' से प्रारम्भ होकर 'हरन कठिन कलि कलुष कलेषू। महामोह निसि दलन दिनेसू।' तक की अयोध्याकाण्ड की कथा का वर्णन है। आदि का पृष्ठ तथा ९-२७, २९-४८, ५०, ५९, ७३, ८८, १०९ पृष्ठ लुप्त हैं। ग्रन्थ का मंगलाचरण नहीं प्राप्त है।
माण्डपत्र	३५ × १६	२५०	११	३७	३१७९	अपूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में रामचरित मानस के द्वितीय सोपान अयोध्याकाण्ड की कथा का वर्णन है। ग्रन्थ कीट-दंशित है।
माण्डपत्र	२४.५ × १७.५	१६०	२४	२८	३३६०	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस अपूर्ण ग्रन्थ में अयोध्याकाण्ड (रामचरित मानस) को लिपिवद्ध किया गया है। प्रति प्राचीन है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
५२३	७८६१/४४२६	रामचरित मानस (अयोध्याकाण्ड)	–	दुर्गाप्रसाद राम	१८२७ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५२४	७८८८/४४२३	रामचरित मानस (अयोध्याकाण्ड)	–	ब्रह्मवदा सेन	१७५८ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५२५	७८६५/४४३०	रामचरित मानस (अयोध्याकाण्ड)	१५७४ ई.	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५२६	८२२८/४६५६	रामचरित मानस (अरण्यकाण्ड)	–	वैष्णवदास	१७८८ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५२७	८२२३/४६५७	रामचरित मानस (अरण्यकाण्ड)	१५७४ ई.	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२४ × १०	३१६	७	३२	२२१२	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में रामचरित मानस के अयोध्याकाण्ड को लिपिबद्ध किया गया है। लिपिकार ने ग्रन्थारम्भ के मूल संस्कृत श्लोकों को लिपिबद्ध नहीं किया है। ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	२३ × १२.५	२२२	१२	३०	२४९८	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में 'रामचरित मानस' के अयोध्याकाण्ड को लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्थारम्भ में लिपिकार ने रामचरित मानस के मूल प्रारम्भिक संस्कृत श्लोकों को लिपिबद्ध नहीं किया है। ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	२४.५ × १३	४४	११	३०	४५३	अपूर्ण	,,	गोस्वामी तुलीदासकृत राम-चरित्र मानस के द्वितीय सोपान अयोध्याकाण्ड की इस प्रति में भाषा की दृष्टि से राजस्थानी का प्रयोग बराबर मिलता है। ग्रन्थ का वर्ण्य-विषय अपूर्ण है।
माण्डपत्र	२३.१ × १२.७	७०	१०	२८	६१२	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में रामचरित मानस के अरण्यकाण्ड की कथा का वर्णन है। प्रतिलिपिकर्ता का नाम वैष्णवदास लिखा गया है।
माण्डपत्र	१९.५ × १२	२४	८	२०	१२०	अपूर्ण खण्डित	अज्ञात	प्रस्तुत ग्रन्थ में कथा 'सुनत अगस्त तुरत उठि धाए। हरि बिलोकि लोचन जल छाए।' से प्राप्त होती है और अन्त की कथा का एक सोरठा अधूरा है। मध्य के कुछ पृष्ठ कृति में नहीं हैं।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
५२८	८२२१/४६५५	रामचरित मानस (अरण्यकाण्ड)	१५७४ ई.	–	१८७८ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५२९	८२२०/४६५४	रामचरित मानस (अरण्यकाण्ड)	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५३०	७६६९/४२९७	रामचरित मानस (अरण्यकाण्ड)	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५३१	७६९९/४३१४	रामचरित मानस (अरण्यकाण्ड)	१५७४ ई.	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५३२	७९०२/४४३६	रामचरित मानस (अरण्यकाण्ड)	–	–	१८५७ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५३३	७९२७/४४६१	रामचरित मानस (अरण्यकाण्ड)	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
ाण्डपत्र	२७ × १३	३३	९	३४	३१५.५	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में रामचरित मानस के अरण्यकाण्ड की कथा का वर्णन है। लिपि आधुनिक होने के कारण सुस्पष्ट एवं पाठ्य है। ग्रन्थ पत्राकार है।
नाण्डपत्र	२५ × १२	६७	१०	३०	६२८	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में रामचरित मानस के अरण्यकाण्ड की कथा का वर्णन है। ग्रन्थ अपूर्ण है, ग्रन्थ की अन्तिम चौपाई 'पुनि सादर बोले मुनि नारद। सुनहु राम गुन ग्यान विसारद।' तक है। ग्रन्थ यत्र-तत्र कीट-दंशित है। मध्य के ६ पृष्ठ अप्राप्य हैं। प्रति पुरानी है।
माण्डपत्र	३४ × १५.५	३४	१४	४८	७१४	पूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	तुलसीकृत मानस के अरण्य-काण्ड की इस प्रतिलिपि में प्रारम्भिक संस्कृत श्लोकों को लिपिबद्ध किया गया है। दोहा, चौपाई छन्द में इसकी रचना हुई है।
नाण्डपत्र	२४.५ × १७.५	५२	२०	२२	७१५	पूर्ण	,,	तुलसीकृत मानस के अरण्य-काण्ड की कथा को लिपिबद्ध किया गया है। अन्त में लिपिकार ने क्षमा-याचना करते हुए भगवान् की वन्दना की है।
माण्डपत्र	२७ × १३	४४	११	३५	५२३	पूर्ण	डॉ० नवल बिहारी मिश्र, सीतापुर (उ० प्र०)	प्रस्तुत ग्रन्थ में रामचरित मानस के तृतीय सोपान अरण्य-काण्ड की कथा वर्णित है।
माण्डपत्र	२२.५ × ११	५२	१२	३२	६२४	अपूर्ण खण्डित	,,	इस अपूर्ण ग्रन्थ में रामचरित मानस के अरण्यकाण्ड को लिपिबद्ध किया गया है। प्रति कीट-दंशित है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
५३४	८२२२/४६५६	रामचरित मानस (उत्तरकाण्ड)	१५७४ ई.	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५३५	७६६५/४४८६	रामचरित मानस (उत्तरकाण्ड)	–	लेखनी मिश्र	१८५८ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५३६	८२१६/४६५३	रामचरित मानस	–	वैष्णव-दास	१७८८ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५३७	७७८६/४३६६	रामचरित मानस (किष्किन्धाकाण्ड)	–	–	१८४८ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५३८	७८३७/४३८६	रामचरित मानस (किष्किन्धाकाण्ड)	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५३९	७६६८/४२६६	रामचरित मानस (किष्किन्धाकाण्ड)	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
६	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२१.८ × १२.३	२०६	८	२२	११४६	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में रामचरित मानस के उत्तरकाण्ड की कथा का वर्णन है। ग्रन्थ अपूर्ण है। ग्रन्थ की अन्तिम चौपाई यह है—'यह विधि श्रमित मुक्ति मन गुनेऊ। मुनि उपदेशन…… ।' ग्रन्थ की लिपि सुपाठ्य है।
प्राचीन माण्डपत्र	२६ × २०	८१	२१	२४	१२७६	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में रामचरित मानस के उत्तरकाण्ड को लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्थ के अन्त में संस्कृत के मूल श्लोकों का अभाव है।
माण्डपत्र	२३.५ × १२	५०	१०	२४	३७५	पूर्ण	,,	प्रस्तुत कृति में रामचरित मानस के चतुर्थ सोपान की कथा का वर्णन है।
माण्डपत्र	१७ × ११.५	८४	११	११	३१८	अपूर्ण	श्री मुन्नालाल परसारिया, दतिया	इस अपूर्ण ग्रन्थ में रामचरित मानस के किष्किन्धाकाण्ड को लिपिबद्ध किया गया है।
माण्डपत्र	१७ × १२	६०	८	१६	२४०	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया	इस खण्डित प्रति में रामचरित मानस के किष्किन्धाकाण्ड को लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्थारम्भ में प्रारम्भिक श्लोकों का अभाव है। ग्रन्थ का आरम्भ 'कवन हेत बन विचरहु स्वामी' से हुआ है।
माण्डपत्र	३४ × १५	१६	१२	५०	२८६	अपूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में लिपिकार ने राम-चरित मानस के किष्किन्धा-काण्ड को लिपिबद्ध किया है। प्रारम्भ के संस्कृत श्लोकों को इसमें लिपिबद्ध नहीं किया गया है। ग्रन्थ अपूर्ण है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
५४०	७७२८/४३३०	रामचरित मानस (किष्किन्धाकाण्ड)	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५४१	७६००/४४३४	रामचरित मानस (किष्किन्धाकाण्ड)	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५४२	७६१३/४४४७	रामचरित मानस (किष्किन्धाकाण्ड)	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५४३	८२२६/४६६०	रामचरित मानस (बालकाण्ड)	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५४४	८२२७/४६५८	रामचरित मानस (बालकाण्ड)	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५४५	८२२४/४६५७	रामचरित मानस (बालकाण्ड)	१५७४ ई.	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२२ × १७	२२	१६	१८	१९८	अपूर्ण	श्री बलवीर सिंह, दतिया	इस ग्रन्थ में रामचरित मानस के किष्किन्धाकाण्ड का प्रारम्भ व अन्त का अंश लिपिबद्ध नहीं है।
माण्डपत्र	२७ × १३.५	५२	९	३५	५१३	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ बहुत ही स्पष्ट रूप में लिखा गया है। गीता प्रेस से प्रकाशित रामचरित मानस से इसमें कुछ भिन्न चौपाइयाँ भी हैं।
माण्डपत्र	२३.५ × ११.५	४४	८	३२	३५२	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में रामचरित मानस के किष्किन्धाकाण्ड की कथा का वर्णन है। इसमें वालि-सुग्रीव-जन्म वर्णन एवं वरदान प्राप्त करने की कथा, उसके बाद दुदुम्भी नामक राक्षस से बालि के युद्ध का अतिरिक्त वर्णन है। ग्रन्थ यत्र-तत्र कीट-दंशित है।
माण्डपत्र	२७ × १५.४	१६	१२	३२	१९२	अपूर्ण	मुजफ्फरनगर	प्रस्तुत ग्रन्थ में रामचरित मानस के बालकाण्ड की कथा का वर्णन है। ग्रन्थ के आदि-अन्त के बहुत से पृष्ठ अप्राप्य हैं। ग्रन्थ लिपि से प्राचीन जान पड़ता है।
माण्डपत्र	२६ × १४	३८८	८	२४	२३२८	अपूर्ण	मुजफ्फरनगर	प्रस्तुत ग्रन्थ में रामचरित मानस के बालकाण्ड की कथा का उल्लेख हुआ है। ग्रन्थ लिपि से प्राचीन है, किन्तु इसका अधिकांश भाग कीटदंशित एवं भग्नावस्था में है।
माण्डपत्र	२०.५ × १२.५	५१	९	१८	२५८	अपूर्ण	अज्ञात	प्रस्तुत ग्रन्थ में मानस के बालकाण्ड की कथा का वर्णन है। आदि के १५ दोहे अप्राप्य हैं। साथ-ही-साथ मध्य के कई पृष्ठ ग्रन्थ में नहीं हैं।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
५४६	८३३७/४७२७	रामचरित मानस (बालकाण्ड)	–	–	१८६५ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५४७	८३४३/४७२९	रामचरित मानस (बालकाण्ड)	१५७४ ई.	–	१८५१ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५४८	८३३६/४७२७	रामचरित मानस (बालकाण्ड)	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५४९	७९७२/४४९१	रामचरित मानस (बालकाण्ड)	–	–	१८३६ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५५०	७८८९/४४२४	रामचरित मानस (बालकाण्ड)	–	–	१७८७ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५५१	७९२३/४४५७	रामचरित मानस (बालकाण्ड)	१५७४ ई.	छविनाथ पण्डित	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	३३.५ × १८	४५	१३	४६	८८३	अपूर्ण	–	प्रस्तुत ग्रन्थ में रामचरित मानस के बालकाण्ड की कथा का वर्णन है। ग्रन्थ खण्डित, अपूर्ण एवं पत्राकार है। ग्रन्थ की लिपि अत्याधुनिक है। ग्रन्थ कीट-दंशित है।
माण्डपत्र	२६.५ × १७.५	३५३	२३	१६	४०५६	पूर्ण	श्री मातोम्बर द्विवेदी, श्रीनिवास-धाम, मिरजापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में रामचरित मानस के प्रथम सोपान की कथा का वर्णन किया गया है। ग्रन्थ की लिपि अति प्राचीन प्रतीत होती है।
माण्डपत्र	३३ × १७.५	१०४	११	४०	१४३०	अपूर्ण	–	प्रस्तुत ग्रन्थ में रामचरित मानस के प्रथम सोपान की कथा वर्णित है। ग्रन्थ खण्डित, अपूर्ण एवं पत्राकार है। ग्रन्थ की दशा जीर्ण-शीर्ण है एवं लिपि से यह अति प्राचीन ज्ञात होता है।
प्राचीन माण्डपत्र	२५ × १५.५	३५६	१८	१८	३६०५	पूर्ण	–	इस ग्रन्थ में रामचरित मानस के बालकाण्ड को लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्थ पूर्ण है।
माण्डपत्र	२४ × १२	२७४	१२	३२	३२८८	पूर्ण	डॉ० नवल-विहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में 'रामचरित मानस' के बालकाण्ड को आद्यन्त लिपिबद्ध किया गया है।
माण्डपत्र	२३ × १२.५	१८२	१३	३६	२६६१	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में लिपिकाल लिपिकार ने अवश्य ही दिया था, किन्तु सम्वत् वाला भाग कृति में अप्राप्य है। हाँ, लिपिकाल देखने में अवश्य ही प्राचीन लगता है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
५५२	७९३९/४४७२	रामचरित मानस (बालकाण्ड)	–	–	–	हिन्दी (अवधी-ब्रज)	नागरी
५५३	८३३९/४७२७	रामचरित मानस (लंकाकाण्ड)	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५५४	७९६६/४४८६	रामचरित मानस (लंकाकाण्ड)	–	–	१८५८ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५५५	७६८३/४३०४	रामचरित मानस (लंकाकाण्ड)	–	लाला द्वारिका	१८४१ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५५६	७७२७/४३३०	रामचरित मानस (लंकाकाण्ड)	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	४० × १६	६६४	१०	५४	१६७७४	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ के प्रारम्भ में संस्कृत के कुछ भक्तिपरक श्लोक लिपिबद्ध किये गये हैं। इसके बाद बालकाण्ड के दोहों की टीका ब्रजभाषा में की गयी है। अवधी और टीका की भाषा के रूप में ब्रज के संक्रमण की दृष्टि से यह महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	३२.५ × १७	७८	१०	२७	६५८	अपूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में रामचरित मानस के षष्ठ-सोपान लंकाकाण्ड की कथा का वर्णन हुआ है। ग्रन्थ पत्राकार, खण्डितावस्था में अपूर्ण है। ग्रन्थ की लिपि अत्याधुनिक है। ग्रन्थ कीट-दंशित है।
प्राचीन माण्डपत्र	२६ × २०	१०६	२१	२४	१६१६	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में रामचरित मानस के लंकाकाण्ड को लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्थारम्भ में मानस के समारम्भ संस्कृत श्लोकों को लिपिबद्ध नहीं किया गया है। लिपिकार ने ग्रन्थ के अन्त में एक सवैया लिखा है, जिसमें लिपिकार का नामोल्लेख नहीं है।
माण्डपत्र	२३.५ × १६.५	१४२	२०	२२	१९५३	अपूर्ण	श्री हरदयाल सक्सेना, मु० पो० बरहा, जिला भिण्ड (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में रामचरित मानस के लंकाकाण्ड को लिपिबद्ध किया गया है। काण्ड के प्रारम्भ के अंश इस ग्रन्थ में नहीं हैं।
माण्डपत्र	२२ × १७	९०	२२	२८	१५४०	अपूर्ण	श्री बलबीर सिंह, दतिया (म० प्र०)	रामचरित मानस के लंकाकाण्ड को लिपिबद्ध किया गया है, जिसमें प्रारम्भ के ३६ दोहे नहीं हैं।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
५५७	७७२६/४३२६	रामचरित मानस (लंकाकाण्ड)	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५५८	७८६०/४४२५	रामचरित मानस (लंकाकाण्ड)	–	वैष्णव-दास	१७८२ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५५९	७८८७/४४२२	रामचरित मानस (लंकाकाण्ड)	–	वाकल मगजराज चौहान	१८७७ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५६०	७९०८/४४४२	रामचरित मानस (लंकाकाण्ड)	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५६१	७९६७/४४८६	रामचरित मानस (सुन्दरकाण्ड)	–	लेखनी मिश्र	१८५८ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५६२	७९७६/४४९२	रामचरित मानस (सुन्दरकाण्ड)	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५६३	७६७०/४२९८	रामचरित मानस (सुन्दरकाण्ड)	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५६४	७८८६/४४२१	रामचरित मानस (सुन्दरकाण्ड)	–	रामजी उसहा	१८३३ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२२ × १३.५	२८०	१४	१६	१६६०	अपूर्ण	श्री हरिदास मुखिया, झाँसी	यह रामचरित मानस के लंकाकाण्ड की खण्डित प्रति है, जिसमें लिपिकार व लिपिकाल दोनों का उल्लेख नहीं है।
माण्डपत्र	२३ × १३	१९४	१२	२६	१८९२	पूर्ण	डॉ० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में रामचरित मानस के लंकाकाण्ड को लिपिबद्ध किया गया है।
नवीन माण्डपत्र	२७ × १४	२९२	९	३४	२९५३	पूर्ण	,,	इसमें रामचरित मानस के लंकाकाण्ड को लिपिबद्ध किया गया है। प्रति सुपाठ्य है।
माण्डपत्र	२९.३ × १३.५	१४०	१०	३५	१५३१	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में रामचरित मानस के षष्ठ-सोपान लंकाकाण्ड की कथा का वर्णन है। ग्रन्थ यत्र-तत्र कीट-दंशित है।
प्राचीन माण्डपत्र	२६ × २०	३४	२१	२२	४९८	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में रामचरित मानस के सुन्दरकाण्ड को लिपिबद्ध किया गया है।
माण्डपत्र	२३ × १६	३०	१६	२०	३००	अपूर्ण	श्री ब्रजकिशोर शर्मा, भरतगढ़, दतिया (म० प्र०)	इसमें रामचरित मानस के सुन्दरकाण्ड को लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्थ अपूर्ण है। ग्रन्थारम्भ 'जामवन्त के वचन सुहाए' से हुआ है।
माण्डपत्र	३४ × १५	२७	८	५०	२३८	अपूर्ण	श्री केशवकिशोर तिवारी, दतिया	इस अपूर्ण ग्रन्थ में हनुमान् जी के पराक्रम का वर्णन किया गया है।
माण्डपत्र	२१ × ११	७३	८	३२	५८४	पूर्ण	डॉ० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में गोस्वामी तुलसीदासकृत रामचरित मानस के सुन्दरकाण्ड को लिपिबद्ध किया गया है। मानस के मूल प्रारम्भिक श्लोकों को इसमें लिपिबद्ध किया गया है। प्रति यत्र-तत्र कीट-दंशित है।

क्रम स०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
५६५	७६०३/४४३७	रामचरित मानस (सुन्दरकाण्ड)	–	–	१८७८ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५६६	७६१६/४४५०	रामचरित मानस (सुन्दरकाण्ड)	–	–	१७८८ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५६७	७८६७/४४३२	रामनाम शतक	१८३८ ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५६८	७८६४/४४२६	राम सलाका	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५६९	७६०५/४४३९	रामसलाका	–	–	१८८० ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२६.५ × १२.५	६२	६	३३	५७३	पूर्ण	डॉ० नवल-विहारी मिश्र, सीतापुर (उ० प्र०)	प्रस्तुत ग्रन्थ में सुन्दरकाण्ड की कथा का वर्णन है। ग्रन्थ के मध्य में कुम्भकरण के निद्रा का भी वर्णन है। बीच-बीच में कुछ चौपाई और दोहा अधिक प्राप्त हैं, जो आजकल रामचरित मानस में अप्राप्य हैं।
माण्डपत्र	२३ × १२.७	५०	११	३२	५५०	पूर्ण	,,	इस कृति में गोस्वामी तुलसी-दासकृत रामचरित मानस के सुन्दरकाण्ड की कथा का वर्णन है।
माण्डपत्र	२३.५ × ११.५	१२	१२	३२	१४४	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में कवि अनेक शास्त्रों के माध्यम से राम-नाम के महत्त्व का वर्णन करता है। कुल मिलाकर इसमें १०२ दोहा छन्द हैं। ग्रन्थान्त में इनके नाम से ५ शतक लिखे हुए हैं—ऐसा प्रतीत होता है।
माण्डपत्र	१६.५ × ११	५०	१५	१३	३४	अपूर्ण	,,	'राम सलाका' नामक ग्रन्थ का प्रतिपाद्य विषय रामचरित वर्णन है। इस ग्रन्थ में राम-जन्म से लेकर सुन्दरकाण्ड की सेतुबन्ध तक की कथा पाँच सर्गों में वर्णित है। प्रत्येक सर्ग में सात सप्तक हैं। दोहा छन्द में सम्पूर्ण रचना लिखित है। इनकी संख्या कुल मिलाकर २३७ है।
माण्डपत्र	१६ × १३.७	५६	११	२४	४८७	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस कृति में राम के चरित्र का सम्पूर्ण वर्णन अर्थात् बालकाण्ड से लेकर लवकुशकाण्ड तक का वर्णन है। इसमें सात सर्ग हैं। प्रति सर्ग में सात सप्तक हैं और प्रति सप्तक में सात दोहे हैं।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
५७०	७६४८/४४७४	रामाश्वमेघ (भाषानुवाद)	–	मधुसूदन दास	१८३२ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५७१	८०४४/४५२६	रामाज्ञा प्रश्न	–	–	१८६८ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५७२	८६६६/४६६६	विनय पत्रिका	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५७३	७७१३/४३१६	विनय पत्रिका	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागर्र

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
६	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	३१ × १६	२६३	१३	४२	४४८७	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में पद्म-पुराण की रामाश्वमेघ की कथा का भाषानुवाद किया गया है। इसकी रचना दोहा, चौपाई, सोरठा छन्दों में की गयी है। ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है। यह ग्रन्थ पत्राकार है।
माण्डपत्र	१७.५ × ११.५	६०	१०	२३	४३१	पूर्ण	श्री ब्रज-किशोर शर्मा, भरतगढ़, दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में रामचरित मानस की कथा का वर्णन गोस्वामी तुलसीदास जी ने बालकाण्ड से आरम्भ कर उत्तरकाण्ड तक सात काण्डों में सात सप्तकों के माध्यम से किया है। प्रत्येक सप्तक में सात दोहे हैं। भगवान् राम से आज्ञा लेकर प्रश्न पूछने के लिए एवं उसका शुभाशुभ फल ज्ञात करने के लिए ग्रन्थ लिखा गया है।
माण्डपत्र	१६.५ × १२	१०५	१६	११	६६६	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में १०५ छन्द हैं, जिसमें मंगलाचरण से प्रारम्भ कर 'निहसत राम' इस छन्द तक का उल्लेख है। ग्रन्थ अपूर्ण एवं कीट-दंशित है। कीट-दंशित होने के कारण अपाठ्य है। प्रकाशित विनय पत्रिका से यह कृति कुछ भिन्न-सी प्रतीत होती है।
माण्डपत्र	२५ × १६.५	१६२	१७	१६	१७३२	अपूर्ण	श्री बलबीर सिंह दतिया, (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में विनय की शैली में तुलसीदास के विनय पत्रिका के पदों को लिपिबद्ध किया गया है, जिसमें लिपिकार का उल्लेख नहीं हैं।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
५७४	७७१६/४३२२	विनय पत्रिका	–	इन्दपूर्ण चौबे	१८३४ ई.	हिन्दी (ब्रजभाषा)	नागरी
५७५	८०४७/४५३१	विनय पत्रिका	–	–	१८५३ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५७६	८३९५/४७६६	विनय पत्रिका की टीका	–	–	–	हिन्दी (ब्रजभाषा गद्य)	नागरी
५७७	७७०१/४३१६	सिया सहचरी	–	कालिका प्रसाद	१८४८ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५७८	८०४६/४५३०	स्तुति संग्रह	–	गंगाप्रसाद मिश्र	१८८१ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२४.५ × १६.५	१६६	११	३०	२०२६	पूर्ण	श्री बलवीर सिंह, दतिया	इस ग्रन्थ में तुलसीदासकृत विनय पत्रिका को लिपिबद्ध किया गया है। इसके साथ ही ग्रन्थ के अन्त में रामायन (रामचरित मानस) की आरती लिखी गयी है।
माण्डपत्र	२३.५ × १२	२५६	८	२३	१५१४	पूर्ण	–	गोस्वामी तुलसीदास जी रचित ग्रन्थ पत्राकार एवं पूर्ण है। कृति पूर्णरूपेण कीट-दंशित है। लिपि से ग्रन्थ आधुनिक ज्ञात होता है।
माण्डपत्र	३३ × २३.५	१६०	२८	२५	३८६४	अपूर्ण	मुजफ्फरनगर	प्रस्तुत ग्रन्थ में गोस्वामी तुलसीदासकृत विनय पत्रिका की टीका की गयी है। यह टीका हिन्दी गद्य में है। टीकाकार अज्ञात है। ग्रन्थ में ७७ छन्दों की टीका की गयी है।
आधुनिक माण्डपत्र	२०.५ × १६.५	१८	१४	२४	१८९	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में कवि ने सीता जी की सखियों के माध्यम से अपनी बात कहने का प्रयास किया है। इस प्रकार की शैली में कवि का व्यक्तित्व दुहरा हो जाता है। यह ग्रन्थ कवि ने विश्वनाथ जू को समर्पित किया है। यह भी रसिक सम्प्रदाय से सम्बद्ध है।
माण्डपत्र	१६ × १०	४५	५	१९	१३४	पूर्ण	श्री श्यामाचरण खरे, दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में गोस्वामी तुलसीदासकृत रामचरित मानस में प्रयुक्त स्तुति विषयक सम्पूर्ण छन्दों के साथ ही भूतनाथ शंकर की संस्कृत के आठ श्लोकों में वन्दना की गयी है। इसके साथ-ही-साथ कुछ महामंत्र जैसी चौपाइयाँ लिखी हुई हैं।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
५७९	७७६०/४३५८	हनुमान कवच मोचन	—	—	१८४९ ई.	हिन्दी (ब्रज मिश्रित अवधी)	नागरी
५८०	७८५३/४३९५	हनुमान चालीसा	—	—	—	हिन्दी	नागरी
५८१	८०३६/४५२१	हनुमान चालीसा	—	—	१८८७ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५८२	८३६०/४७४२	हनुमान वाहुक	—	—	—	हिन्दी (अवधी)	नागरी
५८३	७८६३/४४०१	हनुमान वाहुक	—	मेहरबान दुबे	१८६१ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५८४	७७६३/४३५३	हनुमान विक्रम	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
६	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१७.५ × १२.५	३६	६	२०	२०३	पूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में कवि ने हनुमान् जी की वन्दना कवित्त सवैयों में की है। यह तुलसीकृत हनुमान बाहुक की शैली में लिखा गया है। यह ग्रन्थ रामचरित मानस के रचयिता तुलसीदास से भिन्न तुलसीदास का है।
माण्डपत्र	१६.५ × १२	८	८	१८	३६	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में चालीसा छन्दों में हनुमान् की स्तुति की गयी है। इसके रचयिता मानसकार गो० तुलसीदास से भिन्न हैं।
माण्डपत्र	२२.५ × १४.५	३	२०	२१	४	पूर्ण	डॉ० नवल बिहारी मिश्र, सीतापुर	ग्रन्थ में हनुमान् जी के विविध कार्यों का उल्लेख स्तवन शैली में दिया गया है. जिसमें ४० चौपाइयाँ और ३ दोहे हैं।
माण्डपत्र	२३ × १६.५	२०	१३	२१	१७१	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में गो० तुलसीदास जी ने व्याधि दूर करने हेतु पवनसुत हनुमान् की स्तुति की है। साथ-ही-साथ इसमें हरिहर की भी वन्दना है। कृति में कुछ अधिक छन्द हैं जो प्रकाशित हनुमान बाहुक से भिन्न हैं। यह अपूर्ण ग्रन्थ पत्राकार है।
माण्डपत्र	२५.५ × १३	२५	८	३८	२३८	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर (उ० प्र०)	हनुमान् बाहुक नामक इस ग्रन्थ में तुलसी के ५२ छन्दों को लिपिबद्ध किया गया है। गीता प्रेस से प्रकाशित हनुमान बाहुक संस्करण से इसमें पर्याप्त भिन्नता है।
माण्डपत्र	२३.५ × १६.५	७	२२	२७	१३०	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म०प्र०)	इस अपूर्ण ग्रन्थ में हनुमान् जी के पराक्रम का पद्यबद्ध वर्णन किया गया है।

विविध

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
५८५	८३२०/४७१६	अज्ञात (समुद्र मन्थन)	–	–	१६०२ ई.	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
५८६	७७५४/४३४४	अहिंसा पच्चीसी	१९१७ ई.	–	१९१७ ई.	हिन्दी	देवनागरी
५८७	७६९०/४३०७	गुरुप्रकाश	१८४७ ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५८८	७७११/४३१९	ग्वाल पहेली	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५८९	७७६७/४३५७	चतुर्दिशतिनाम	–	–	–	प्राकृत	नागरी
५९०	८११०/४५८३	चनुसूरजसरोदय	–	–	१८५४ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५९१	८३४९/४७३४	चन्द्रलोक	–	डॉ०राम-कुमार वर्मा	१९६० ई.	हिन्दी गद्य	नागरी
५९२	७७७२/४३६१	तीरंदाजी	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५९३	८२८९/४६९१	दली (दिल्ली) की पातसाही	–	–	–	हिन्दी (गद्य)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२६ × ११	३४	१०	४०	४२५	अपूर्ण	अज्ञात	ग्रन्थ का आदि पृष्ठ अप्राप्त होने से शीर्षक ज्ञात नहीं हो पाता। कृति में समुद्र-मन्थन से प्राप्त रत्नों की कथा का उल्लेख है।
आधुनिक माण्डपत्र	१८.५ × १४	१४	१६	१८	१२६	पूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म०प्र०)	अहिंसा के महत्त्व का वर्णन इस ग्रन्थ में किया गया है। लेखक ने यह संकेत किया है कि इसकी छन्द-रचना समयसार नाटक भाषा के अनुसार है।
माण्डपत्र	२३ × १६.५	४९	१२	१६	२९४	अपूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में कवि ने गणित के सिद्धान्तों पर पद्यात्मक शैली में विचार प्रकट किया है।
माण्डपत्र	२५ × १६.५	१४	१३	१८	१०२	पूर्ण	श्री बलबीर-सिंह, दतिया	इस ग्रन्थ में गोचारण करते हुए वार्तालाप की शैली में बालकों की पहेली का उल्लेख है।
माण्डपत्र	२३ × १०.५	४	१४	२६	६३	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	इस ग्रन्थ में चारों दिशाओं की वन्दना की गयी है।
माण्डपत्र	२० × १०.५	३३	७	२२	—	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में सूर्य-चन्द्रनाड़ी के अनुसार शुभाशुभ कर्म एवं कर्मफल तथा तदनुसार कर्तव्या-कर्तव्य का वर्णन है।
माण्डपत्र	३२ × २०	१७	३२	२०	३४०	पूर्ण	डॉ० राम-कुमार वर्मा, इलाहाबाद	प्रस्तुत एकांकी नाटक डॉ० रामकुमार वर्मा द्वारा लिखा गया है।
माण्डपत्र	—	१४	११	१३	६३	पूर्ण	श्री बलबीर-सिंह, दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में तीर चलाने की कला का वर्णन है।
माण्डपत्र	१५ × १३	१८	१०	१२	८७	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	इसमें मध्यकालीन राजाओं के नाम एवं काल वर्णित हैं। यह हिन्दी गद्य का प्रारम्भिक रूप है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
५९४	७८१७/४३७५	धनतेरस के पद	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५९५	७६८१/४३०३	धनुर्विचार	१८१० ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५९६	७६८०/४३०३	धनुर्विद्या	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५९७	७७७४/४३६१	धनुर्वेद	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५९८	७७७१/४३६१	धनर्वेद (भाषा)	१७४४ ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
५९९	७७४९/४३४२	नशेबाजों की लावनी	–	–	–	हिन्दी (उर्दू मिश्रित)	नागरी
६००	८३३०/४७२२	नहुषनिपात	–	उदयशंकर भट्ट	–	हिन्दी (खडीबोली)	नागरी
६०१	७७४७/४३४२	पत्नमालिका	–	–	–	हिन्दी	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र० पृ०	अक्षर प्र० पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
ाण्डपत्र	२१ × १४.५	१०	१५	१२	५६	पूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में 'धनतेरस' त्यौहार में युवतियों द्वारा गाये जाने-वाले पदों को संकलित किया गया है। विभिन्न छन्दों में राधा और कृष्ण के लीलामय रूप की झाँकी प्रस्तुत की गयी है।
ाण्डपत्र	२४.५ × १६	५३	१०	२६	४३६	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में धनुष की संरचना, उसके रख-रखाव, उपयोगिता, धनुष को किस प्रकार, कितने कोण से, किस तरफ रखकर युद्ध-क्षेत्र में प्रयोग करना चाहिए, इन सब का विवेचन है।
ाण्डपत्र	२४.५ × १६	१२	१५	३२	३८०	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में धनुर्विद्या के साथ युद्ध के विभिन्न आयुधों का वर्णन किया गया है। धनुष एवं बाण के गुण-दोष, संरचना आदि का भी विवेचन है।
ाण्डपत्र	१६.५ × १२.५	६४	२०	२०	८००	पूर्ण	श्री बलवीर-सिंह, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में धनुर्विद्या के माध्यम से स्वार्थ एवं परमार्थ-प्राप्ति का उल्लेख चौपाई एवं दोहा छन्द में किया गया है।
ाण्डपत्र	१६.५ × १२.५	५८	११	१३	२६४	अपूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में धनुष-संचालन-विधि है।
ाण्डपत्र	१८.५ × १४.५	६	१४	१८	४७	पूर्ण	श्री हर दयाल सक्सेना, बरहा भिण्ड (म०प्र०)	सात सखियों के माध्यम से कथोपकथन क्रम में नशेबाजों के सम्बन्ध में चर्चा है।
ाण्डपत्र	३२.५ × २०	१८	३२	१६	२८८	पूर्ण	श्री उदयशंकर भट्ट जी	प्रस्तुत ग्रन्थ में नहुष के इन्द्रत्व-प्राप्ति, सप्पर्षिशाप से सर्पयोनि-प्राप्ति की कथा है।
ाण्डपत्र	१८.५ × १४.५	२	१३	१७	१४	पूर्ण	श्री हरदयाल सक्सेना, भिण्ड, म०प्र०	दो पृष्ठों के गद्य में पत्र-लेखन के सम्बन्ध में उल्लेख किया गया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६०२	८३३४/४७२५	पार्वती	–	उदयशंकर भट्ट	–	हिन्दी	नागरी
६०३	७७३६/४३३७	प्रबोध चन्द्रोदय	१७५६ ई.	गनेस	१८२७ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६०४	७६६६/४५०७	बिहार के ठाकुरों की वंशावली	१६२६ ई.	–	–	हिन्दी	नागरी
६०५	८२५८/४६८०	भारत सारसमुच्चय	१५८६ ई.	देवीदत्त	१७८८ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
६०६	८२१६/४६५०	भोगल (भूगोल) पुराण	–	रामरतन	१७८६ ई.	हिन्दी (गद्य)	नागरी
६०७	८३२७/४७२२	मदनदहन	–	उदयशंकर भट्ट	–	हिन्दी (खड़ीबोली)	नागरी
६०८	८४१३/४७७५	मसला	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६०९	८११२/४५८५	यन्त्र विधि	–	–	–	हिन्दी अपभ्रंश (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
६	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
आधुनिक माण्डपत्र	३४ × २२	५४	३२	२४	१२६६	पूर्ण	श्री उदयशंकर भट्ट	प्रस्तुत नाटक दो अंकों में लिखा गया है। यह श्री उदयशंकर जी का हस्तलेख है।
माण्डपत्र	२३.५ × १६	१४२	२५	२०	२२१६	पूर्ण	श्री बलबीर सिंह, दतिया (म०प्र०)	यह ज्ञान, वैराग्य की शिक्षा देनेवाला नाट्यकाव्य है। ब्रजभाषा में आलंकारिक शैली में इसकी रचना प्राप्त होती है।
माण्डपत्र	६८ × १४	१	—	—	—	पूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया	यह वंशावली मानचित्र के आकार में निबद्ध है।
माण्डपत्र	१८ × १३.५	२६५	१६	१२	१५४१	पूर्ण	श्री प्रभाकर शास्त्री, मुजफ्फरनगर	ग्रन्थ में ऐतिहासिक कथाओं का उल्लेख है, जिसमें ३३ अध्याय है। ग्रन्थ की रचना दोहा, चौपाई छन्दों में हुई है।
माण्डपत्र	१४ × १०.५	२४	१२	१८	१५५	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में उमा-महेश्वर-संवाद-क्रम में भौगोलिक एवं खगोलशास्त्रीय विवेचन के साथ १४ पातालों का वर्णन है।
माण्डपत्र	३२ × २०	१३	३२	२०	२६०	पूर्ण	श्री उदयशंकर भट्ट	प्रस्तुत ग्रन्थ में कामदेव के भस्म होने की कथा का उल्लेख किया गया है। ग्रन्थ पत्राकार एवं आधुनिक है।
माण्डपत्र	१८.५ × १५	३	१२	१५	२७	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में कुछ हास्य-पद्य लिखे गये हैं। वर्ण्य-विषय के रूप में मच्छर (मसक) आदि चित्रित हैं। ग्रन्थ कीट-दंशित है।
माण्डपत्र	२५.५ × १३	२	६	४५	१२५	अपूर्ण	अज्ञात	प्राप्त दो पत्रों के इस ग्रन्थ में विविध यन्त्रों की विधियाँ बतलायी गयी हैं। ग्रन्थ में वसु, निधि, रुद्र आदि प्रतीकात्मक संख्यासूचक शब्दों का प्रयोग है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६१०	७७५६/४३४६	रतन सागर	१७७३ ई.	गुरुप्रसाद	१७७३ ई.	हिन्दी	नागरी
६११	८०३७/४५२२	राममाला	–	गुलाब पाठक	१८५३ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
६१२	७७३५/४३३७	रामानुग्रह	१८२७ ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६१३	८१११/४५८४	लघुकौमुदी सूत्रार्थ	–	–	–	हिन्दी (गद्य)	नागरी
६१४	७६३६/४४६६	लीलावती	–	१८५० ई.	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६१५	८३२६/४७२१	लोक-परलोक	–	उदयशंकर भट्ट	–	हिन्दी (गद्य)	नागरी
६१६	८०४५/४५२६	वंशावली	–	–	–	हिन्दी	नागरी
६१७	७६०४/४४३८	वंशावली	–	–	–	हिन्दी	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१७.५ × ११.५	६४	८	२१	४६४	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में मौक्तिक आदि रत्नों के गुण-दोष के विवेचन के साथ तात्कालिक क्रय-विक्रय क्रम में उनका मूल्य-निर्धारण भी है।
माण्डपत्र	२७ × १४	८	१०	३५	८७५	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में स्वर, आलाप, नाद सहार एवं विभिन्न रागों के वर्णन से यह संगीत का ग्रन्थ है। श्रृंगारिक शैली में ग्रन्थ लिखा गया है।
माण्डपत्र	२३.५ × १६	२४८	१६	१६	२३५६	पूर्ण	श्री बलबीर सिंह, दतिया, (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में वैराग्यभाव से मोक्ष-प्राप्ति-साधन वर्णित है।
माण्डपत्र	१६ × १२.३	७	१८	३२	१२६	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में अष्टाध्यायी के कुछ सूत्रों की हिन्दी व्याख्या की गयी है। ग्रन्थ पत्राकार एवं अत्याधुनिक है।
माण्डपत्र	२४.५ × ११.५	२६	८	३१	२२५	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में व्यापार सम्बन्धी बातें लिखी हुई हैं। इसके साथ-ही-साथ यह श्रृंगार का अनूठा ग्रन्थ है।
आधुनिक माण्डपत्र	३१.५ × २०	२०७	३२	२६	५३८२	पूर्ण	श्री उदय-शंकर भट्ट	यह उदयशंकर भट्ट का महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। इसके सभी पात्र कल्पित हैं। मूल प्रति भी इसकी प्राप्त है।
माण्डपत्र	१७.५ × ११.५	२	१२	२४	१८	अपूर्ण	श्री ब्रज-किशोर शर्मा, भरतगढ़ दतिया	इस कृति में मधुकर साह आदि विभिन्न राजाओं की वंशावली वर्णित है।
माण्डपत्र	१४ × १०.५	२८	८	१७	११९	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	गद्य में लिखित इस ग्रन्थ में वंशावली का वर्णन किया गया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६१८	८३३३/४७२४	वह जो मैंने देखा (तीसरा भाग)	—	उदयशंकर भट्ट	—	हिन्दी	नागरी
६१९	८२९७/४६९५	बिलिथंकर की पूजा	—	—	—	हिन्दी	नागरी
६२०	८३४८/४७३४	शहनाई की शर्तें	—	डॉ० रामकुमार वर्मा	१९६० ई.	हिन्दी (गद्य)	नागरी
६२१	८३३१/४७२२	श्री राधा	—	उदयशंकर भट्ट	—	हिन्दी (खड़ीबोली)	नागरी
६२२	८०१२/४५१५	समयसार नाटिका	—	—	—	हिन्दी	नागरी
६२३	८३३२/४७२३	सागर, लहरें और मनुष्य	—	उदयशंकर भट्ट	—	हिन्दी	नागरी
६२४	८०५७/४५४१	सांगीतकी राजकुमारी चन्द्रमुखी	१९२१ ई.	—	—	हिन्दी	नागरी
६२५	७७९३/४३६६	सोने-लोहे को झगरो	—	—	—	हिन्दी (ब्रज-मिश्रित अवधी)	नागरी
६२६	७७३१/४३३३	हरतालिका व्रत कथा	—	द्वारकानाथ जू	१९२१ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
आधुनिक माण्डपत्र	३३ × २१.५	१३८	३२	३०	४१४०	पूर्ण	श्री उदयशंकर भट्ट	प्रस्तुत ग्रन्थ कथा-साहित्य से सम्बन्धित है।
माण्डपत्र	१७.२ × १२.५	१०	१०	८	२५	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में कर्मकाण्ड सम्बन्धी बातें लिखी गयी हैं।
आधुनिक माण्डपत्र	३१ × २०	२६	३२	१९	४८४	पूर्ण	डॉ० रामकुमार वर्मा	
माण्डपत्र	३२ × २०	२९	३२	४०	११६०	पूर्ण	श्री उदयशंकर भट्ट	प्रस्तुत ग्रन्थ में राधाकृष्ण-संवाद नाट्यशैली में लिखित है।
आधुनिक माण्डपत्र	२१ × १६	१९०	१७	२४	२४२३	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	यह ग्रन्थ संस्कृत के समयसार नाटक का अनुवादप्राय ग्रन्थ है। उक्त नाटक के अनुवादक 'श्री पाण्डेराज' का भी उल्लेख है।
आधुनिक माण्डपत्र	३४ × २१	१८८	४०	३२	७५२०	पूर्ण	श्री उदयशंकर भट्ट	उक्त ग्रन्थ श्री उदयशंकर भट्ट का उपन्यास है।
माण्डपत्र	१९.५ × १५.५	६१	१८	१९	६८०	पूर्ण	डॉ० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में लोकनाट्य-शैली के आधार पर चन्द्रसेन एवं कुमारी चन्द्रमुखी का प्रेम वर्णित है।
माण्डपत्र	१७ × ११.५	१०	१२	१४	५३	पूर्ण	श्री मुन्नालाल परसारिया, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में सोने और लोहे का माहात्म्य संवाद-शैली में वर्णित है।
आधुनिक माण्डपत्र	२२ × १६	१७	१३	४०	२७६	पूर्ण	श्री केशवकिशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में स्त्रियों के 'तीज त्यौहार' पर्व की कथा को लिपिबद्ध किया गया है।

वैदिक धर्म

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६२७	८२५७/४६८०	नासिकेत की कथा	१५६७ ई.	देवीदत्त	१७८८ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
६२८	७८५२/४३६४	निबन्ध (तीन प्रति)	–	–	–	हिन्दी (गद्य)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१८.५ × १३.५	१५४	१६	१२	९२४	पूर्ण	श्री प्रभाकर शास्त्री १६, अम्बापुरी, मुजफ्फरनगर	इस ग्रन्थ में कठोपनिषद् की कथा दी गयी है। कृति में कुल १७ अध्याय हैं। ग्रन्थ दोहे चौपाइयों में है।
माण्डपत्र	३३ × १०	१०८	३२	३०	३२४०	अपूर्ण	डॉ० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर	इस निबन्ध में वैदिक देवताओं की दार्शनिक व्याख्या की गयी है।

शृंगार काव्य

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६२९	८०४०/४५२५	अज्ञात	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६३०	७९४७/४४७३	अंगदर्पन (नख-शिख)	–	–	१८८८ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६३१	८०६२/४५४४	अनवर चन्द्रिका (बिहारी सतसई)	१७१४ ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६३२	७७७०/४३६०	अनवर चन्द्रिका	–	–	–	हिन्दी	नागरी
६३३	८३६५/४७४६	अष्टयाम	–	१९२७ ई.	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२०.५ × १६	१०	२४	२३	१७२	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	ग्रन्थ-नाम अज्ञात है। ग्रन्थ श्रृंगारिक है, इसमें कोई सन्देह नहीं। इसमें मुग्धा, प्रौढ़ा आदि नायिका-विषयक वर्णन है। इसमें आचार्य भिखारीदास के कुल ३१ छन्दों का संकलन हुआ है। ये छन्द उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ काव्य-निर्णय और श्रृंगार-निर्णय के हैं।
माण्डपत्र	३३ × २१.५	१४	३०	२०	७८७	पूर्ण	,,	इसमें नायिका के नख-शिख का वर्णन दोहा छन्द में किया गया है। कवि ने अपना परिचय अन्त में दिया है और अपने को रसलीन का पुत्र बताया है। यह ग्रन्थ भारत जीवन प्रेस, काशी से छप भी चुका है।
माण्डपत्र	२४.७ × ११.७	८७	१२	३०	६७९	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में अनवर खाँ ने बिहारी सतसई के दोहों की टीका लिखी है।
माण्डपत्र	२३.५ × १३	१२९	११	३६	१५९६	अपूर्ण	,,	इस अपूर्ण ग्रन्थ में अनवर खाँ ने बिहारी सतसई की टीका ब्रजभाषा गद्य में की है, जिसमें प्रसंगगत अलंकार एवं नायिका-भेद आदि रीति-तत्त्वों का उल्लेख हुआ है।
माण्डपत्र	३२.५ × २०	४	३४	१६	६८	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में दम्पति के ८ याम और ६४ घड़ी अर्थात् अहोरात्रि की चर्चा का वर्णन है। यह ग्रन्थ भी भारत जीवन प्रेस, काशी से छप चुका है और उस प्रकाशित ग्रन्थ का इसमें मात्र लक्षणांश का ही संग्रह है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६३४	८२६२/४६६२	असफुटि दोहरा (स्फुट दोहा)	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६३५	७६८८/४३०५	आनन्दघन के कवित्त	–	–	–	हिन्दी (ब्रज पद्य)	नागरी
६३६	७७४२/४३३६	इश्क चमन	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६३७	७८२५/४३८०	कमल लैनी	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६३८	८२५६/४६७६	कवित्त संकलन	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१५ × ११.५	४	६	१६	१८	पूर्ण	श्री ब्रज-किशोर शर्मा, भरतगढ़, दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में रसलीन आदि के २७ स्फुट दोहों का संग्रह है। इन दोहों में से कुछ दोहे द्वअर्थक हैं। कुछ दोहों में बिहारीलाल की छाप प्रतीत होती है।
प्राचीन माण्डपत्र	२४ × १६.५	११०	२०	२४	१६५०	अपूर्ण (जीर्ण)	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया	इस ग्रन्थ में घनानन्द के कवित्तों को लिपिबद्ध किया गया है। विश्वनाथप्रसाद मिश्र द्वारा इसका सम्पादन हो चुका है। ब्रजनाथ द्वारा रचित घना-नन्द विषयक प्रशस्ति के सभी छन्द इसमें प्राप्त हैं।
माण्डपत्र	२१.५ × १६.५	५	१६	१६	४०	पूर्ण	श्री अटल-बिहारी श्रीवास्तव, दतिया	इस ग्रन्थ में राधा और कृष्ण की आँख-मिचौनी का वर्णन कवि ने उर्दू-मिश्रित ब्रज में सवैया और कवित्त-छन्द में किया है।
माण्डपत्र	१५ × १२	५	१५	१६	४५	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में रूपासक्ति के माध्यम से कृष्ण और राधा के प्रेम-सौन्दर्य और काम की भूमि पर शुद्ध सात्त्विक शृंगार की अवतारणा की गयी है। बीच-बीच में उसके उपा-दानों—संयोग और वियोग का भी चित्रण है। इसका रचना-विधान दोहा-छन्द में किया गया है।
माण्डपत्र	१७.५ × ११	७२	८	११	१९८	अपूर्ण	श्री श्रीराम वर्मा, दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में देव, मतिराम आदि कवियों के कवित्तों का संग्रह किया गया है। ग्रन्थ में विविध विषयों तथा शृंगार, भक्ति आदि पर स्वतन्त्र रूप से विविध रोचक कवित्तों का संग्रह है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६३६	७८६०/४३६६	कवित्त संग्रह	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६४०	७६६५/४५०३	कवित्त संग्रह	–	खूबचन्द्र	१८५३ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६४१	७७२०/४३२३	कवित्त संग्रह	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६४२	७७५७/४३४७	कवित्त संग्रह	–	–	–	हिन्दी	नागरी
६४३	७६४३/४४७३	काव्य कला	–	–	१८८६ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पृ०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१६ × ११.५	४४	८	१८	१९८	अपूर्ण (जीर्ण)	श्री श्यामाचरण खरे, दतिया (म० प्र०)	इसमें ब्रह्मभट्ट केशव, कवीन्द्र आदि कवियों के स्फुट शृंगारिक छन्दों का संग्रह है।
माण्डपत्र	२३ × १६.५	११३८	१६	१६	९१०४	अपूर्ण	श्री केशवकिशोर तिवारी, दतिया	इसमें रीतिकाल के दूलह, निहाल, देव, मतिराम आदि शृंगारिक कवियों की रचनाओं का अपूर्व संकलन किया गया है। प्रायः छन्द कवित्तों में ही हैं। कुछ ऐसे भी छन्द इसमें हैं जो अद्यावधि किसी भी संकलन में नहीं हैं।
माण्डपत्र	२४.५ × १६	३	२४	२४	३७८	अपूर्ण	डॉ० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर	इस अपूर्ण ग्रन्थ में कवि ने ब्रजभाषा के स्फुट दोहों व कवित्तों का संग्रह किया है। कवित्त के पद शृंगारिक हैं। बीच-बीच में अलंकारों का विवेचन भी है जिसके कारण यह अलंकार ग्रन्थ का संकेत भी देता है।
आधुनिक माण्डपत्र	२२.५ × १४	७९	१०	१९	२३५	खण्डित	डॉ० अटलबिहारी श्रीवास्तव, दतिया (म० प्र०)	इस कवित्त-संग्रह में ठाकुर, बोधा, गुमान, केशवदास, गिरजेश, ब्रजेश तथा बिहारी सतसई से भिन्न बिहारी के कुछ पदों को लिपिबद्ध किया गया है। लिपिकार एवं लिपिकाल दोनों का कहीं उल्लेख नहीं है।
ाण्डपत्र	३३ × २१.५	१४०	२७	२४	२८३५	पूर्ण	डॉ० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में नायक-नायिका-भेद आदि का विवेचन हुआ है। इसमें मुख्य पक्ष विभाव, अनुभाव एवं संचारी भाव ही है। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इसमें नायक-भेद का भी विस्तार हुआ है। यह ग्रन्थ नवलकिशोर प्रेस लखनऊ से छप भी चुका है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६४४	८३६७/४७४६	कुशल-विलास	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६४५	७७५३/४३४३	गहनौ चेतावनी	–	–	–	हिन्दी (ब्रज पद्य)	नागरी
६४६	७६६७/४५०५	जगत विनोद	–	गंगासिंह	१८६४ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६४७	८१६२/४६३५	जगद् विनोद	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६४८	७८०४/४३७०	जल बिहार	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	३२.५ × २०	१२	२५	२२	२०६	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में नौ विलास हैं, जिनमें रस-वर्णन एवं नायक-नायिका-भेद आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है। ग्रन्थ की लिपि अत्याधुनिक है। यह नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से देव ग्रन्थावली के अन्तर्गत प्रकाशित भी हो चुका है।
माण्डपत्र	१६.५ × ११.५	१४	९	१५	५९	पूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में नायिका के शृंगार-प्रसाधनों में प्रमुख भूमिका निभानेवाले अलंकारों के माध्यम से कवि ने चेतावनी दी है। वस्तुतः चेतावनी की मुख्य भूमिका आध्यात्मिक होती है। लेकिन कवि ने उससे इतर भूमिका का निर्वाह किया है।
माण्डपत्र	२४.५ × १६.५	१३४	२०	२२	१८४३	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में पद्माकर ने नायिका-भेद का लक्षण एवं उदाहरण दोहा, सवैया एवं कवित्त छन्दों में दिया है। इस ग्रन्थ में एक छन्द में लक्षण और दूसरे में उदाहरण दिये गये हैं। ग्रन्थ रीतिकालीन शैली में लिपिबद्ध है। ग्रन्थ कीट-दंशित है। यह ग्रन्थ लखनऊ, बम्बई और बनारस आदि स्थानों से छप भी चुका है।
माण्डपत्र	१७ × १२	४८	१२	१३	२३४	अपूर्ण	दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में नायिका-भेद का शृंगारिक छन्दों में कवि ने रचना की है। कृति में मात्र ८८ छन्द हैं।
आधुनिक माण्डपत्र	१६.५ × ११.५	४	१३	१६	२६	पूर्ण	श्री जगदीश-शरण, मधुप पट्ठापुरा, दतिया (उ० प्र०)	इस ग्रन्थ में कुण्डलिया-शैली में जल-विहार का वर्णन किया गया है। विषयानुरूप शृंगारिक रीति से भक्ति के प्रति कवि ने अपनी आस्था व्यक्त की है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६४९	८३६३/४७४६	जाति विलास	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६५०	७७४५/४३४०	जुगल सिष नष	१८२९ ई.	प्रताप साह	१८२९ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६५१	७९१८/४४५२	तेरह मासी	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
६५२	७७७६/४३६२	देवीदास के कवित्त	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६५३	७९३५/४४६८	दोहा (संग्रह)	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र० पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	३२.५ × २०	२	२२	१५	२०	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में विविध जाति की नायिकाओं का वर्णन ५ विलासों में लिखा गया है। किन्तु इस प्रति में प्रथम और चतुर्थ विलास अनुपलब्ध हैं। वस्तुतः यह कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ न होकर रस-विलास का ही एक अंश है। इसमें लक्षणांशों का ही आकलन हुआ है।
माण्डपत्र	२४.५ × १७	३५	१८	१६	३१५	पूर्ण	श्री कन्हैया-लाल, सिरोहिया, हमीरपुर	इस ग्रन्थ में प्रतापसाहि ने 'राम और सीता' का नख-शिख वर्णन रीतिकालीन शैली में किया है। ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	२४.७ × १०.५	७	८	४०	७०	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर (उ० प्र०)	प्रस्तुत ग्रन्थ में विरह के वर्णन का क्रम बारहों मासों के माध्यम से कवि ने प्रस्तुत किया है। गीत लोकगीत या देशज गीत के समान हैं। ठीक इसी ढंग के गीत स्त्रियाँ सावन-भादों मास में गाती हैं।
माण्डपत्र	२२ × १७	८	२२	१८	९९	अपूर्ण	श्री बलबीर सिंह जी, बड़ा बाजार, दतिया (म० प्र०)	इस पद-संग्रह में कवि ने शृंगा-रिक मनोवृत्ति का परिचय देनेवाले छन्दों का संग्रह किया गया है।
मिल का कागज	२१.५ × १३	१८	१८	१२	१२२	अपूर्ण	श्री हरिदास मुखिया, ग्रा० पो० नौटा, झाँसी	इस ग्रन्थ में बिहारी के कुछ शृंगारिक स्फुट दोहों को संक-लित किया गया है। इन दोहों के अन्त में भगवान् के दस अवतारों का एक छन्द में वर्णन किया गया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६५४	४६७८/४४६३	नवरस तरंग	–	बलदेव मिश्र	१८८४ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६५५	८२६५/४६८३	पंचवर्ण कवित्त	–	भगुवन-दास	१८७२ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६५६	७७५२/४३४३	पक्षी चेताउनी	१८१५ ई.	–	१८१५ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६५७	७६५५/४४७७	प्रेम चन्द्रिका	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र० पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२०.५ × १६	१७२	१५	१८	१४५१	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	यह रीतिकालीन शैली में लिखित शृंगारिक ग्रन्थ है, जिसके अन्तर्गत नायक-नायिका भेद का विवेचन लक्षण व उदाहरण के साथ बेनी प्रवीन कवि ने किया है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में शिव कवि के पाँच छन्द हैं। ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है। यह ग्रन्थ सन् १९२५ में पण्डित कृष्णबिहारी मिश्र द्वारा सम्पादित होकर बनारस से मुद्रित भी हो चुका है।
माण्डपत्र	१७ × ११.५	८	१०	१०	२५	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में पंचवर्णों (रंगों) यथा—लाल, श्वेत, पीला, हरा आदि के गुणों एवं कार्यों का वर्णन कवि ने कवित्तों के माध्यम से किया है।
माण्डपत्र	१६.५ × ११.५	१०	६	१५	४२	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में पक्षियों को लौकिक चेतना के रंग में रँगकर मान-वीय रागात्मक सम्बन्धों की स्थापना ही कवि को अभिप्रेत है।
आधुनिक माण्डपत्र	३३ × २०.५	५	२४	१८	१७	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में चार प्रकाश हैं। प्रथम प्रकाश के अन्तर्गत नायक-नायिका के प्रति प्रेमभाव को विभिन्न प्रतिमानों पर विवेचित किया गया है। दूसरे प्रकाश के अन्तर्गत प्रेम-भेद का वर्णन, तीसरे प्रकाश के अन्तर्गत प्रेम की वृद्धि के लिए नायक और नायिका के रति-विलास के शृंगारिक आधानों तथा चौथे प्रकाश में शृंगार की परिणति कान्ता-भाव के अन्तर्गत करके देव कवि ने प्रेम की शुचिता एवं पवित्रता को भक्ति-कलेवर प्रदान किया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६५८	७६४२/४४७३	प्रेमतरंग	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६५९	७६५६/४३७७	प्रेमतरंग	–	–	२८-१ १९२७ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६६०	७८१८/४३७५	फासा खेलबे के पद	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६६१	८२०८/४६४२	फुटकर कवित्त	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	३३ × २१	२८	२५	२४	५२५	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में शृंगार रस के लक्षण, रति के पोषक विभाव, शृंगार रस के उपयुक्त नायकों के स्वभाव, रूप तथा दर्शनों के विविध प्रकारों, विभिन्न भाषा-नुभावों का वर्णन दोहा, सवैया और कवित्त छन्दों में रीति-कालीन शैली में हुआ है।
नवीन माण्डपत्र	३३ × २०.५	१	२३	२०	१६	पूर्ण	,,	ग्रन्थ में दो तरंग हैं। प्रथम तरंग के अन्तर्गत संचारी भावों का लक्षण, दोहा छन्द में दिया गया है। दूसरे तरंग में नायिका-भेद का लक्षण दोहा छन्द में दिया गया है। ग्रन्थ अपूर्ण है।
माण्डपत्र	१४.५ × २१	३	१५	१२	१७	पूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में राधा और कृष्ण के 'फासा' (पासा) खेल का वर्णन किया गया है। भारतीय विवाह-पद्धति में पासा खेलने की परिपाटी काफी प्राचीन है। यह नायक और नायिका को रोमांचित करने का एक साधन भी माना जाता है।
माण्डपत्र	२०.३ × १३	१०	२२	१६	२२०	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में शृंगारिक कवित्तों का संग्रह नायिका-भेद के अन्तर्गत किया गया है, जिसमें मुग्धा, विरहिणी, स्वकीया आदि के उदाहरण हैं। ग्रन्थ में एक स्थल पर शाहन-शाह जहाँगीर का भी उल्लेख है। ग्रन्थ पत्राकार एवं अपूर्ण है। लिपि से ग्रन्थ प्राचीन ज्ञात होता है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६६२	७७५०/४३४३	फूल चेताउनी	१८१५ ई.	–	१८१५ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६६३	८६६५/४६६६	फूल-माला	१८३६ ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६६४	८१४८/४६१८	वरवै नायिका भेद	–	–	१६१६ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
६६५	८२०४/४६३८	बारहमासा	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
६६६	७६३८/४४७१	बारहमासा	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र० पृ०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
आधुनिक माण्डपत्र	१६.५ × ११.५	८	९	१४	३२	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	नाम परिगणन की शैली को अपनाकर कवि ने उद्दीपन विभाव के प्रकाश में फूलों को चेतावनी दी है और अन्त में संस्कृत श्लोक द्वारा कृष्ण और गणेश की वन्दना की है।
माण्डपत्र	१९.५ × १२	४	१७	२३	४८	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में शृंगार के सन्दर्भ में विविध फूलों का वर्णन ब्रज भाषा के दोहों में हुआ है। इन तीस दोहों के पश्चात् ग्रन्थ की समाप्ति है। ग्रन्थ जीर्ण-शीर्ण, कीट-दंशित है।
माण्डपत्र	२२.५ × १३.५	१६	१९	११	१०५	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में ९५ बरवै छन्दों में ग्रन्थकार ने नायिका-भेद का वर्णन किया है। प्रति बहुत आधुनिक प्रतीत होती है।
माण्डपत्र	१२ × ११	७	९	१०	१९	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में कवि ने बारह-मासा सावन मास से प्रारम्भ करके आषाढ़ के अन्त में समाप्त किया है। बारहमासा विषयक आरम्भ की यह एक सुन्दर कल्पना है। नायिका के विरह-वर्णन का चित्रण लोक-गीतों में किया गया है।
माण्डपत्र	२१.५ × ९.५	५८	१०	२६	४७१	अपूर्ण खण्डित जीर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	बारहमासा की यह प्रति अत्यन्त जीर्ण है। इसमें वर्ष के बारहों महीनों के आधार पर कृष्ण और राधा के वियोग पक्ष का वर्णन किया गया है। ग्रन्थ कीट-दंशित होने के कारण अपाठ्य है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६६७	८३७३/४७५०	(बारहमासी) बारहमासा	–	गुलाब पाठक	१८६६ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६६८	८२६०/४६८१	बारहमासा (एवं अन्य स्फुट पद)	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६६९	८२८६/४६९०	बारामासी	–	गंगाप्रसाद कटरवार	१८५२ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६७०	७८२१/४३७७	बारामासी	–	–	–	हिन्दी (ब्रज-मिश्रित अवधी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
६	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
भाण्डपत्र	२१ × १६.५	६४	१७	१४	४७६	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	'कवि केसौदास विचारि कहै' के आधार पर यह सिद्ध होता है कि ग्रन्थकार केशवदास नाम के कोई कवि थे। इस ग्रन्थ में बारहमासा का वर्णन किया है। वर्णनशैली लोक-साहित्य और कवित्त जैसे छन्दों में भी है। ग्रन्थ पूर्णरूपेण कीट-दंशित एवं जीर्ण है।
भाण्डपत्र	११ × ६.५	१८	१४	१५	११८	अपूर्ण	अज्ञात	प्रस्तुत ग्रन्थ में कवि ने बारह-मासा का वर्णन आषाढ़ मास से प्रारम्भ करके ज्येष्ठ महीने तक का किया है, जो कि विरह-पूर्ण काव्य के रूप में है। ग्रन्थ के आदि में 'अथ साठ संवाति लिख्यते' के अनुसार उमा-महादेव सम्वाद के माध्यम से महीनों का वर्णन और संख्या दी गयी है।
भाण्डपत्र	१६.५ × ११.५	१८	११	११	६८	अपूर्ण	श्री श्रीराम शर्मा, दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में बारहमासा के अन्तर्गत किसी नायिका के विरह का कवि ने वर्णन किया है। कृति दोहा, सोरठा के साथ-ही-साथ शेर में भी लिखी हुई है। यह वर्णन शृंगारिकता से ओत-प्रोत है।
भाण्डपत्र	१६ × १२	२०	२१	१२	९०	पूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में वर्ष के बारह महीनों को विप्रलम्भ शृंगार के क्रोड़ में वर्णन किया गया है, जिसकी शैली जनपदीय है और यह लावनी के योग से निर्मित है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६७१	८२८३/४६६०	बारामासी	–	–	१८७२ ई.	हिन्दी	नागरी
६७२	७७३२/४३३४	बसन्त ऋतु के कवित्त	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६७३	७६८३/४४६६	बिहारी सतसई(सटीक) (अमर चन्द्रिका)	–	–	१६१६ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६७४	७७१५/४३२१	बिहारी सतसई	–	कान्हजी ब्राह्मण	१७५७ ई.	हिन्दी (बुन्देल-खण्डी ब्रज)	नागरी
६७५	७८७७/४४१३	बिहारी सतसई	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१६.५ × ११.५	७	१४	१६	४६	पूर्ण	श्री श्रीराम शर्मा, दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में बारहमासा के अन्तर्गत गोपियों के वियोग का वर्णन किया गया है। ग्रन्थ की लिपि अत्याधुनिक प्रतीत होती है। इसकी भाषा पर उर्दू का भी प्रभाव लक्षित होता है।
माण्डपत्र	२३ × १६.५	४	२०	२८	७०	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया (म० प्र०)	इस ग्रन्थ में अंबुज और पद्माकर ने वसन्त ऋतु के स्फुट, पदों को लिपिबद्ध किया है और अन्त में देव विषयक मंत्रों को लिपिबद्ध किया गया है।
नवीन माण्डपत्र	२१ × १७.५	६१८	१६	२४	७४१६	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर (उ० प्र०)	इसमें सूरति मिश्र ने बिहारी सतसई की टीका 'अमर चन्द्रिका' के नाम से ब्रज के गद्य में किया है और दोहों में आये हुए अलंकारों का भी यथा प्रसंग उल्लेख किया है।
प्राचीन माण्डपत्र	२२.५ × १४	१०६	१९	११	६९२	पूर्ण	श्री कन्हैया-लाल सिरोहिया, चरखारी, हमीरपुर	कविवर बिहारी की 'सतसई' नामक इस पूर्ण ग्रन्थ को उनके समसामयिक कान्ह जी ब्राह्मण द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। प्रामाणिकता की दृष्टि से इस ग्रन्थ का महत्त्वपूर्ण स्थान है।
माण्डपत्र	१७ × ११.५	१२८	१४	१६	८९६	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में बिहारी सतसई को लिपिबद्ध किया गया है। इस ग्रन्थ की सबसे बड़ी विशेषता है कि बीच-बीच में वर्णन पक्ष का संकेत दिया गया है। सतसई की अन्य प्रतियों में किसी में ७०५ किसी में ७०७ दोहे मिलते है। लेकिन इस प्रति में मात्र ७०० दोहे हैं।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६७६	७८७२/४४०९	बिहारी सतसई	–	श्री लाला गंगा-प्रसाद	१८४३ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६७७	७७६२/४३५२	बिहारी सतसई	–	–	–	हिन्दी	नागरी
६७८	८१४९/४६१९	बिहारी सतसई	–	रामदीन पण्डित	१८४१ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६७९	८६६७/४९६९	बिहारी सतसई	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६८०	८२१७/४६५१	बिहारी सतसई	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६८१	८११३/४५८६	बिहारी सतसई	–	रतनलाल	१८५२ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र० पृ०	अक्षर प्र० पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
ण्डपत्र	१७ × १२	१६२	१२	१२	५०४	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इसमें बिहारी सतसई के दोहों को लिपिबद्ध किया गया है। इस ग्रन्थ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें बीच-बीच में किये गये अनुसर्गों के वर्णन का नाम दिया गया है। ग्रन्थ के अनेक संस्करण अनेक जगहों से निकल चुके हैं।
ण्डपत्र	१६.५ × १४	६४	१२	१६	३८४	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर-तिवारी, दतिया	बिहारी सतसई की यह अपूर्ण प्रति है। इसमें लिपिकार एवं लिपिकाल का उल्लेख नहीं है।
ण्डपत्र	२१ × १०	पत्र ५४	अज्ञात	—	—	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	बिहारी सतसई की यह प्रति सुपाठ्य होने पर भी स्थान-स्थान पर कीट-दंशित है। कृति में दोहों की संख्या ७२४ है और अत्यधिक कीट-दंशित होने से खोला नहीं जा सकता।
माण्डपत्र	१६.५ × १२	२५	१५	१२	१४०	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में बिहारीलाल कृत सतसई के १३६ दोहों का संकलन है। ग्रन्थ की दशा अति दयनीय है। लिपि से कृति प्राचीन प्रतीत होती है।
माण्डपत्र	२२.५ × १६	११२	२४	२०	१६८०	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में कृष्ण कवि ने कवित्त एवं सवैया छन्दों में बिहारी सतसई की टीका लिखी है। ग्रन्थ कीट-दंशित है एवं अपूर्ण है। लिपि से यह प्राचीन प्रतीत होता है।
माण्डपत्र	२७ × १३.५	४४	१०	३२	४४०	पूर्ण पत्रा-कार	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में कृष्ण कवि ने महाकवि बिहारी के दोहों की कवित्त, सवैया छन्दों में टीका लिखी है। ग्रन्थ में ९० दोहे एवं ९० कवित्त हैं।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६८२	८२६०/४६६२	बिहारी सतसई	–	–	१८१० ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६८३	७६६८/४५०६	ब्रजराजीय काव्य	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६८४	७६५४/४४७७	भवानी विलास	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६८५	८३६१/४७६४	भाव पंचासिका	–	–	१६२७ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डयत्र	१५ × ११.५	१३८	११	१६	७२८	अपूर्ण	श्री ब्रजकिशोर शर्मा, भरतगढ़, दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में नायक-नायिका वर्णन, दूती-विरह, विदेश-गमन, गर्भवती, गणक, भक्ति, नीति एवं शृंगार इत्यादि का कवि ने वर्णन किया है। ग्रन्थ की लिपि सुपाठ्य है। ग्रन्थ का आदि पृष्ठ अप्राप्य है। ग्रन्थ में ७२० दोहे हैं। आरम्भ के चार दोहे अप्राप्य हैं।
नवीन माण्डपत्र	३३ × २०.५	३०	३४	३०	९५६	पूर्ण	डॉ० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में ब्रजराज के शृंगार के छन्दों को लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्थ कवित्त, सवैया, छन्दों में है और सरस है। ये सारे पद कृष्ण को ही सम्बोधित करके लिखे गये हैं। ब्रजराज पण्डित कृष्णबिहारी मिश्र के ही वंशजों में हैं। यह बहुत अर्वाचीन रचना है।
नवीन माण्डपत्र	३३ × २०.५	१०	२८	२०	१७५	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में भवानीदत्त के शृंगारिक विलासों का वर्णन किया गया है। यह भवानी विलास का संक्षिप्त संस्करण है। इसमें मात्र लक्षणों का ही संकलन किया गया है। इसमें कुल ८ विलास हैं।
आधुनिक माण्डपत्र	३३ × २०	१४	३२	२२	३०८	पूर्ण	,,	ग्रन्थारम्भ में कवि ने कविता-काल का उल्लेख 'सत्तरै तैंतालिस सुदि फागुन मंगलवारि' कह करके किया है। यह शृंगार का एक अनूठा ग्रन्थ है। इसमें विविध विषयों, जो कि शुद्ध रूप से शृंगारिक हैं, का वर्णन किया गया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६८६	८३६८/४७४६	भाव विलास	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६८७	७८३०/४३८२	मुदरी तरंग	१८६६ ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६८८	८२१८/४६५२	रसराज	–	छेदाराइ बन्दीजन	१७८५ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६८९	७७२३/४३२६	रसराज	–	सेवक-प्रसाद	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पृ०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
ाण्डपत्र	३२.५ × २०	८	३७	१५	१३९	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में भाव, विभाव, आद्रभाव, उद्दीपन, सात्विक भावों का वर्णन, रस-निरूपण, अलौकिक रस, शृंगार रसों का वर्णन कवि ने किया है। ग्रन्थ अपूर्ण है। इस ग्रन्थ में मात्र भाव विलास के लक्षणांशों का ही संकलन हुआ है।
प्राचीन माण्डपत्र	१५.५ × ११	२८	१२	१२	१२६	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया	इस ग्रन्थ में मुदरी के विभिन्न प्रतिमानों की व्यंजना विविध छन्दों में की गयी है। इस ग्रन्थ में राधा कृष्ण के सरस सम्वाद के अन्तर्गत मुद्रिका का बड़ा ही मनोरम वर्णन हुआ है।
माण्डपत्र	१६ × १२	१७८	१४	१६	१२२६	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	शृंगार रसान्तर्गत नायिका-भेद का विस्तारपूर्वक विवेचन इसमें किया गया है। ग्रन्थ अत्यधिक जीर्णता के कारण पर्याप्त कीट-दंशित है और इसके कुछ पृष्ठ परस्पर इस प्रकार सम्पृक्त हैं कि उन्हें पढ़ा नहीं जा सकता।
ाण्डपत्र	२०.५ × १५.५	११४	१६	१६	६१२	पूर्ण	श्री ब्रजकिशोर शर्मा, भरतगढ़ दतिया (म० प्र०)	मतिराम की इस प्रसिद्ध रचना 'रसराज' में शृंगार के पदों को कवित्त और सवैया छन्दों में निबद्ध किया गया है। प्रति में लिपिकाल १७५३ दिया है, लेकिन ग्रन्थ को देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि इसे उन्नीसवीं शताब्दी में लिपिबद्ध किया गया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६६०	७८७१/४४०६	रसराज	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६६१	८३८५/४७५६	रसराज	—	गंगासिंह वैस	१८५८ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६६२	८३७८/४७५४	रस विलास	१७२६ ई.	प्रधान	१८५० ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१७ × १२	१६६	१३	१२	८०६	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में विभिन्न रसों का विवेचन दोहा, कवित्त एवं सवैया की रीतिकालीन शैली में किया गया है। ग्रन्थ का प्रकाशन हो चुका है। बिहारी सतसई (१८४३ ई०) के साथ ही यह प्रति संलग्न है, जिसकी लिखावट बिहारी सतसई से पूर्णरूपेण मेल खाती है। अतः इसका लिपिकाल एवं लिपिकार एक ही प्रतीत होता है।
माण्डपत्र	२३ × १४.५	६१	१७	१७	—	पूर्ण	,,	यह नायक-नायिका-भेद विषयक सरस रचना है, जिसमें नायिका-भेद-विवेचन के साथ ही वियोग की दश दशाओं आदि का सरस छन्दों में वर्णन किया गया है। कवि ने कवित्त छन्दों का प्रयोग किया है। यह ग्रन्थ टाइप एवं लीथो में कई स्थानों से प्रकाशित भी हो चुका है। प्रति सुपाठ्य है।
माण्डपत्र	१६ × १२	१७५	६	२८	१३७२	अपूर्ण	दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में नागर भेद, विविध देशों का वधू-वर्णन, श्रृंगार रस-वर्णन, दर्शन, अभिलाषा आदि दशाओं का वर्णन एवं नायक-नायिका का निरूपण कवि ने किया है। ग्रन्थ में कुल मिलाकर ४६६ छन्द हैं और ग्रन्थ ७ विलासों में विभक्त है। ग्रन्थ के प्रारम्भिक ८ छन्द नहीं हैं।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६६३	८३६६/४७४६	रस विलास	–	–	१६२७ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६६४	७७३६/४३३६	रस, शृंगार केल सागर	–	–	–	हिन्दी (ब्रज-मिश्रित खड़ी-बोली)	नागरी
६६५	८४६५/४८०८	रसिकप्रिया	१५६१ ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६६६	७६३३/४४६७	रसिकप्रिया	१५६१ ई.	विप्र गणेश	१८५१ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६६७	७६५२/४४७७	राग रत्नाकर	–	–	२७–१–१६२७ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	३२.५ × २०	१४	२५	१६	१७५	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में कामिनी-भेद, राज-नगर-वर्णन, दासी-वर्णन, नायिका-वर्णन, संध्या-वर्णन, भूषण वर्णन, नायिका जाति-भेद -वर्णन, तत्पश्चात् विरह-दशा-वर्णन दोहों के माध्यम से किया गया है। ग्रन्थ में ७ विलास हैं। यद्यपि यह ग्रन्थ भारत जीवन प्रेस काशी से छप चुका है जिसका मात्र लक्षणांश इसमें संकलित है।
माण्डपत्र	२१.५ × १६.५	२२	१६	१६	१७६	पूर्ण	श्री अटल-बिहारी श्रीवास्तव, दतिया	इस ग्रन्थ में राधा और कृष्ण को साधारण नायिका-नायक के रूप में चित्रित कर रस के उत्पाद्य शृंगार को केलि की भूमि पर प्रतिष्ठित कर कवि ने इसे लक्षण ग्रन्थ की कोटि प्रदान किया है।
माण्डपत्र	१८ × ११.५	२०८	१४	१७	१८६०	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में रस-वर्णन, नायक-नायिका-भेद, विरह की एकादश अवस्थाओं इत्यादि का कवि ने वर्णन किया है। ग्रन्थ लिपि के दृष्टिकोण से प्राचीन प्रतीत होता है। ग्रन्थ अपूर्ण और कीट-दंशित है।
माण्डपत्र	२७ × ११.५	१६८	८	३०	१२६०	पूर्ण	,,	रसिकप्रिया रीतिकालीन प्रयोग-धर्मिता की श्रेष्ठ रचना है। इसके रचयिता केशवदास जी हैं। उन्होंने सोलह प्रकाशों में इस ग्रन्थ की रचना की। ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।
नवीन माण्डपत्र	३३ × २०.५	६	३२	१६	९६	पूर्ण	—	देव के नाम से प्राप्त इस ग्रन्थ में विभिन्न राग-रागिनियों का लक्षण-निरूपण नायिका-भेद के सन्दर्भ में किया गया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
६९८	७९४५/४४७३	रामचन्द्र शिषनख	–	–	१८८८ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
६९९	८६७२/४९६९	ललित ललाम (स्फुट भक्ति)	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७००	७७९४/४३६६	लैला मजनू	–	–	–	हिन्दी (ब्रजमिश्रित अवधी)	नागरी
७०१	७६७५/४३०३	विक्रम विलास	१८१० ई.	गंगेश मिश्र	१८१० ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७०२	७६७४/४३०२	विद्वन्मोद तरंगिणी	१८२७ ई.	–	१८३१ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७०३	७७५१/४३४३	वृक्ष चेतावनी	१८१५ ई.	–	१८१५ ई.	हिन्दी (ब्रज)	देव-नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	३३ × २१.५	१०	२२	२०	१३८	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इसमें रामचन्द्र जी का नख-शिख वर्णन किया गया है। यह कृति महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	१६.५ × १२	७	१८	१०	४०	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में मतिरामकृत ललित ललाम के कुछ छन्द एवं अन्य कवियों के द्वारा रचित अनेक स्फुट छन्द प्राप्त होते हैं। ग्रन्थ अपूर्ण, जीर्ण-शीर्ण एवं कीट-दंशित है।
माण्डपत्र	१७ × ११.५	१३	१२	१६	७८	अपूर्ण	श्री मुन्नालाल परसारिया, दतिया	इस ग्रन्थ में लैला-मजनू के प्रेमालाप को भक्ति के आवरण में प्रस्तुत किया गया है।
माण्डपत्र	२४.५ × १६	२४८	१०	२४	१८६०	पूर्ण	श्री केशव-किशोर-तिवारी, दतिया (म० प्र०)	विक्रम विलास नामक ग्रन्थ २५ अंकों में गंगेश मिश्र द्वारा रचित है। इस ग्रन्थ में रीति-कालीन शैली में सर्वप्रथम कथानक का संकेत, तदुपरान्त विविध विलासों का सांगोपांग वर्णन विविध छन्दों में किया गया है।
माण्डपत्र	२४.५ × १४.५	२१९	२०	१८	९८५५	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	यह सुवंशु शुक्ल, कवीन्द्र देव, पद्माकर आदि ४५ कवियों का एक बृहद् काव्य-संग्रह है, जिसमें श्रीधर ने नायक-नायिका-भेद, रस-विवेचन, सखी-दूही आदि विषयों का सांगोपांग निरूपण किया है।
माण्डपत्र	१६.५ × ११.५	१०	९	१३	३७	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर-तिवारी, दतिया	प्रकृति को आलम्बन एवं उद्दीपन रूप में चित्रित कर, उसके उपादान वृक्ष को चेतावनी इस अपूर्ण ग्रन्थ में दी गयी है। इसके साथ ही वृक्षों की सूची भी चित्रकाव्य द्वारा प्रस्तुत की गयी है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
७०४	८३८७/४७६१	श्रृंगार निर्णय	१७५० ई.	बलदेव मिश्र	१८८६ ई.	हिन्दी (व्रज)	नागरी
७०५	७६८१/४४६४	श्रृंगार सौरभ	–	बलदेव मिश्र	१८६१ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७०६	७७१८/४३२३	श्रृंगारिक दोहा संग्रह	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७०७	७८६२/४४२७	षट ऋतु प्रकाश	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७०८	७६१७/४४५१	षट्-ऋतु प्रकाश	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२०.५ × १६	११६	१६	१५	८७०	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में आचार्य भिखारी-लाल जी ने नायक-नायिका-भेद, नायक-लक्षण, नायिका-लक्षण, सखी, दास-दासी आदि का वर्णन किया है।
माण्डपत्र	२० × १५.५	५४	१६	१८	४८६	पूर्ण	,,	इसमें नायिका-भेद का निरूपण किया गया है। शृंगार के मुख्य विभाजन नायिका-भेद का लक्षण व उदाहरण शृंगार रस के सरस कवित्तों, सवैयों, दोहा छन्दों में दिया गया है। इस पुस्तक की रचना रामजी भट्ट ने सूर्यबली सिंह के निमित्त की थी।
माण्डपत्र	२४.५ × १६	२१	२०	२०	३८	अपूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में लिपिकार ने शृंगारिक दोहों एवं सवैयों को लिपिबद्ध किया है। यह संग्रह लिपिकार की शृंगारिक मनोवृत्ति का परिचायक है।
माण्डपत्र	२० × १२.५	३४	१७	१९	३४३	अपूर्ण	,,	'षट ऋतु प्रकाश' विरह शृंगार का एक अनूठा ग्रन्थ है। ग्रन्थ में वसंत, ग्रीष्म, पावस—मात्र तीन ही ऋतुओं का वर्णन दोहा, दण्डक, सवैया, कवित्त छन्दों में वर्णित है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में गणेश, शिव, गंगा इत्यादि देवताओं का मंगलाचरण है।
माण्डपत्र	२१.३ × १३	५४	१७	१९	५४५	पूर्ण	,,	'षट् ऋतु प्रकाश' विरह शृंगार का एक अनूठा ग्रन्थ है। ग्रन्थ में वसंत, ग्रीष्म, शरद, पावस, शिशिर, हेमन्त आदि ऋतुओं का क्रमिक वर्णन है। किन्तु यह वर्णन अपूर्ण-सा लगता है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
७०९	७९८८/४४९९	सतसई	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७१०	७७५५/४३४५	सतसई	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७११	८६६८/४९६९	सर्व संग्रह	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७१२	७९४०/४४७३	सुखमा सागर तरंग	–	बलदेव मिश्र	१८८९ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७१३	८३८६/४७६०	सुख-सागर तरंग	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२२.५ × १३.५	११४	१८	१४	८९८	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इसमें 'मतिराम' के ७०५ दोहे लिपिबद्ध किये गये हैं। इन दोहों का विषय शृंगार है। शृंगार के संयोग पक्ष से सम्बन्धित दोहों की संख्या अधिक है। सतसई की परम्परा में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है।
माण्डपत्र	१७ × ११.५	९२	८	२०	४६०	अपूर्ण	श्री केशव-किशोर तिवारी, दतिया	खण्डित प्रति की लिपि देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि यह अट्ठारहवीं शताब्दी के बाद की प्रति है।
माण्डपत्र	१९.५ × १२	२५	१७	१०	१३३	पूर्ण	डॉ० नवल बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में आचार्य केशव-दास जी की रसिकप्रिया के कुछ छन्द और शिवनाथ जी के कुछ छन्द, जो कि शृंगार सम्बन्धी हैं, संकलित हैं। ग्रन्थ में नायिका-भेद और अंग-वर्णन की प्रधानता है। ग्रन्थ कीट-दंशित एवं जीर्ण है।
माण्डपत्र	३१ × २१	१५२	२८	२०	२६६०	पूर्ण	,,	यह ग्रन्थ १२ अध्यायों में विभक्त है। प्रारम्भ में राजवंश-वर्णन, सरस्वती, लक्ष्मी, गौरी, जानकी, रुक्मिणी, राधा की स्तुति की गयी है। इसमें सवैया और कवित्त छन्द का अधिक प्रयोग हुआ है। यह ग्रन्थ बहुत पहले अयोध्या से प्रकाशित भी हो चुका है।
माण्डपत्र	२०.५ × १५.५	७२	२०	१९	८५५	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र सीतापुर	यह नायिका विषयक प्रसिद्ध रीति ग्रन्थ है, जिसे देव ने पिहानी के अकबर अली खाँ के निमित्त लिखा था। ग्रन्थ अयोध्या से प्रकाशित भी हो चुका है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
७१४	८३६६/४७४६	सुखसागर सार तरंग	—	—	१६२७ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७१५	७६४१/४४७३	सुजान विनोद	—	—	१८८६ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७१६	७६५१/४४७७	सुजान विनोद	—	—	२६–१–१६२७ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७१७	८१६३/४६३५	सुन्दर-श्रृंगार	१६३१ ई.	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७१८	८२०६/४६४३	सुन्दरी सिंगार	—	—	—	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पृ०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
ाण्डपत्र	३२.५ × २०	१	३५	२२	२४	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में शृंगार, रूप, चित्र, नायिका-भेद आदि का वर्णन है। प्रकाशित सुखसागर तरंग का मात्र एक ही पृष्ठ इसमें है।
ाण्डपत्र	३३ × २१	५४	३०	२२	१११४	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में रीतिकालीन शैली में शृंगार के साधन पक्षों की विवेचना करते हुए कवि नायक-नायिका-भेद के द्वारा अपने अभीप्सित शृंगार रस की प्रतिष्ठा करता है।
ाण्डपत्र	३३ × २०.५	८	२४	२०	१२०	पूर्ण	,,	इस ग्रन्थ में सात विलास हैं। इसमें राधा-कृष्ण का विरह वर्णन, वसंत ऋतु में रति-क्रीड़ा के समय नायिका-भेद, दम्पति की याद में उद्वेग, ऋतु-भेद तथा ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त के सुखोत्सवों का वर्णन किया गया है।
ाण्डपत्र	१७ × १२	१९८	१२	१३	९६५	अपूर्ण	दतिया	प्रस्तुत ग्रन्थ में नायिका-भेद, अंग-वर्णन, चेष्टा-वर्णन, नायिका के हाव-भाव-वर्णन, विरह-वर्णन के विविध दशाओं का उल्लेख किया गया है। ग्रन्थ के अन्तिम छन्द नहीं हैं।
ाण्डपत्र	२२.५ × १६.५	५४	१८	२४	७२९	अपूर्ण	कोटा (राजस्थान)	प्रस्तुत ग्रन्थ में नायिका भेद आदि का वर्णन है। ग्रन्थ लिपि से अति प्राचीन ज्ञात होता है। साथ-ही-साथ ग्रन्थ के आदि और अन्त के पृष्ठभाग अप्राप्य हैं। ग्रन्थ कवित्तों, दोहों, सोरठों में रचित है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकाल	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
७१६	७८४८/४३६१	स्फुट कवित्त	–	–	१८३७ ई.	हिन्दी (ब्रज-मिश्रित एवं खड़ीबोली)	नागरी
७२०	८२०७/४६४१	स्फुट कवित्त	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७२१	७६३४/४४६०	हस्त मलिका	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र० पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
ाण्डपत्र	१६ × ६.२	८	७	२०	३५	पूर्ण	श्री बलबीर सिंह, दतिया	इसमें स्फुट कवित्तों का संग्रह है। कुछ छन्द विशुद्ध ब्रजभाषा एवं कुछ उर्दू में हैं। वर्ण्य-विषय की दृष्टि से इस संग्रह में शृंगार की प्रधानता है।
ाण्डपत्र	२३ × १७	२३	२०	३२	४६०	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में ठाकुर, सुन्दर कविराय आदि के अनेक अति शृंगारिक विविध कवित्तों का संग्रह किया गया है। ग्रन्थ अति प्राचीन एवं अपूर्ण है।
ाण्डपत्र	२३.५ × १३	४०	१८	१२	२७०	अपूर्ण	श्री हरिदास-मुखिया, झाँसी	इस ग्रन्थ में अंकगणित के गुरों (सिद्धान्तों) का उल्लेख बहुत ही रोचक एवं सरस शैली में किया गया है। गणित के व्यावहारिक ज्ञान की दृष्टि से इस ग्रन्थ का निश्चय ही अत्यधिक महत्त्व है।

सन्त काव्य

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
७२२	८३२५/४७२०	अघविनाश	–	भगवान-दास मुहर्रिर	१९२९ ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
७२३	८३९२/४७६५	गुणस्थानमार्ग्गणापाठ	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
७२४	७६९२/४३०९	ग्यान दीपिका	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७२५	८०२८/४५१९	ग्यान समाधि	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
७२६	७७८६/४३६४	ज्ञात प्रश्नोत्तर	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७२७	७७८२/४३६४	ज्ञानवचन चूर्णिका	–	–	१७८५ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
६	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	३५ × २०	५७२	१२	२०	७७२७	पूर्ण	श्रीमती रानी टण्डन एवं श्री सन्तप्रसाद टण्डन, इलाहाबाद	दोहों, चौपाइयों, सोरठा छन्दों में रचित यह ग्रन्थ निर्गुण ब्रह्मोपासनापरक है। इसमें हरि और हर के संवाद के साथ माँ पार्वती आदि का भी वर्णन है।
माण्डपत्र	१६.५ × १६	७	१२	२०	५२	पूर्ण	अज्ञात	इस ग्रन्थ में परजन्त्र, कषाय, संयम, दरसलेइया, सव्यसमतिसनि, आहार गुण स्थान, उपयोग-कथन, आश्रव वर्णन एवं चौरासी योनियों का वर्णन है।
माण्डपत्र	२३.५ × १६.५	८	१८	२४	१०८	अपूर्ण	श्री केशवकिशोर तिवारी, दतिया	दोहा, चौपाई में रचित इस ग्रन्थ में जीवन के अनुभवों का वर्णन, उसके कर्माकर्म और शुभाशुभ की विवेचना गुरुज्ञान का वर्णन एवं उसके फलों की विवेचना की गयी है।
माण्डपत्र	२१ × १५.५	८६	१७	१३	८६४	पूर्ण	डॉ० नवलबिहारी मिश्र, सीतापुर	दोहा, चौपाई और सोरठा जैसे छन्दों में रचित इस ग्रन्थ में ज्ञान-भक्ति सम्बन्धी बातें साधु-सन्तों के माध्यम से वर्णित हैं। ग्रन्थ यत्र-तत्र कीट-दंशित है।
प्राचीन माण्डपत्र	२२ × १२	५६	६	३२	५०४	अपूर्ण	अज्ञात	इस ग्रन्थ में ६ खण्डों में परब्रह्म से साक्षात्कार करने की विधि का वर्णन निर्गुण-शैली में किया गया है।
प्राचीन माण्डपत्र	२२ × १२	१०६	६	३२	६८१	पूर्ण	अज्ञात	इस ग्रन्थ में मनोहर कवि ने निर्गुण-शब्दावली में ज्ञानात्मक संकल्प के पूर्व एवं उत्तर पक्ष की विवेचना दोहा, चौपाई, सोरठा छन्द में की है और ज्ञान-प्राप्ति के साधनों तथा उनके विविध विधानों का सूक्ष्म परिचय भी दिया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
७२८	७८१२/४३७३	ज्ञान स्वरोदय	–	–	–	हिन्दी (व्रज)	नागरी
७२९	७८००/४३६८	दादू वाणी	–	–	–	हिन्दी (ब्रजमिश्रित अवधी)	नागरी
७३०	७८३१/४३८३	दादू वाणी	–	–	–	हिन्दी (ब्रजमिश्रित (अवधी)	नागरी
७३१	७८१४/४३७४	नाम प्रताप	–	–	–	हिन्दी	नागरी
७३२	७८४२/४३९१	निर्धार शत	–	–	–	हिन्दी	नागरी
७३३	७८३९/४३९१	पद	–	–	–	हिन्दी	नागरी
७३४	८१६४/४६२४	परमामृत	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
६	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१४.५ × ११.५	८३	१०	११	२८५	पूर्ण	श्री श्यामाचरण खरे, दतिया	इस ग्रन्थ में नासिका-रन्ध्रों में प्रवहमान श्वास (स्वर) के आधार पर शकुन विचार प्रस्तुत किया गया है।
प्राचीन माण्डपत्र	१२.५ × ६.५	२४६	८	१६	६८४	अपूर्ण	श्री केशवकिशोर तिवारी, दतिया	इस ग्रन्थ में विविध छन्दों में निर्गुणमार्गी शब्दावली में दादूदास की वाणी को उनके किसी शिष्य द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।
माण्डपत्र	१४ × १०	४	८	२२	२२	अपूर्ण	,,	इसमें दादू की निर्गुणमार्गी भक्ति के पदों को लिपिबद्ध किया गया है। यथास्थल भ्रमर और कमल के प्रेम के दृष्टान्त द्वारा गुरुप्रेम की महत्ता प्रकट की गयी है।
माण्डपत्र	१२ × ८.५	३७	७	१४	११३	पूर्ण	श्री ब्रजकिशोर शर्मा, भरतगढ़, दतिया	इस ग्रन्थ में निर्गुण भक्तिमार्गी कवियों के राम के नाम का माहात्म्य भक्ति के कलेवर में प्रस्तुत किया गया है। दो-एक जगह कबीर के नाम का भी उल्लेख है।
माण्डपत्र	१६.६ × ६.२	२६	७	२०	११४	पूर्ण	श्री बलबीर सिंह, दतिया	इस ग्रन्थ में दोहों का संकलन है और आद्योपान्त निर्गुण-तत्त्व का विवेचन किया गया है।
माण्डपत्र	१६ × ६.२	२	७	२०	६	पूर्ण	श्री बलबीर सिंह, दतिया (म० प्र०)	इसमें कबीर के प्रेम एवं नीतिविषयक १३ दोहों का संकलन है।
माण्डपत्र	१५.५ × १०	१०२	७	२०	४४६	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	इस ग्रन्थ में निर्गुणब्रह्म-भक्ति का प्रतिपादन किया गया है। दोहों में रचित यह ग्रन्थ चतुर्दश प्रकरणों में विभक्त है, जिनमें नीति, भक्ति, वैराग्य आदि का विवेचन किया गया है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
७३५	८३७१/४७.८	भ्रमनाश	–	घवकस-राम	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
७३६	८०२७/४५१६	विवेक सागर	१७४४ ई.	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७३७	७७८३/४३६४	वेदान्त महावाक्य	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७३८	८१६५/४६२५	संतसरन	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
७३९	८२३६/४६६६	सतनामा	–	–	–	हिन्दी (प्राचीन)	नागरी
७४०	७७८१/४३६४	सवैया	१७८५ ई.	मोतीराम	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७४१	७७८४/४३६४	साक्षीरूप	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७४२	८००९/४५१३	सुन्दरदास के सवैया	–	रघुनाथ भगत	१८६६ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	२६ × १८.५	७४	१८	११	४१६	पूर्ण	(क्रीत) रायबरेली	इस ग्रन्थ में निर्गुणब्रह्म का प्रतिपादन किया गया है। ग्रन्थ दोहों, चौपाइयों एवं सोरठों में रचित है।
माण्डपत्र	२१ × १५.५	४६	१६	१२	२७६	पूर्ण कीट-दंशित	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	'कहे कबीर' इस चरण से ग्रन्थ के रचयिता कबीर दास प्रतीत होते हैं, किन्तु यह उनके नाम पर प्रचलित परवर्ती रचना है।
प्राचीन माण्डपत्र	२२ × १२	४९	९	३२	४४१	पूर्ण	अज्ञात	इस ग्रन्थ में वेदवाक्यों को निर्गुण शब्दावली की कसौटी पर मनोहरदास निरंजनी ने विश्लेषित किया है।
माण्डपत्र	१६.५ × १०.५	६०	१७	१२	३८३	अपूर्ण	—	इस ग्रन्थ में सन्तों के बोधन के लिए अनेक बातों का उल्लेख किया गया है, साथ ही इसमें बहुत से मन्त्र भी लिखे हुए हैं।
माण्डपत्र	१२.५ × १०.५	४०	१०	१४	१८५	अपूर्ण	मुजफ्फरनगर	इस ग्रन्थ में अनेकों दृष्टान्तों के द्वारा गुरु-महिमा का वर्णन है, साथ ही पार्वती, हनुमान्, भीम, सहदेव आदि का वर्णन है।
प्राचीन माण्डपत्र	२२ × १२	२१४	९	३२	१९२६	पूर्ण	अज्ञात	इसमें निर्गुण-भक्ति के विविध अंगों की चर्चा ब्रजभाषा के सवैया और दोहा छन्दों में की गयी है।
प्राचीन माण्डपत्र	२२ × १२	१६४	९	३२	१४७६	पूर्ण	अज्ञात	इस ग्रन्थ में निर्गुण शब्दावली में कवि ने ईश्वर को साक्षी मानकर अपनी भक्ति को विवेचित किया है।
प्राचीन माण्डपत्र	१६ × ११.५	६५५	६	१६	१९६५	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	इस ग्रन्थ में निर्गुणवादी सुन्दरदास की अध्यात्मविषयक रचनाओं का संकलन कवित्त एवं सवैयों में हुआ है।

समीक्षा ग्रन्थ

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
७४३	८३४५/४७३१	उदात्त का स्वरूप (पेरिइप्सुस का हिन्दी अनुवाद)	—	डॉ० नगेन्द्र	—	हिन्दी (गद्य)	नागरी
७४४	८३४७/४७३३	ज्योतिविहग	—	श्री कृष्ण दवे	१६४६ ई.	हिन्दी (गद्य)	नागरी
७४५	८३२८/४७२२	नया समाज	—	उदयशंकर भट्ट	—	हिन्दी (गद्य)	नागरी
७४६	८३६८/४७६६	रामकथा	—	फादर कामिल-बुल्के	—	हिन्दी (गद्य)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
ाण्डपत्र	३२ × २०	२९	३७	३८	२७४	अपूर्ण	डॉ० नगेन्द्र, नई दिल्ली	प्रस्तुत ग्रन्थ में डॉ० नगेन्द्र ने अरस्तू के प्रसिद्ध ग्रन्थ पेरि-इप्सुस का हिन्दी अनुवाद किया है, जिसमें काव्य विषयक बातों का निरूपण है ।
ाण्डपत्र	२० × १९	७२०	२०	२०	९०००	पूर्ण	श्री शान्ति-प्रिय द्विवेदी, काशी	प्रस्तुत कृति में पन्तजी के ग्रन्थों की समीक्षा की गयी है। कृति आधुनिक है । ग्रन्थ प्रकाशित भी हो चुका है ।
ाण्डपत्र	३२ × २०	५	२०	३२	१६००	पूर्ण	श्री उदय-शंकर भट्ट	प्रस्तुत ग्रन्थ में रूसी महिला मरिया लेविना ने फ्रेञ्च और जर्मनी नाटकों का रूसी भाषा में अनुवाद किया है ।
ाण्डपत्र	२१.५ × १६.५	१००० लगभग	२०	१६	१००००	पूर्ण	डॉ० फादर कामिल बुल्के	प्रस्तुत ग्रन्थ में लेखक ने राम-कथा की समीक्षा ४ खण्डों में (लगभग १००० पृष्ठों) की है । यह ग्रन्थ हिन्दी परिषद्, प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित भी हो चुका है ।

स्तोत्र ग्रन्थ

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
७४७	८०६६/४५४५	अज्ञात	—	—	—	हिन्दी (अपभ्रंश)	नागरी
७४८	८६०२/५१६५	आरती (अज्ञात)	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
७४९	८२३२/४६६३	कल्याण कल्पद्रुम स्तोत्र	—	जवाहर	१८६२ ई.	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७५०	८२४२/४६७१	कल्याणमन्दिर स्तोत्र	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
७५१	८०६३/४५४५	क्षेत्रपाल पूजा	—	—	—	हिन्दी (प्राकृत)	नागरी
७५२	८१४७/४६१७	गौड़ी जी स्तवन	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
७५३	८१७७/४६३०	जिन स्तवन	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
७५४	८१३६/४६०७	जिनेन्द्र स्तुति	—	भगवान-दास	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पृ०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
६	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१०.५ × १०.५	४	१२	१५	२४	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन मन्दिरों एवं मठों का उल्लेख है। ग्रन्थ में बनारस नगरी का उल्लेख है। देवताओं की स्तुतियों के साथ कुछ ही पृष्ठ प्राप्य हैं।
माण्डपत्र	११.५ × ११	३	११	१३	१३	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में आरती की तरह स्तोत्र प्राप्त हैं। जिनदेव की स्तुति के साथ गौतम स्वामी की अमृतमयी वाणी का भी उल्लेख है।
माण्डपत्र	२३.५ × १५	३४	१५	२०	३१८	अपूर्ण	मुजफ्फरनगर	प्रस्तुत ग्रन्थ में दीनबन्धु, भक्त-रक्षक भगवान् के द्वारा विविध रूपों में भक्तों की रक्षा से सम्बन्धित विविध कार्यों का वर्णन स्तोत्र के रूप में हुआ है। ग्रन्थ की लिपि अत्याधुनिक है। इसके आदि के कुछ पृष्ठ अप्राप्य हैं।
माण्डपत्र	१७.५ × १३.५	२	१०	१६	१०	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के कुछ स्तोत्र संगृहीत हैं।
माण्डपत्र	१०.५ × १०.५	१४	७	११	३४	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में क्षेत्रपाल की पूजन-विधि एवं मन्त्रों का संकलन प्राकृत-संस्कृत भाषा एवं हिन्दी में किया गया है।
माण्डपत्र	६ × ८.३	६	२२	१०	६२	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में ढालों में गौड़ी जी का स्तवन है।
माण्डपत्र	१५.५ × ११.५	८	६	२३	५२	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के आदि गुरु जिनदेव की स्तुतियाँ हैं।
माण्डपत्र	२६ × १८	४४	१२	२३	६६४	पूर्ण	कोटा (राजस्थान)	प्रस्तुत ग्रन्थ में जिनदेव की स्तुति की गयी है। ग्रन्थ अत्याधुनिक है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
७५५	८०६४/४५४५	देवपूजा	–	–	–	हिन्दी (अपभ्रंश)	नागरी
७५६	८२११/४६४५	देवस्तुति	–	चम्पालाल शर्मा	१६०८ ई.	हिन्दी	नागरी
७५७	८१६६/४६२६	नेमिजिनस्तवन	–	साहजीव-राज	१५६१ ई.	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
७५८	८१८३/४६३१	नेमिनाथस्तोत्र	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
७५६	८१७६/४६३०	पंचमी रो स्तवन	–	–	–	हिन्दी	नागरी
७६०	८०७३/४५४६	परमानन्दस्तोत्र	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७६१	८२४१/४६७१	पार्श्वजिन स्तवन	–	–	१८४३ ई.	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
७६२	८२०५/४६३६	(पार्श्वनाथ) स्तवनसंग्रह	–	–	–	हिन्दी	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१०.५ × १०.५	९	९	१६	४०	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में देव-पूजन स्तोत्र-शैली में निवद्ध है। अरिहन्त मंगल उपासना के साथ-ही-साथ जैन-गुरुओं का भी उल्लेख है। ग्रन्थ की लिपि अत्याधुनिक है।
माण्डपत्र	१६.२ × १२.५	१०	१२	१६	६०	पूर्ण	अज्ञात	प्रस्तुत ग्रन्थ में गणेश, शंकर, दुर्गा आदि देवताओं की आरती का संकलन है।
माण्डपत्र	२५.५ × १०.५	६	१५	३५	९८	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म-गुरु श्री निमिजिन का जीवन-वृत्त स्तवन-शैली में लिखा गया है। यह स्तवन ढालों एवं कलशों में लिखित है।
माण्डपत्र	१४.५ × १२	१६	११	१६	८८	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में नेमिनाथ जी का स्तवन किया गया है। ग्रन्थ प्रायः कीट-दंशित है।
माण्डपत्र	१५.५ × ११.५	१३	१०	२०	८१	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के स्तवनों का पाँच ढालों में वर्णन है।
माण्डपत्र	१७ × १२.५	६	१२	१९	१०४	पूर्ण	कोटा (राजस्थान)	प्रस्तुत ग्रन्थ में परब्रह्म परमेश्वर निर्गुण, निर्विकार परमानन्द जी का स्तोत्र लिखा है। ग्रंथ की लिपि अत्याधुनिक है।
माण्डपत्र	१७.५ × १३.५	३	८	१६	१२	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैनगुरु पार्श्वनाथ जी का स्तवन है। पुष्पिका से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व 'रोहिणी की थूई' सम्पूर्ण हुई है। स्तवन के पश्चात् एक पद भी है। कृति आधुनिक है।
माण्डपत्र	१४ × ९.३	१६	१२	२२	१३२	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रसिद्ध तीर्थङ्कर श्री पार्श्वनाथ के स्तवनों का संग्रह है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
७६३	८८११/५०६६	बन्दीमोचन	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
७६४	८८१२/५०६६	बन्दीमोचन	–	–	१६२० ई.	हिन्दी (अवधी)	नागरी
७६५	८१०६/४५८२	भयहरस्तोत्र	–	–	–	हिन्दी (अपभ्रंश)	नागरी
७६६	७७६६/४३५६	भवानीस्तोत्र	–	–	–	हिन्दी (अपभ्रंश-मिश्रित)	नागरी
७६७	८१६७/४६३८	मुंध्वर जी वृद्ध स्तवनम्	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
७६८	८१६६/४६३८	महाबीर स्तवन	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
७६९	८४१२/४७७५	लक्ष्मीचरित्र	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी
७७०	८१०५/४५७८	विनती आदिनाथ	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
७७१	७८८३/४४१६	शंकरस्तोत्र	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१२.७×१०.५	६	७	२१	—	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में माँ बन्दीदेवी की स्तुति चौपाई छन्द में वर्णित है।
माण्डपत्र	२०.५×१२.७	४५	७	२१	२४६	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में माँ बन्दीदेवी की स्तुति संकटमुक्ति हेतु की गयी है। विविध दृष्टान्तों के साथ कृति दोहे एवं चौपाइयों में रचित है।
माण्डपत्र	२५×१४.५	१०	७	१५	३३	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में भयहरण करने वाले जैन धर्म के २४ स्तोत्रों का संग्रह है। ग्रन्थ लिपि से प्राचीन है।
माण्डपत्र	२५.३×११	२	६	३४	२७	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में भवानी की वन्दना की गयी है।
माण्डपत्र	१२×११	१०	६	१०	२८	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में मुंध्वर जी का स्तवन किया गया है।
माण्डपत्र	१२×११	७	६	१०	१६	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन तीर्थङ्कर महाबीर स्वामी का स्तवन है।
माण्डपत्र	१८.५×१५	१०	१५	१८	८४	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में नारायणप्रिया लक्ष्मी का स्तोत्र ब्रजभाषा में दोहे एवं चौपाइयों में है। प्रति कीट-दंशित है।
माण्डपत्र	१५×१२.५	६	८	१६	२४	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में आदिनाथ जी का स्तवन किया गया है। ग्रन्थ के पूर्व एक अन्य ग्रन्थ की समाप्ति का उल्लेख "इति करनण्टक सम्पूरन" से इंगित है।
माण्डपत्र	२१×११.५	२	१८	१६	१८	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में शंकर भगवान् की वन्दना संकटमोचन के रूप में की गयी है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/विष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
७७२	८६७३/५२१६	शंभुरुद्री	—	मातादीन मुलाजिम	—	हिन्दी (अवधी)	नागरी
७७३	८६८५/५२२५	शंभुरुद्री	—	बाल-गोविन्द शुक्ल	—	हिन्दी (अवधी)	नागरी
७७४	८६८६/५२२५	शंभुरुद्री	—	—	-	हिन्दी (अवधी)	नागरी
७७५	८०३२/४५२१	शंभुरुद्री स्तोत्र	—	—	—	हिन्दी (अवधी)	नागरी
७७६	८२१०/४६४४	शिवलीलामृत	—	—	—	हिन्दी (ब्रज संस्कृतनिष्ठ)	नागरी
७७७	८१६८/४६३८	सिद्धांचलस्तवन	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
७७८	७८६६/४४३१	सूर्यमाहात्म्य महा-पुराण	—	—	—	हिन्दी (अवधी)	नागरी
७७९	८१८४/४६३१	सुमतिनाथ विनती स्तवन	—	—	—	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	१६.५ × ११	७	८	१४	२५	पूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में भगवान् शंकर की स्तुति सरल ढंग से दोहे एवं चौपाइयों में की गयी है।
माण्डपत्र	१६.५ × १२	१३	५	१५	१५२	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में भवानी-शंकर की स्तुति दोहे एवं चौपाई में की गयी है।
माण्डपत्र	१६.५ × १२	४	६	१६	१८	अपूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में भवानी-शंकर की स्तुति दोहे एवं चौपाई छन्दों में की गयी है।
माण्डपत्र	२२.५ × १४.५	३	१४	१६	२५	पूर्ण	,,	इस कृति में भगवान् शंकर की स्तुति स्तोत्रशैली में है।
माण्डपत्र	२५.५ × १५.५	२१	१०	२५	१६४	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत कृति में संस्कृतनिष्ठ हिन्दी पद्य में भवानी-शंकर का स्तोत्र वर्णित है। पार्वती का शक्तिस्वरूप प्रदर्शित है। गुरु-वन्दना भी की गयी है। कृति यत्र-तत्र कीट-दंशित है।
माण्डपत्र	१२ × ११	३	६	१०	८	पूर्ण	,,	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के सिद्धांचल जी का स्तवन किया गया है।
माण्डपत्र	१५.२ × ११.२	२०	६	२१	११८	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	'तुलसीदास कहते जस दोहा' के चरण के आधार पर प्रस्तुत कृति को तुलसीदास लिखित माना गया है। किन्तु यह निश्चय नहीं है कि यह तुलसी मानसकार तुलसी ही है। चार अध्यायों में भुवनभास्कर सूर्य की कथा है। पाँचवाँ अध्याय अपूर्ण है।
माण्डपत्र	१४.५ × १२	३	१४	३२	४२	पूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में सुमतिनाथ [illegible] स्तुति की गयी है। कृति कीट-दंशित है।

क्रम सं०	ग्रन्थ सं०/वेष्टन सं०	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकाल	लिपिकार	लिपिकाल	भाषा	लिपि
१	२	३	४	५	६	७	८
७८०	८२०६/४६४०	स्तवनसंग्रह	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
७८१	८६१०/५१६५	स्तोत्रं	–	–	–	हिन्दी (राजस्थानी)	नागरी
७८२	८०३३/४५२१	स्तोत्र	–	–	–	हिन्दी (अवधी)	नागरी
७८३	८०७०/४५४६	स्फुट छन्द	–	–	–	हिन्दी (ब्रज)	नागरी

आधार	आकार (सेमी०)	पृ०सं०	पंक्ति प्र०पृ०	अक्षर प्र०पं०	परिमाण (अनु०)	दशा	प्राप्तिस्थान	अतिरिक्त विवरण
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
माण्डपत्र	११ × ४.५	३६	११	१७	२१०	अपूर्ण	श्री सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन तीर्थङ्करों से सम्वन्धित अनेक स्तवन हैं।
माण्डपत्र	११.५ × ११	३	१०	१६	१५	पूर्ण	—	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन-गुरुओं की स्तुति राजस्थानी हिन्दी में की गयी है।
माण्डपत्र	२२.५ × १४.५	६	१६	१९	५७	अपूर्ण	डॉ० नवल-बिहारी मिश्र, सीतापुर	प्रस्तुत ग्रन्थ में राम-कथा का वर्णन चौपाई-जैसे छन्द में किया गया है।
माण्डपत्र	१७ × १२.५	३	११	१०	१०	पूर्ण	कोटा राजस्थान	प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन धर्म के आदिगुरु जिनदेव का स्तवन आरती की शैली में किया गया है। ग्रन्थ-लिपि अत्याधुनिक है।

ग्रन्थनामानुक्रमणिका

व्यक्ति नामानुक्रमणिका